गोपनीय रहस्य युक्त गुरु पूर्णिमा विशेषांक
जुलाई ९५
मूल्य-१८/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
लोक सभा चुनावों के बाद
प्रधानमंत्री पद के कई दावेदार
किसके सिर पर ताज रखा जायेगा ?
ज्योतिषीय अध्ययन
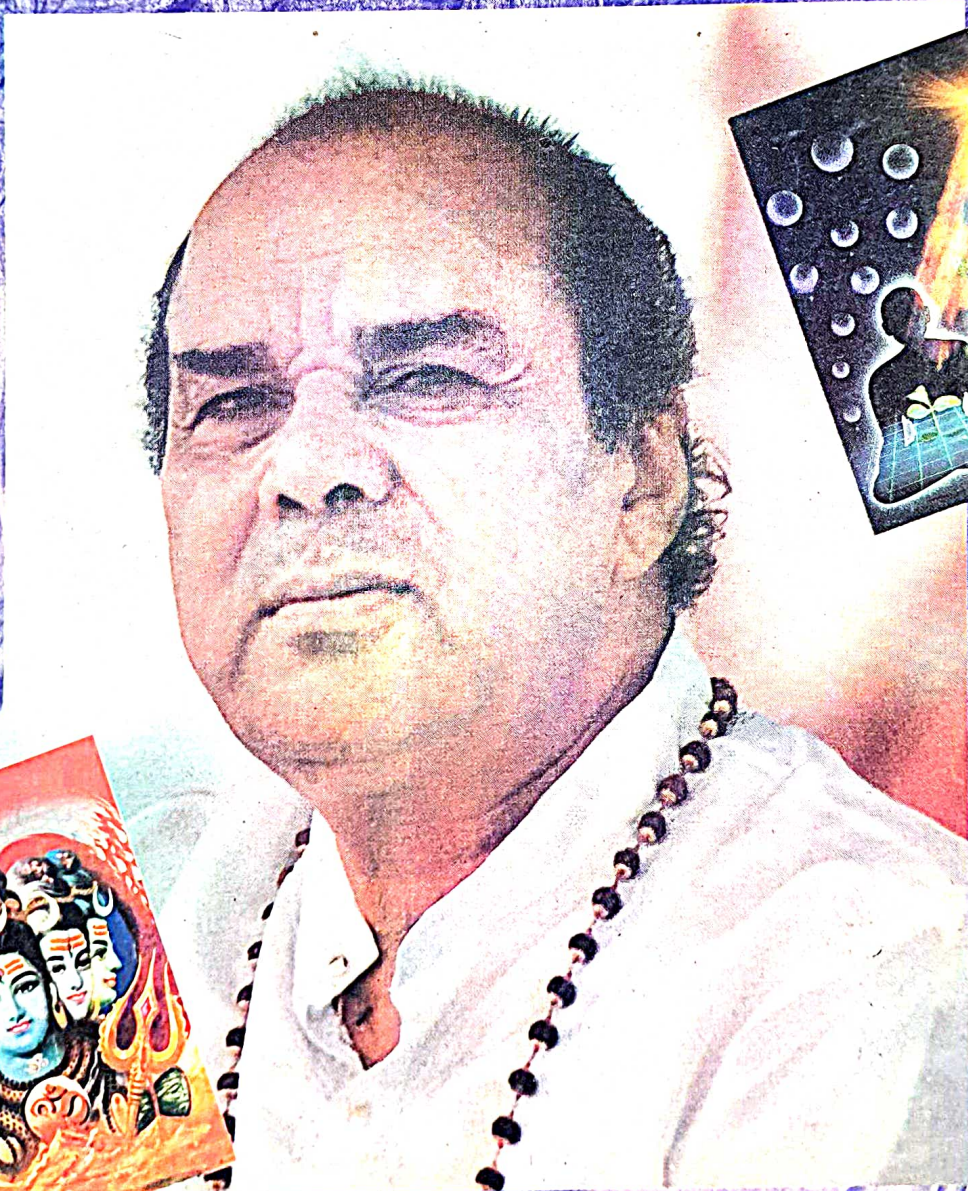
गुरु पूर्णिमा शिविर

9 से 12 जुलाई 1995

लुधियाना

पूज्य गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

के आशीर्वाद तले

★ गुरुदेव . . . अर्थात् जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता देना।
★ गुरुदेव का स्पर्श और जीवन की समस्त बाधाओं, परेशानियों एवं विपत्तियों से छुटकारा।
★ गुरुदेव द्वारा दीक्षा . . . और जीवन में धन, यश, वैभव, मान, पद, प्रतिष्ठा सब कुछ प्राप्त कर लेना।
★ गुरुदेव द्वारा प्रदत्त प्रयोग . . . और मन की सारी इच्छाओं की पूर्ति।
★ गुरुदेव का मिलन . . . अर्थात् बूंद का सम्पूर्ण समुद्र बन जाना।
★ गुरुदेव के निकट होना . . . अर्थात् पूर्व जीवन और इस जीवन के समस्त पापों, दोषों एवं अभावों से छुटकारा पा लेना।
★ गुरु पूर्णिमा का तात्पर्य . . . गुरुदेव को पूर्णता के साथ हृदय में स्थापित कर देना।
★ चलें! इस गुरु पूर्णिमा पर पूज्य गुरुदेव के चरणों में, चरण रूपी गंगा के किनारे गुरुदेव रूपी हिमालय के सर्वोच्च शिखर "गौरी शंकर" पर पूर्णता प्राप्त करना।

हम सबको आना ही है, क्योंकि गुरुदेव ने आवाज दी है, वासन्ती हवा ने पुकारा है, हमारे जीवन के आराध्य ने बुलाया है, और हमें इस वार हर हालत में परिवार सहित पहुंचना ही है।

: सम्पन्न होने वाले प्रयोग :

- गुरु पूर्णिमा साधना
- वैभव प्राप्ति महालक्ष्मी साधना
- सद्गुरु सहस्रार स्थापन प्रयोग
- तंत्र बाधा निवारण वैष्णवी प्रयोग
- शीघ्र व्यापार वृद्धि माहेश्वरी साधना
- शत्रु निवारण बगलामुखी साधना
- सम्मोहन, वशीकरण प्रयोग
- सौन्दर्यवर्धक अनंग सिद्धि साधना, पूर्णाहुति

: सम्पन्न होने वाली दीक्षाएं :

आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा, क्रिया योग दीक्षा, ऋण मुक्ति दीक्षा, भविष्य सिद्धि दीक्षा, कुबेर सिद्धि दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, ब्रह्माण्ड दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा और वे दीक्षाएं, जो आप अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए प्राप्त कर सकेंगे।

शिविर शुल्क : 660/-

आयोजक

श्री रोजन जेम्स, इकबाल नर्सिंग होम, सिविल लाईन, लुधियाना, फोन : घर - 0161 : 665599, ऑफिस - 0161 : 30150, 29150
श्री कृष्ण मंदिर ट्रस्ट, शास्त्री नगर, मॉडल टाउन, एक्सटेन्सन, लुधियाना, फोन : 0161 : 456527
श्री अमरजीत प्रदीप कुमार, मण्डी, गोविन्द गढ़, फोन : 01761: 42880, 42274, 41849

शिविर स्थल : श्री कृष्ण मंदिर ट्रस्ट, शास्त्री नगर, मॉडल टाउन, एक्सटेन्सन, लुधियाना, फोन : 0161 : 456527

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

प्रार्थना

गुरुभ्यो गुरुभ्यश्चवो कुण्डलिन्या सहस्राय
उत्थायश्च दिव्याय दिव्यनैत्रायश्चमो नमो नमः ।।

हे गुरुदेव! आप मेरे जीवन को चलाने वाले हैं, आपको नमस्कार है; आप अत्यन्त कृपा कर मेरी कुण्डलिनी एवं सहस्रार जाग्रत उत्थित करें, जिससे मैं दिव्य बन सकूं, मैं अपने दिव्य नेत्रों से पिछले और अगले कई जीवन तथा भूत, भविष्य को देख सकूं; आप ही मुझे ऐसी शक्ति प्रदान कर सकते हैं, इसीलिए मैं आपकी शरण में हूं, आपको बारम्बार नमस्कार है।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम, या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु- संत होते हैं, अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करे, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संबंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके। यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस संबंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी । गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस संबंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

अनुक्रमणिका

साधना

स्तम्भ

विवेचनात्मक

सद्गुरुदेव

कथ्य

विशेष

ज्योतिष

दीक्षा

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है कि "गुरुधाम" दिल्ली कार्यालय में लगा फेक्स नं० वदल गया है। अव आप नये नं० में फेक्स करें–

पहले फेक्स नं० : 011 - 7186700
वर्तमान फेक्स नं० : 011 - 7196700
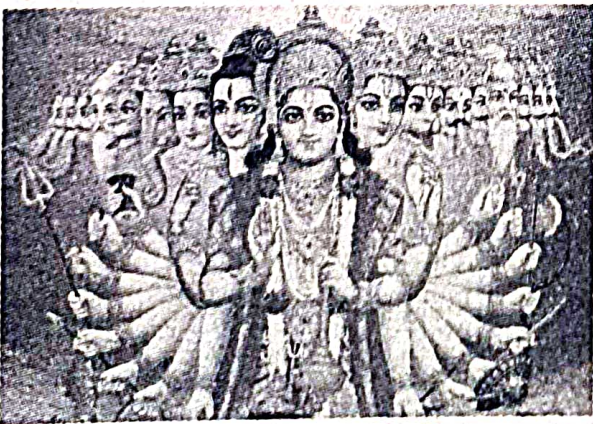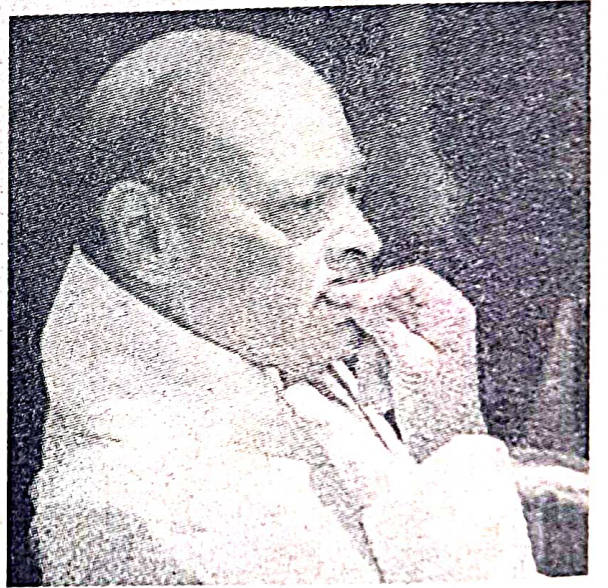
साधकों के लिये विशेष

कई बार साधकों के पत्र आते हैं, कि साधना विधि आपने नहीं भेजी, पत्रिका में प्रत्येक साधना की विधि सम्बन्धित लेख में प्रकाशित रहती है, आप उसी विधि से साधना सम्पन्न करें।

पाठकों के पत्र

★ पूज्य गुरुदेव, आपकी आज्ञानुसार **''त्रिपुर भैरवी साधना''** का ५१ माला मंत्र-जप ११ दिन तक किया तथा स्वप्न में त्रिपुर भैरवी से साक्षात्कार भी कर चुका हूं, अब आगे और महाविद्या साधना करने की इच्छा बढ़ गई है।

अनिल कुमार शर्मा, दिल्ली

★ पूज्य गुरुदेव, आपकी आज्ञानुसार मैंने **''श्री यंत्र''** को अपने पूजा स्थान में स्थापित किया और पूजन भी सम्पन्न किया। अब आपकी कृपा से मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

बलवीर चन्द घई, गोविन्द नगर

★ मैंने पहली बार पानीपत शिविर में भाग लिया, मुझे उस पंडाल में बहुत भारी शक्ति का अनुभव हो रहा था, मेरी आंखें स्वतः ही बन्द हो रही थीं, और मुझे जो सुख और आनन्द प्राप्त हो रहा था, वह कुछ शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

सुरेश कुमार, गुड़गांव

★ पत्रिका का विशेष आकर्षण **''सौन्दर्य साधना''** होती है, मुझे बहुत ही उत्सुकता से इंतजार रहता है, कि इस बार कौन-सी अप्सरा या यक्षिणी की साधना प्रकाशित की जायेगी, अतः हो सके तो **''सौन्दर्य साधना विशेषांक''** प्रकाशित करें।

बारिश कुमार मारडी, बिहार

★ पूज्य गुरुदेव, ऑडियो कैसेट **''मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं''** सुनकर गूढ़ ज्ञान की गोपनीयता का एहसास हुआ, वास्तव में इस ज्ञान की आज हमारे देश को ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व को आवश्यकता है।

यज्ञदत्त शर्मा, दिल्ली

★ मैं अत्यन्त ही रोगग्रस्त और जर्जर काया लेकर जी रहा था, पत्राचार द्वारा सलाह मिलने पर **''पूर्ण रोग मुक्ति दीक्षा''** प्राप्त की, और आज मैं अपने-आप को पूर्ण स्वस्थ एवं उत्साहमय अनुभव करता हूं।

मोहन कुमार, विदिशा

★ पूज्य गुरुदेव, आपके द्वारा दिये गये गुरु मंत्र, गायत्री मंत्र और चैतन्य मंत्र का उपयोग मैं दैनिक साधना में करता हूं, जिनके माध्यम से मेरे मन की सभी अभिलाषायें पूर्ण हो रही हैं। पूज्य गुरुदेव मैं सोने से पूर्व केवल पांच बार गुरु मंत्र का उच्चारण करके सोता हूं, और जितने समय पर जगाने के लिये कहता हूं, ठीक उतने ही समय बाद मेरा नाम कोई पुकारता है, और मैं उठ जाता हूं।

डॉ० जे० आर० बंजारे, रायपुर

★ महोदय, मैंने पुरानी पत्रिका में साबर साधनाओं का ज्ञान प्राप्त किया, ये साधकों के लिये शीघ्र असरदार और अपने-आप में पूर्ण होती हैं, अतः मेरा आपसे निवेदन है, कि आप आने वाली पत्रिका में साबर साधनाएं तथा इनके गुप्त रहस्य अवश्य बतायें।

सौरभ मिश्रा, भिलाई

★ पूज्य गुरुदेव, मैं आपकी पत्रिका चार माह से पढ़ रहा हूं, ऐसा लगता है, कि इस परिवार की कोई अलग ही दुनिया है, इस धराधाम से अलग इसकी सत्ता है। सचुमच मई-९५ में **''संजीवनी विद्या''** पढ़कर, चिरशांति, स्तब्धता और अजीब-सी अनुभूति प्राप्त हुई। यह शब्दों और अक्षरों की बात नहीं, जिसे स्पष्ट करें।

ताराचन्द यादव, रायगढ़

★ महोदय, मई-९५ में **''श्मशान का यह काला औघड़''** पढ़ा। अत्यन्त रोमाञ्चित और आश्चर्यचकित कर देने वाला लेख है। वास्तव में ऐसी सत्य घटनाओं को पढ़कर साधकों को आत्म-बल मिलता है। इसके लिये धन्यवाद।

राजेन्द्र स्वामी, मंगोलपुरी

★ पूज्य गुरुदेव, मैंने दो माह पूर्व ही आपसे **''सिद्धाश्रम सिद्धि चक्र''** मंगवाया, जो मिला भी और मैं आपसे प्रभावित हुआ, क्योंकि चक्र धारण करने के दूसरे ही बुधवार को मुझे गुजरात में नौकरी मिली।

ओंकार जोशी, नरोडा

★ पूज्य गुरुदेव, मैं आपके द्वारा रचित पत्रिका को वर्ष १९९५ के फरवरी माह के **''शिव विशेषांक''** से पढ़ रहा हूं, जिसे पढ़कर असीम प्रसन्नता हुई, क्योंकि इसमें जीवन के आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक सभी विषयों पर विवेचन हुआ। यह आपका अद्वितीय प्रयास है, ईश्वर सफलता दे।

जितेन्द्र कुमार सिंह, फैजाबाद

★ प्रिय सम्पादक जी, गागर में सागर भरने की कला में दक्ष सम्पादक जी एवं **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका परिवार की साधना का कोटि-कोटि नमन करता हूं। आपके सभी अंकों से अभिभूत हुआ हूं, जिसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकता। सारी रचनायें उपयोगी, पठनीय, संग्रहणीय, माननीय एवं चिन्तनीय तथा अनुकरणीय हैं।

सुश्री सुमान्ती, मुजफ्फर पुर

सूचना

पत्रिका के पाठकों, साधकों एवं शिष्यों को यह सूचित किया जाता है, कि वे साधना-सामग्री से सम्बन्धित अपना ऑर्डर जोधपुर टेलीफोन नं०-0291-32209 द्वारा लिखाएं, क्योंकि आप के द्वारा भेजा हुआ पत्र कार्यालय को 10 दिन बाद मिलता है, और कार्यालय द्वारा भेजी गई सामग्री आपके पास 10 दिन बाद पहुंचती है। इन 20 दिनों के चक्र में कभी-कभी साधना से सम्बन्धित विशेष दिवस बीत जाता है।

अतः आप इस प्रकार की असुविधा से बचने के लिए अपना ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में २४ घंटे में कभी भी नोट करा सकते हैं।

जोधपुर : टेलीफोन नं० - 0291-32209
फेक्स नं० - 0291-32010

वर्ष 15 **अंक 7** **जुलाई 95**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरु सेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार** - अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन : 0291 - 32209, फेक्स : 0291 - 32010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

सिद्धि प्रदायक सन्त डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

"सन्त किसी एक के जीवन के दुःख के जहर को ही नहीं, वरन् सभी के दुःख रूपी जहर को अपने अन्दर उतार कर उन्हें आनन्द का अमृतपान कराते हैं. . . फिर भी हर समय प्रसन्न एवं अलमस्त बने रहते हैं। दूसरों के कष्टों को दूर करने का भार वहन करने के पश्चात् भी सन्त के चेहरे पर शिकन नहीं आती।

सन्त के पहिचान की यही सबसे बड़ी निशानी है।"

सन्त विटप सरिता गिरि धरनी।
पर हित हेत सबन की करनी।।

अर्थात् "सन्त, वृक्ष, नदी, पर्वत, पृथ्वी इन सभी की उत्पत्ति दूसरों की भलाई के लिये ही हुई है, इनका कार्य दूसरों की भलाई करना है, ये स्वयं के लिये नहीं बने, क्योंकि वृक्ष पर लगे आमों का बोझ वृक्ष इसलिये नहीं सहता, कि उसे स्वयं वे आम खाने हैं; नदी इसलिये नहीं बहती, कि उसे स्वयं की प्यास बुझानी है; पर्वत अपने सिर पर इतने वृक्षों का भार अपने लाभ के लिये नहीं सहता, उन वृक्षों की लकड़ियों का उपयोग प्राणि मात्र के लिए होता है; पृथ्वी हमें फल-फूल, पेड़-पौधे, अन्न आदि सब कुछ प्रदान करती है . . . केवल मात्र दूसरों के लिये ही इनका उपयोग होता है, न कि स्वयं के लिये।"

ठीक उसी प्रकार सन्त व्यक्तियों का जन्म भी लोकहितार्थ ही होता है, जिससे कि वे वृक्ष की भांति ही दूसरों को छाया दे सकें, नदी बनकर अपनी मधुरिम वाणी से लोगों की तृष्णाओं को शांत कर उनकी प्यास को बुझा सकें, अर्थात् अपनी ज्ञान-गंगा के प्रवाह से वे हमारे पाप रूपी मैल को धोकर हमें निर्मल, स्वच्छ बना दें. . . तथा पर्वत बनकर आने वाली अड़चनों, परेशानियों को दूर कर सकें और पृथ्वी की भांति वह सब कुछ प्रदान कर सकें, जिनकी उन्हें आवश्यकता है; इस प्रकार वे स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों की भलाई में ही अपने जीवन को समर्पित कर देते हैं, क्योंकि सन्तों का आगमन, तो सदा सबको सुख देने के लिये ही होता है।

अस प्रभु हृदय अछत अविकारी,
सकल जीव जग दीन दुखारी।
राम सिन्धु धन सज्जन धीरा;
हरि चन्दन सम संत समीरा।।

विनाश रहित, विकार रहित हे प्रभु! यह सारा संसार दुःखों से व्याप्त है। मनुष्य जब जीवन के रहस्य को नहीं समझ पाता और उसे अपने जीवन में सही मार्गदर्शक के रूप में गुरु की प्राप्ति नहीं होती, तब वह दुःखी और संतृप्त हो जाता है, क्योंकि मात्र सांस लेकर जीवित रहना और खा-पीकर के जीवन यापन करना, यह कोई जीवन नहीं, जीवन का मतलब है, उस वस्तु या तत्त्व को प्राप्त करना, जहां पूर्णता और आनन्द है . . . और इस रहस्य को जानने के कारण ही वह दुःखों से घिरा रहता है।

जिस प्रकार वायु समुद्र से जल-बिन्दु लेकर मेघ का निर्माण करती है, और बाद में उसी जल को शीतल व मीठे जल के रूप में परिवर्तित करती है, उसे समाजोपयोगी बनाती है, वैसे ही आधिदैहिक, आधिदेविक तथा आधिभौतिक तापों से संतप्त मानव को शांति देने के लिये सन्त रूपी वायु भी भगवान् के दिव्य गुणों, क्रियाओं एवं लीलाओं के माध्यम से आनन्द प्रदान करती है।

भगवान्, मलयाचल पर्वत के चन्दन वन के समान हैं तथा सन्त, वायु के समान हैं, जैसे वायु चन्दन वन से चन्दन की सुगन्ध को लेकर दूर-दूर स्थानों तक उसे विस्तारित कर सुगन्ध से आप्लावित कर देती है, उसी तरह सन्त भी भगवान् के पावन कथन को अपनी निर्मल, मधुर वाणी के माध्यम से चन्दन की सुगन्ध के समान रसमय बनाकर जनमानस को आनन्दित कर देते हैं।

'सन्त' शब्द का निर्माण यों ही नहीं हुआ है, बहुत गूढ़

तथ्य समेटे है यह शब्द अपने-आप में. . . उस शब्द से हर एक को सम्बोधित किया भी नहीं जा सकता, क्योंकि प्रत्येक इस शब्द के अर्थ को सार्थक कर भी नहीं सकता। लाखों-करोड़ों में कभी-कभार एकाध व्यक्ति ही ऐसे उभर कर सामने आते हैं, जिन्हें अति दिव्य व पावन शब्द "सन्त" से सम्बोधित किया जाता है. . . और जब उनके नाम के साथ सन्त शब्द जुड़ जाता है, तो यह शब्द भी अपने-आप को कृतार्थ अनुभव करने लगता है।

सन्त शब्द का तात्विक अर्थ है— "एक ऐसा व्यक्ति, जिसने अपने स्व का अंत कर दिया हो"। स्व का अन्त करना अत्यधिक दुःख पूर्ण प्रक्रिया होती है, क्योंकि ऐसा सम्भव ही नहीं है, कि हम या कोई भी व्यक्ति अपने हित चिन्तनों को भूल कर किसी अन्य के बारे में चिन्तन कर सकें। इस समाज में लोग जितने भी कार्य करते हैं, सिर्फ अपने लिये करते हैं, बहुत आगे बढ़े, तो अपने परिवार में अपने से सम्बन्धित चाचा, दादा आदि के लिये कार्य कर देंगे। आजकल तो यह भी देखने में भी नहीं आता है, कि मनुष्य अपनी पत्नी एवं उन पुत्रों को, जो कि उन पर निर्भर हों, उनके अतिरिक्त किसी और के बारे में हित चिन्तन भी करें।

अत्यधिक स्व प्रेरित हो गया है आज का मनुष्य। इस प्रकार के युग में परहित चिन्तन करना, सर्वजन हित चिन्तन करना निश्चित रूप से समुद्र की तीव्र धारा की विपरीत दिशा में तैरने के समान दुष्कर है, किन्तु कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो जन्म ही परोपकार के लिये लेते हैं, उनके जीवन का मूल लक्ष्य, मूल चिन्तन केवल और केवल मात्र इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणियों के दुःखों को दूर करना. . . और दूर करना सिर्फ यों ही नहीं, उस दुःख को अपना समझकर दूर करना होता है।

आज जब हम वर्तमान युग में दृष्टिपात करते हैं इस तरह की सन्त प्रवृत्ति वाले व्यक्तित्व को ढूंढने के लिये, नमन करने के लिये, श्रद्धानत होने के लिये, तो हमारे सामने एक अति पावन सदैव परोपकार हेतु कार्यरत व्यक्तित्व **"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"** का नाम स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

डॉ० श्रीमाली जी के दिव्य व्यक्तित्व के चर्चे सुनकर मेरे मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई, कि क्या वर्तमान युग में भी परहित चिन्तनकारी व्यक्तित्व का जन्म सम्भव है? इस जिज्ञासा के समाधान हेतु उनके साहित्य को पढ़ा, उनके प्रवचन के कैसेट्स सुने, उनसे सम्पर्कित लोगों से मिला, इन सबके आधार पर स्वतः ही मेरे मन में यह वाक्य झिलमिलाने लगा— **"सिद्धि प्रदायक सन्त डॉ० श्रीमाली"।**

स्वर्ण निर्मित जेवर को प्रचार की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि उसके गुण का बखान सभी लोग करते हैं, किन्तु जो स्वर्ण का भ्रम उत्पन्न करने वाले जेवर हैं, उन्हें प्रचारित करने की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार आज कई ऐसे हैं, जो चिल्ला-चिल्ला कर यह कहते हैं, कि पहले कर्म करो, फिर उपासना! . . . कलियुग में इसका ज्ञान बिरले को ही होता है . . . जो कर्म, उपासना और ज्ञान का अर्थ बता सके . . . वही सही अर्थों में सन्त है, जिसके कृपादान से कौआ भी हंस बन जाता है।

कोई आवश्यक नहीं है, कि आप मेरे मन के इस भाव से सहमत हों ही, किन्तु जो सत्य है, जो वास्तविकता है, उसे झुठलाया नहीं जा सकता, सद् कार्य, सद् चिन्तन तो अपने-आप ही उस व्यक्तित्व की प्रशस्ति उच्चरित करते रहते हैं, ऐसे व्यक्तित्व को किसी अन्य के द्वारा दी गई उपमाओं, उपाधियों की लालसा नहीं होती, क्योंकि वे जो भी कार्य करते हैं, उसके पीछे इस तरह का कोई भाव नहीं होता, लेकिन इस समाज में जब लोगों को ऐसे व्यक्तित्व के द्वारा सुख, आनन्द की प्राप्ति होती है, तो उनकी अंतरात्मा स्वयं उस दिव्य व्यक्तित्व के लिये अनगिनत उपाधियां प्रदान करने लग जाती है।

महान् संत डॉ० श्रीमाली जी के विहंगम जीवन पर दृष्टिपात कर मैंने यह अनुभव किया, कि इस व्यक्तित्व ने प्रत्येक कार्य केवल जन हितार्थ ही किया है, चाहे वह अति प्राचीन मन्दिरों का जीर्णोद्धार हो या फिर राजस्थान के किसी गांव में, जहां आज भी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, वहां के लोगों के दुःखों को दूर करने का कार्य हो। प्रत्येक कार्य डॉ० श्रीमाली जी ने सिर्फ मानव-हृदय से अनुप्रेरित होकर ही किया है।

मुझे डॉ० श्रीमाली जी के सान्निध्य में रहने का कुछ अवसर प्राप्त हुआ, उन क्षणों में मैंने देखा, कि उनके कार्यालय से प्रति माह अशक्त, वृद्ध विधवाओं के लिये धनराशि प्रदान की जाती है, अनाथ बच्चों के पालन-पोषण, उनके अध्ययन के लिये भी धनराशि प्रदान की जाती है, जिससे कि वे सिर्फ फुटपाथ के एक मजदूर बनकर न रह जायें, अपितु समाज में सम्मानपूर्वक जीवन यापन कर सकें।

हालांकि ये दोनों कार्य श्रीमाली जी वर्षों से निरन्तर करते आ रहे हैं, उस समय से ही जब वे एक छोटे-से गांव 'लूनी' में एक छोटे-से स्कूल में अध्यापक थे। उस समय भी श्रीमाली जी ने अपने घर-परिवार का भरण-पोषण करते हुए दूसरों की विपत्ति

काल में उनको तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

इस सम्बन्ध में एक उद्धरण याद आता है, जिसका पता मुझे उनकी जन्मभूमि 'खरंटिया' गांव में जाने पर एक वृद्ध विधवा स्त्री के द्वारा पता चला। उसने मुझे बताते हुए कहा—

"मैं बहुत ही छोटी-सी उम्र में विधवा हो गई थी, जैसा कि राजस्थान में प्रचलन था, मेरा विवाह ८ वर्ष की अल्प अवस्था में ही हो गया, किन्तु यौवन के आगमन से पूर्व ही मुझे विधवा भी घोषित कर दिया गया। मैं समझ ही नहीं सकी, कि विवाह सुख क्या होता है? ससुराल में लोगों के मुख से हमेशा 'कलंकिनी', 'कुलनाशिनी' आदि शब्दों को सुनते-सुनते दिन-रात जी तोड़ परिश्रम करती, तालाब से पानी लाती, इसके बावजूद भी कभी-कभार रोटियां खाने को मिल जातीं, नहीं तो अधिकतर डण्डे ही खाने को मिलते।

नारायण जी उस समय लूनी में अध्यापक थे, और किसी कार्यवश जब खरंटिया आये, तो उन्होंने मेरे बारे में पूछा; मैं उनकी मुंह बोली बहिन हूं, बहुत अधिक ममत्व मिला है मुझे उनसे। जब उन्हें पता चला, कि ससुराल में मेरी कितनी दुर्गति हो रही है, तो उसी क्षण वे मेरे ससुराल के लिये चल दिये, वहां जाकर मेरा हाथ पकड़ कर बोले— "अभी इसी वक्त मेरे साथ चलो, इन नर-पिशाचों के बीच अब मेरी बहिन और नहीं रह सकती।"

उस गांव के सारे पुरुष इकट्ठे हो गये, और नारायण जी का विरोध करने लगे, किन्तु न जाने कहां से इतनी शक्ति उनमें आ गई, कि उनकी एक हुंकार मात्र से ही सभी एक किनारे खड़े हो गये, और वे मुझे लेकर यहां चले आये।

उस दिन के बाद से आज तक का दिन है, कि इस गांव में भी मुझे हर सुख-सुविधा उपलब्ध है, और मैं बहुत ही सम्मानपूर्वक जीवन यापन कर रही हूं।"

और इतनी बात कहते ही उस वृद्ध स्त्री की आंखों से झर-झर अश्रु प्रवहित होने लगे।

श्रीमाली जी के द्वारा लगाये हुए एक शिविर में मैं गया, जो कि 'हैदराबाद' में लगाया गया था। जब श्रीमाली जी प्रवचन दे रहे थे, तो उस समय मैं यों ही बाहर घूम रहा था . . . तभी एक व्यक्ति ने अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया, क्योंकि वह लगातार विलाप करता जा रहा था; मैंने सोचा, शायद कोई तकलीफ है. . . चलकर देखना चाहिये, पास पहुंच कर जब मैंने उससे पूछा, तो वह मेरे कन्धे पर अपना सिर रखकर, फूट-फूट कर रोने लगा— "अरे! ये जो सामने मंच पर बैठे हैं, ये सिर्फ इंसान नहीं हैं, जीवनदाता हैं मेरे।"

मेरे मन में विचार आया, इससे पूछना चाहिये, कि किस घटना के कारण इसने इन्हें 'जीवनदाता' जैसे शब्द से सम्बोधित किया . . . और उससे वार्तालाप के दौरान जो तथ्य उभरकर सामने आया, उसके द्वारा डॉ० श्रीमाली जी का परदुःखकातर हृदय स्पष्ट हो गया। उसने बताया— "आज से बरसों पूर्व मेरा बेटा 'श्रीनगर' अपने स्कूल की तरफ से गया हुआ था। श्रीनगर में पूरे भारत के सभी प्रदेशों से स्काउट्स- गाइड्स आये हुए थे, उसी में श्रीमाली जी भी राजस्थान प्रदेश के स्कूल की तरफ से आये हुए थे। वहां घूमते हुए अचानक मेरा बेटा एक पहाड़ी ढलान से फिसल कर गिर पड़ा . . . और बहुत बुरी तरह से जख्मी हो गया; मेरा बेटा अस्पताल में ले जाया गया, तो पता चला कि उसके ब्लड ग्रुप का खून उपलब्ध ही नहीं है।"

इतने ढेर सारे लोगों के बीच सबसे पहले श्रीमाली जी उठकर आगे आये और बोले— "जितने खून की आवश्यकता है, मैं दूंगा। एक बोतल, दो बोतल, जितनी आवश्यकता है, उतना खून मेरे शरीर से निकाल लो।"

डॉक्टरों ने ब्लड ग्रुप मिलाने के बाद प्रसन्नता व्यक्त की और कहा— "मानव-शरीर रचना के अनुसार सिर्फ एक बोतल खून ही हम आपके शरीर से निकाल सकते हैं, जबकि इसे दो बोतल खून की आवश्यकता है।"

श्रीमाली जी ने उत्तर दिया— "मैं हृष्ट-पुष्ट हूं, मात्र महीने भर में दो बोतल खून मेरे शरीर में पुनः बन जायेगा, थोड़ी-सी कमजोरी ही तो मुझे आयेगी, पर इसकी जान बच जायेगी; न जाने किस का बेटा है यह बेचारा, एक मां की आंखों में आंसू तो नहीं आयेंगे।"
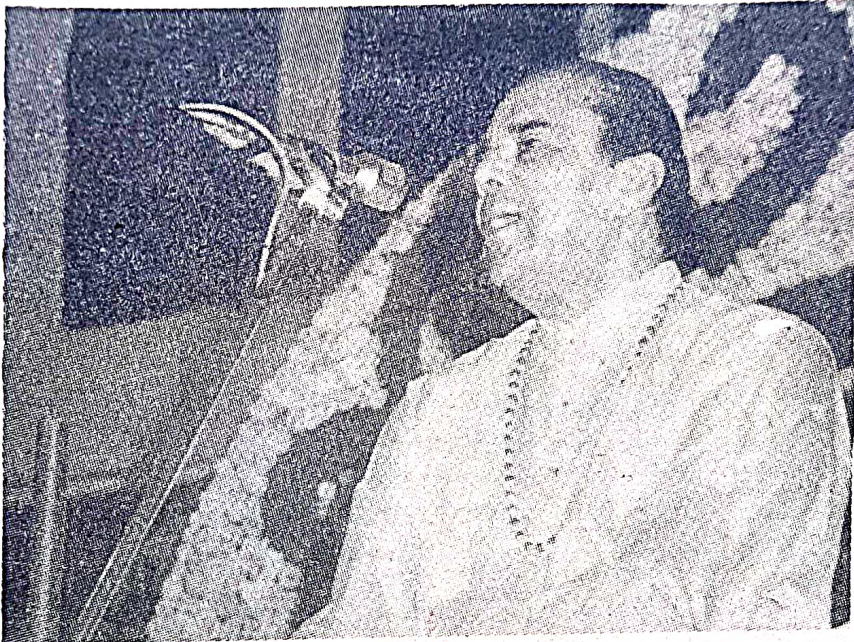
. . . "और उनके द्वारा दिये खून से ही मेरे बेटे की जीवन रक्षा हो सकी। कई जन्म लेकर भी मैं अपने जीवनदाता का यह ऋण नहीं उतार पाऊंगा।"

ये दो घटनाएं तो मैंने आपको सिर्फ इनके कोमल हृदय भावनाओं से अवगत कराने के लिये लिखी हैं, जिससे आप मेरी भावनाओं से सहमत हो सकें, कि वास्तव में ही श्रीमाली जी सन्त हैं, ऐसे परहितार्थ अनगिनत कार्य श्रीमाली जी के द्वारा हुए हैं, जिनके बारे में यदि मैं लिखना शुरू करूं, तो ५०० पृष्ठों का ग्रन्थ भी छोटा पड़ जायेगा।

जगह-जगह पर श्रीमाली जी ने अपने व्यय पर प्याऊ का निर्माण करवाया, उन ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां सड़कों पर छाया और पानी की व्यवस्था नहीं थी, वहां सड़कों के किनारे वृक्ष लगवाये, जिससे यात्रियों को असुविधा न उठानी पड़े।

श्रीमाली जी का जीवन यदि मैं कहूं, कि एक यात्री के समान ही व्यतीत हुआ है, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी, ऐसा इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि देश के विभिन्न सुदूर ग्रामीण अंचलों की भी इन्होंने यात्रा की है। वहां यदि इन्हें पता चल गया, कि इस गांव में कोई मन्दिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है, तो उसका जीर्णोद्धार करने में पूर्ण सहयोग दिया, जिससे कि हमारी संस्कृति सुरक्षित रह सके।

भारतवर्ष विश्व में सम्माननीय दृष्टिकोण से देखा जाता है, तो इसके पीछे एकमात्र आधार आध्यात्मिक प्रकृति से ओत-प्रोत भारतीय नागरिक ही हैं। देश के इस मूल चिन्तन को पकड़ कर ही डॉ० श्रीमाली जी ने विभिन्न स्थलों पर 'ध्यान-चेतना केन्द्रों' का निर्माण कराया, मन्दिरों का निर्माण कराया, जिससे हमारा सनातन धर्म, हमारा हिन्दुत्व (यहां हिन्दुत्व का तात्पर्य श्रीमाली जी की निगाहों में मात्र हिन्दु धर्म नहीं है, अपितु हिन्दुस्तान में रहने वाला प्रत्येक नागरिक हिन्दुत्व की भावना से ओत-प्रोत है), कायम रह सके।

विभिन्न शिविरों में आते-जाते मैंने श्रीमाली जी के बहुमुखी व्यक्तित्व का सूक्ष्मता से अवलोकन किया और यह मानने के लिये विवश हो उठा, विवश शब्द का प्रयोग मैं इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि मैं बहुत ही तार्किक दृष्टि का व्यक्ति हूं, तर्क की कसौटी पर परख कर जो बात मेरे गले उतरती है, मैं उसी को सत्य मानता हूं. . . और मैंने देखा कि मेरे तर्क उनके व्यक्तित्व के आगे बहुत ही बौने से हो गये हैं। श्रीमाली जी जब प्रवचन देते हैं, तब वे जिस ऋषि से सम्बन्धित साधना के बारे में ज्ञान प्रदान करते हैं, ऐसा लगता है, उस समय प्रवचन कर्ता डॉ० श्रीमाली जी नहीं, अपितु वे ऋषि विशेष स्वयं हैं।

जब वे अजस्र प्रवाह के द्वारा दिव्य वैदिक मंत्रों का संस्कृत में निरन्तर २०-२५ मिनट तक उच्चारण करते हुए शिष्यों को ऋषियों की तपश्चेतना, तपः ऊर्जा से जोड़ते हैं, तो ऐसा लगता है, कि साक्षात् वाग्देवी, सरस्वती उनके कण्ठ में विराजमान हो गई हैं।

शिष्यों पर शक्तिपात क्रिया करते हुए, जब उनके भव्य स्वरूप का अवलोकन करता हूं, तो उनका शरीर मात्र मानव-शरीर न रहकर मुझे कोटि सूर्यों का एकत्रित तेजस पुञ्ज ही दृष्टिगोचर होता है।

निश्चित रूप से इन विविध दिव्य क्रियाओं के कारण ही उनके शिष्यों, उनके साहित्य के पाठकों ने अपने हृदय में उनकी छवि एक ईश्वर के रूप में स्थापित कर रखी है, क्योंकि अनगिनत लाखों शिष्यों में से एक भी ऐसा शिष्य मुझे नहीं मिला, जो उनके ईश्वरीय प्रभाव के कारण अपने जीवन को सफल बनाने में सक्षम न हुआ हो।

सभी शिष्यों की मान्यताओं और अब मेरी मान्यता के अनुसार भी, जब मैंने बात ही बात में उनसे कहा,— हे गुरुदेव! आप तो साक्षात् परब्रह्म हैं. . . तो तुरन्त ही डॉ० श्रीमाली जी ने मुझे उत्तर दिया— "इतने महान परब्रह्म, जो कि सृष्टि के आदि और अंत सभी हैं, उनसे मेरी तुलना मत करो, मैं ईश्वर नहीं हूं और न ही कोई ईश्वरीय शक्ति मेरे अन्दर है; यदि है, तो परम प्रभु का दिया हुआ यह मानव-शरीर, और उनकी कृपा से ही प्राप्त एक छोटा-सा हृदय, जिसमें उठने वाली भावना-तरंगों के कारण मैं उन लोगों के हितार्थ चिन्तन कर पाता हूं, जो कि मेरे पास व्यथित हृदय लेकर आते है।

जिनके बारे में मुझे पता चल जाता है, कि उस स्थान पर वह व्यक्ति बहुत दुःखी है, तो मैं रोक नहीं पाता हूं अपने-आप को . . . जब पता चलता है, कि प्राकृतिक आपदा के कारण किसी स्थान विशेष के व्यक्ति घर विहीन, भोजन विहीन हो गये हैं, तब मैं अप्रत्यक्ष रूप से उनके पास समस्त सुविधाओं को उपलब्ध कराता हूं . . . अप्रत्यक्ष रूप से इसलिये, क्योंकि मैं सम्मान प्राप्ति के लिये एवं दिखावे के रूप में परोपकार के कार्य नहीं करना चाहता हूं, एक मनुष्य हूं, इसलिये प्रत्येक मनुष्य, चाहे वह किसी भी प्रांत, किसी भी देश का हो, प्रत्येक के दुःख को अपना दुःख समझ, उसे दूर करने का प्रयास करता हूं।

ईश्वर की मेरे ऊपर विशेष अनुकम्पा है, जिसके कारण मेरे प्रयास सार्थक हो जाते हैं. . . और अपने मन से तू यह भावना निकाल दे, कि मैं भगवान् हूं, मैं सिर्फ मनुष्य हूं और मुझे मनुष्य ही समझें।"

श्रीमाली जी सभी से ऐसा कहते हैं, लेकिन हम विवश हैं, हम क्या करें, क्योंकि हमारा हृदय उनकी इस बात को स्वीकार ही नहीं कर पाता है. . . और इसीलिए तो पुकार उठता है— "वे मनुष्य रूप में सिद्धि प्रदायक सन्त हैं।"

सिर्फ आपके लिए

एक उपहार

"महालक्ष्मी यंत्र"
2" X 2"

दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहिचान करा ही देती हैं. . . उन्हें चीखने-चिल्लाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, इत्र स्वयं अपनी उपस्थिति का आभास दिला देता है. . . वैसे ही यह **"यंत्र"** जहां रहता है, वहां धन का मार्ग स्वतः ही खुल जाता है. . . धन का आगमन अपना मार्ग स्वतः बना लेता है. . . फिर यह सौभाग्य आपके द्वार आया है . . . निर्णय आपको करना है. . .

वर्ष १९९५ की सदस्यता प्राप्त कर . . . या आप सदस्य हों तो अपने मित्र या रिश्तेदार को सदस्य बनावें और प्राप्त करें मुफ्त यह यंत्र उपहार स्वरूप. . . आप सिर्फ पोस्टकार्ड भर कर भेज दें. . . बाकी का कार्य हमारा . . .

वार्षिक सदस्यता शुल्क	**– १८०/-**
डाक खर्च	**– १६/-**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोनः 011-7182248, फेक्सः 011-7186700

लोक सभा चुनाव के बाद

प्रधानमंत्री पद के कई दावेदार किसके सिर पर ताज रखा जायेगा?

ज्योतिषीय अध्ययन

इस बार ग्रह स्थिति ऐसी बनी है, कि कोई एक व्यक्ति पूरे पांच वर्षों तक प्रधानमंत्री बना रह सके सम्भव नहीं . . . केवल वही व्यक्ति प्रधानमंत्री बनेगा, और पांच वर्षों तक टिकेगा, जो ''कूष्माण्ड'', ''कात्यायनी'' और ''चामुण्ड'' प्रयोग सबसे पहले सम्पन्न कराकर दैविक बल अपने पक्ष में कर ले।

इस समय राजनीति में जितनी उथल-पुथल हो रही है, वैसा कभी नहीं हुआ। इससे पहले भी तिलक, गांधी जी, सुभाषचन्द्र बोस और इंदिरा गांधी के समय में भी कांग्रेस के विभाजन हुए थे, लेकिन वे विभाजन कुछ और स्थितियों को लेकर हुए थे, मगर इन उहापोह की स्थितियों में अखिल भारतीय कांग्रेस के दो टुकड़े हो ही गये। एक 'निष्ठावान कांग्रेसी' श्री राव के साथ हैं और जो अलग कांग्रेसी गुट बना, वह श्री नारायण दत्त तिवारी के सम्पर्क में 'तिवारी कांग्रेस' कहलाने लगा और सभी संसद सदस्य किंकर्त्तव्यविमूढ़ हैं, कि क्या कांग्रेस के दो टुकड़े हो जायेंगे? क्या दोनों टुकड़े अलग होकर के आने वाले समय में लोकसभा का सामना कर सकेंगे, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी अपनी पूरी ताकत के साथ एकता को प्रदर्शित करते हुए सामने खड़ी है।

अब तो अलगाव की स्थिति भी बनती जा रही है, अब कोई आसार नहीं दिखाई देता, कि ये दोनों कांग्रेसी आपस में मिल सकें, क्योंकि कोई भी झुकने को तैयार नहीं है, ऐसी स्थिति में कांग्रेस का क्या भविष्य होगा, यह अंधेरे के गर्त में है, मगर इससे भी ज्यादा समस्याग्रस्त विषय यह है, कि क्या इससे कांग्रेस का अस्तित्व खतरे में नहीं पड़ जायेगा? क्या आने वाले समय में चुनाव का सामना कोई भी कांग्रेस का हिस्सा कर सकेगा? और यदि एक कांग्रेसी के सामने दूसरा कांग्रेसी खड़ा हुआ, तो क्या एक-दूसरे के पंख काटने, पंख नोचने के लिए सन्नद्ध नहीं होगा? इन सारी स्थितियों में नुकसान केवल कांग्रेस का ही होगा, और जब कांग्रेस का नुकसान होगा, तो दूसरी पार्टियां

स्वतः ज्यादा बलवान बन जायेंगी।

इसकी प्रतिध्वनि मैं पिछले अंक में दे चुका हूं और पिछले पांच-छः अंकों को उठा कर देखें, तो जो-जो भविष्यवाणियां उन पृष्ठों में की गई हैं, वे अपने-आप में अक्षरशः सही उतरी हैं। अब प्रश्न उठता है, कि लोकसभा का चुनाव कब होगा और होगा भी या नहीं? यदि लोकसभा का चुनाव हुआ तो किन परिस्थितियों में होगा?

यह तो सब स्वीकार कर चुके हैं, कि अगले अप्रैल १९९६ से पहले-पहले लोकसभा के चुनाव अवश्यम्भावी हैं, परन्तु जो हालात चल रहे हैं, और जो परिस्थितियां दिनोंदिन बदलती जा रही हैं, और जितना ही लोकसभा के चुनाव विलम्ब से होंगे, उतना ही दूसरी पार्टियों को ताकतवर बनने का मौका मिल जायेगा, और हम जीत सकेंगे, हम सत्ता पर कब्जा कर सकेंगे, ये उनके मन की सोच है, ये उनके मन का चिन्तन है।

प्रश्न यह उठ रहा है, कि श्री टी० एन० शेषन ने जो कहा है, कि अप्रैल १९९६ तक लोकसभा के चुनाव सम्पन्न हो ही जायेंगे, और होने जरूरी भी हैं, क्योंकि संवैधानिक दृष्टि से भी अप्रैल १९९६ से पहले चुनाव होने जरूरी हैं। मुझे ग्रहों की स्थितियां को देखते हुए ऐसा लग रहा है, कि अक्टूबर १९९५ के बाद किसी भी समय चुनाव हो सकते हैं। यह जरूरी नहीं है, कि अप्रैल १९९६ तक इन्तजार करें, क्योंकि यह बात कांग्रेसी समझ रहे हैं, कि विलम्ब अपने-आप में आत्मघाती है, मगर निर्णय तो श्री राव के हाथ में है, कि वे कब लोकसभा भंग करते हैं? क्या लोकसभा भंग करके वापिस चुनाव कराते हैं?

अब यह बात निश्चित है, कि जो विभाजन हुआ है, जो कांग्रेसी राव के साथ हैं और जो कांग्रेसी तिवारी, अर्जुन के साथ हैं, इन दोनों का वापिस, लोकसभा के चुनाव तक एक होना सम्भव नहीं है, क्योंकि स्वार्थी व्यक्तित्व इन दोनों को एक होने नहीं दे रहे हैं, और जो प्रयास कर रहे हैं, वे केवल ऊपरी दिखावा या ढोंग कर रहे हैं, आन्तरिक दृष्टि से वे स्वयं श्री राव को या श्री तिवारी को कमजोर करने में लगे हुए हैं, क्योंकि जब ये दोनों कमजोर होंगे, तभी उनकी गोटी फिट बैठ सकेगी और वे अपने लक्ष्य पर पहुंच सकेंगे।

प्रधानमंत्री का पद एक है, और इसके दावेदार कांग्रेस में ही कम-से-कम सात-आठ हैं, जो पूरी तरह से इस कुर्सी पर आंख लगाये हुए बैठे हैं, और प्रत्येक यह समझ रहा है, कि इस बार आर-पार की लड़ाई हो ही जानी है, और इस कुर्सी पर अधिकार जमा देना है।

जहां तक कि लोकसभा के चुनावों का सवाल है, मैंने पिछले अंक में भी बताया था, कि लोकसभा अपना कार्यकाल पूरा करेगी। कार्यकाल पूरा करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि वह मार्च या अप्रैल तक चले। इस समय २१ जून का सब इन्तजार कर रहे हैं, क्योंकि इस २१ जून को चार साल पूरे हो जायेंगे, और यदि चार साल एक संसद सदस्य के पूरे हो जाते हैं, तो उसे जीवन भर पेंशन, यात्रा-भत्ता अन्य सुविधाएं प्राप्त हो जाती हैं। इसलिए मैंने पहले भी बताया था, कि २१ जून तक कोई भी सांसद इधर-उधर हिलेगा नहीं, मगर जो कुछ ढांचा परिवर्तन होगा वह २१ जून के बाद तेजी के साथ बदलेगा, और जिनको भी पद या कुर्सी नहीं मिली है, जिनके भी मन में मंत्री पद प्राप्त करने की अभिलाषा है, वे सब किसी एक गुट के साथ तेजी से बढ़ जायेंगे, क्योंकि उनके सामने कोई रोक-टोक नहीं होगी।

मैंने ग्रहों की स्थितियों का, अधिकतर मंत्रियों के ग्रहों का और भारतवर्ष की जन्मकुण्डली का अध्ययन किया है, और मुझे ऐसा लगा है, कि प्रधानमंत्री की कुर्सी पर आसीन होने के लिए कई दावेदार हैं और ज्योतिषीय दृष्टि से भी वे लगभग थोड़े बहुत रूप में उस कुर्सी के आस-पास ही कहीं हैं। जिनमें **श्री राव, श्री नारायण दत्त तिवारी, श्री अर्जुन सिंह, श्री जगदीश टाइटलर, श्री लाल कृष्ण आडवानी, श्री मतंग सिंह, पं. सुखराम** और भी कई नेता हैं, जो ग्रहों की गति के अनुसार इस स्थिति के आस-पास कहीं पर हैं। महाराष्ट्र के शरद पवार और अन्य भी इस दौड़ में शामिल हैं, जब कि शरद पवार इस समय सबसे ज्यादा कमजोर और न्यून हैं। परन्तु पिछली बार सोनियां गांधी से मिलकर यह जताने की कोशिश की है, अभी भी उनमें हिम्मत है।
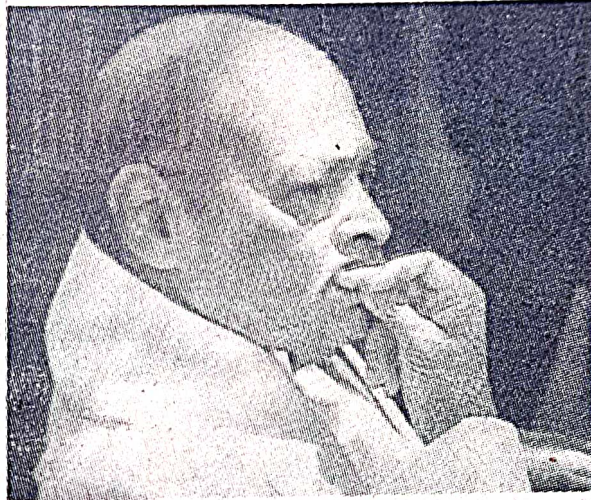
मेरे इस लेख के विश्लेषण का तात्पर्य यह है, कि लोकसभा का चुनाव अक्टूबर के बाद किसी भी समय हो सकता है, नवम्बर, दिसम्बर और ज्यादा से ज्यादा जनवरी तक, इससे ज्यादा कांग्रेस अपने-आप को नहीं खींच सकेगी, और क्या कांग्रेस इसके लिए तैयार है? हकीकत में देखा जाय तो, इस समय कोई भी पार्टी अपने-आप को लोकसभा के चुनाव के लिए तैयार नहीं कर पा रही है, परन्तु ये चार-पांच महीने आपाधापी के हैं, सभी तैयारियों में लगे हुए हैं, सबसे ज्यादा 'भारतीय जनता पार्टी' प्रयत्नशील है, कि कांग्रेस पार्टी के दो टुकड़े बने रहें और हम सफल हो सकें।

परन्तु जहां तक भारतीय जनता पार्टी की ग्रह स्थिति का प्रश्न है, अभी जो शनि और गुरु की स्थिति है, वह अपने-आप में पार्टी की जन्मकुण्डली इतनी क्षमतावान नहीं है, कि वह अकेली ही दिल्ली की गद्दी पर आसीन हो सके, और प्रधानमंत्री पद पर पहुंच सकें। यद्यपि पहले से उनकी स्थिति सुदृढ़ हो सकती है, पर सरकार बनाने के काबिल नहीं हो सकती। यद्यपि आडवानी जी की जन्मकुण्डली अपने-आप में इस दृष्टि से सक्षम है, परन्तु अकेले ग्रह किसी भी प्रकार से उनके लिए सहायक नहीं हो सकते, क्योंकि उनके ग्रहों की स्थिति यह है, कि एक ही ग्रह दो विपरीत स्थितियों को संभाले

हुए है, इसलिए जहां तक उनके राहु और मंगल का प्रश्न है, वे दोनों ही अपने-आप में कमजोर हैं, और ये दोनों ग्रह ही राजनीति में उच्चतम स्थिति में पहुंचाने में सक्षम होते हैं, इसलिए इन दोनों के कमजोर होने की वजह से कभी वे स्वास्थ्य पर हमला करते हैं, तो कभी राजनीतिक दांवपेच उलझा करके रख देते हैं, जिसके फलस्वरूप ऊपर चढ़ते-चढ़ते एक या दो सीढ़ी वापिस नीचे उतरना पड़ता है, और आन्तरिक कलह व आन्तरिक दांवपेच में उलझ करके रह जाते हैं।

इसके अलावा दूसरी पार्टियों में भी मुझे ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसा नहीं लग रहा है, कि उनको कोई सफलता मिल सकेगी।

न मेरा सम्बन्ध कांग्रेस से है, न भारतीय जनता पार्टी से है; न किसी से मेरा आन्तरिक लगाव है, न किसी से कोई दुश्मनी है, मैं तो शुद्ध ज्योतिषीय अध्ययन के आधार पर ही अपनी बात कह रहा हूं, जो ग्रह बोल रहे हैं, मैं तो उन्हें ही पंक्तिबद्ध कर रहा हूं। जहां तक कांग्रेस में नाम गिनाये हैं, वे सभी इस समय इसी बात के लिए प्रयत्नशील हैं, कि वे ज्यादा से ज्यादा सांसदों को अपने अधिकार में ला सकें, और प्रधानमंत्री पद तक पहुंच सकें।

अब प्रश्न उठता है, कि आने वाले समय में कौन प्रधानमंत्री बनेगा? किसके ग्रह-नक्षत्र ज्यादा मजबूत हैं।

जैसा कि मैंने बताया, जो मैंने ऊपर नाम बताये उनमें से अधिकांश लोगों के ग्रह-नक्षत्र मजबूत और क्षमतावान हैं, परन्तु आज **पिछले पांच हजार वर्षों में जितने भी शासक हुए हैं, विक्रमादित्य से लेकर आज तक, उन सभी ने शासक बनने के लिए दैवी सहायता का भी उपयोग किया है। जब ग्रह अपने-आप में पूर्ण क्षमतावान नहीं होते, जब ग्रहों की स्थिति उतनी ताकतवान नहीं रहती, कि निष्कण्टक आगे बढ़ा करके राज्य गद्दी पर उसको बिठा सकें, तो ऐसी स्थिति में मनुष्य सहायता की अपेक्षा दैवी सहायता ज्यादा अनुकूल होती है,** और वही उसको किनारे लगा सकती है, जिस प्रकार से कुम्भ से लेकर मीन राशि के शनि तक की यात्रा और राहु, मंगल व अन्य ग्रहों की स्थितियां हैं (जो मुझे लोगों से प्राप्त हुई हैं उन कुण्डलियों) का अध्ययन करने के बाद यह बात तो निश्चित है, कि अब इस समय जो गोचर में ग्रह स्थिति चल रही है उनमें इतनी क्षमता या ताकत नहीं है, कि वे बिना दैवी सहायता के इस प्रधानमंत्री पद तक किसी को पहुंचा सकें, ऐसी सम्भावनाएं धूमिल हैं, कमजोर हैं।

फिर भी श्री तिवारी जी और श्री राव जी की जन्मकुण्डलियों में शनि और मंगल बहुत ज्यादा शक्तिशाली हैं, यद्यपि राहु कमजोर है, और बिना राहु के राजनीति में पूर्णता तक नहीं पहुंचा जा सकता। राहु का सुदृढ़ होना आवश्यक है और राहु जिस स्थिति में है, जिस गति में है, वह पूर्ण सहयोग नहीं कर पा रहा है। बाकी लोगों के ग्रह भी लगभग इन्हीं ग्रहों के आस-पास घूम रहे हैं, मगर दूसरों की अपेक्षा इनके ग्रह ज्यादा सशक्त हैं, ज्यादा क्षमतावान हैं, ज्योतिषीय दृष्टि से ज्यादा अनुकूल हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं, कि दूसरे प्रधानमंत्री नहीं बन सकते। प्रधानमंत्री तो कोई भी बन सकता है, मगर मैं तो ज्योतिषीय अध्ययन की बात कर रहा हूं।

शास्त्र झूठे और अमर्यादित नहीं हैं, हम केवल पश्चिम के अन्धानुकरण में आ करके शास्त्रों की अवहेलना भले ही कर दें। यह बात भी निश्चित है, कि जो भी तथाकथित नाम हैं, वे अपने-आप में उतने क्षमतावान नहीं हैं, कि वे इस प्रकार के अनुष्ठानों को सम्पन्न करवा सकें। इन पंक्तियों को लिखने का तात्पर्य यह नहीं है, कि मैं कोई बहुत ज्यादा विद्वान् हूं या योग्य व्यक्तित्व हूं। मैं तो केवल ज्योतिष और दैविक बल की बात कर रहा हूं, मगर यह भी निश्चित है, कि बिना दैविक बल के व्यक्ति इस बार प्रधानमंत्री पद पर सुशोभित नहीं हो सकेगा।

''तंत्र समोद्भव'' में लिखा है —

चामुण्डे सम्प्रदिच्छामि, मुरुत्व मंत्र योनि च।
अज्ञातं पूर्णतः अध्येत, निश्चयं राज्य उच्यते।।

यदि **''चामुण्ड प्रयोग''**, जो अत्यन्त गोपनीय, महत्वपूर्ण और दुर्लभ है, जिसे मामूली-सा व्यक्ति भी, जिसका अस्तित्व नहीं के बराबर है, पूर्ण क्षमता के साथ किसी योग्य विद्वान् से, जो इस बात का जानकार है, जो वास्तव में ही योग्य और श्रेष्ठ है, वह यदि पूर्ण क्षमता के साथ चामुण्ड प्रयोग को सम्पन्न करवा देता है, तो एक छोटा-सा व्यक्ति भी राजा बन सकता है, इसमें कोई दो राय नहीं है।

''देवी तंत्र'' में कहा गया है—

कर्म निश्चय वै प्राप्यं शत्रूद्भव वै यमः।
राज्यो निश्चयाद् वै राज्यं भव प्राप्नोति निश्चयः।।

जो सही अर्थों में अपने यजमान के लिए **''कूष्माण्ड प्रयोग''** को सम्पन्न करता है, तो सारे ग्रह मिलकर के उस व्यक्ति को पूरी क्षमता के साथ आगे बढ़ाने में समर्थ होते हैं। अकेला कूष्माण्ड प्रयोग ही उस मामूली और साधारण व्यक्ति को पूर्ण क्षमतावान राजा बना देता है।

यही नहीं अपितु **''देवी रत्न समुच्चय''** में अत्यन्त गोपनीय प्रयोग लिखा है—

कात्यायनी महादृष्टा कात्योत मन्त्रं भवेद् यमः।
कात्यात् भवति सम्पन्नं निश्चयं राज्य वै पयः।।

जो **''कात्यायनी प्रयोग''** को जानता है, वह बिरला ही होता है। कात्यायनी प्रयोग को सम्पन्न कराने वाले विद्वान् को प्राप्त कर जो उसके माध्यम से कात्यायनी प्रयोग सम्पन्न करा लेता है, वह बिना राज्य के रह ही नहीं सकता, निश्चय ही वह राजा बनता है, इसमें कोई दो राय नहीं।

वास्तव में ही जिन पुस्तकों में कात्यायनी मंत्र लिखे हुए हैं, कात्यायनी प्रयोग, साधना, पूजा, अर्चना लिखी हुई है, वे अपने-आप में सामान्य पूजा या पाठ है, प्रयोग अपने-आप में अलग होता है। प्रयोग तो उस तीर की तरह होता है, जो निश्चित लक्ष्य तक पहुंचता ही है और लक्ष्य भेद करता ही है, क्योंकि चामुण्ड, कूष्माण्ड और कात्यायनी प्रयोग के समान कोई प्रयोग पूरे विश्व में है ही नहीं, इसीलिये

शास्त्रों में इन प्रयोगों को "गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः" कहा गया है— "पिता पुत्रो न दातव्यं" पिता को भी चाहिए, कि वह पुत्र को न दे और साथ ही कहा गया है—

लक्ष्योद लक्ष्यः विद्वानं केवलं मपि एव च स ज्ञातव्यं कूष्माण्डा कात्यायनी भवेत् यदः चामुण्डां भव चामुण्डं वेदपं यदि दृष्टयेत् उच्यते यजमानस्य कारित्वं राज्य वै नृपः।।

अर्थात् "करोड़ों-करोड़ों लोगों में से कोई एक-आध व्यक्ति ही ऐसा होता है, जो इन गोपनीय प्रयोगों को जानता है, जिनको कूष्माण्ड प्रयोग, चामुण्ड प्रयोग आता है, और यदि ये प्रयोग काई व्यक्ति सम्पन्न करा लेता है तो वह निश्चय ही राजा बनता है, और सारे ग्रह उसके अधीन बन करके उसको उस प्रधानमंत्री पद पर बिठा देते हैं, जो अपने-आप में निष्कण्टक होता है, और आने वाले समय में कोई शत्रु उसके सामने सिर उठा करके खड़ा हो ही नहीं सकता।

मैं अनुष्ठान की चर्चा नहीं करना चाहता था, मेरा विषय तो ज्योतिष का है इस समय, पिछले पचास वर्षों से ज्योतिष का अध्ययन करता आ रहा हूं, और मैंने यह अनुभव किया है, कि इस समय किसी के भी ग्रह इतने अधिक बलवान नहीं हैं, और जब बलवान नहीं हैं, तो हमारे भारतवर्ष में विक्रमादित्य से लगा करके आज तक उन राजाओं में जो कमजोर रहे हैं, जो अपने-आप में अस्थिर रहे हैं, उन लोगों ने इस प्रकार के प्रयोगों को अपने गुरुओं से सम्पन्न कराया है, जो वास्तव में जानकार हैं, जो आडम्बर से रहित हैं, जो अपने प्रचार-प्रसार से दूर हैं, यदि ऐसा विद्वान् मिले, ऐसा अपने-आप में श्रेष्ट व्यक्तित्व मिले और उनके माध्यम से इस प्रकार के प्रयोग सम्पन्न हों, तो निश्चय ही वे पूर्णतः दो तिहाई बहुमत लेकर राज्य चला सकेंगे . . . देश को पूरी क्षमता के साथ विश्व में आगे बढ़ा सकेंगे और सफलता प्राप्त कर प्रधानमंत्री बन सकेंगे।

मैं एक बार पुनः ज्योतिषीय गणना के अनुसार बीच चौराहे पर खड़ा हूं और मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है, कि इस ताज को कौन अपने सिर पर रख सकेगा। मगर ज्योतिष में व दैविक ग्रंथों में सुदीर्घ अनुभवों के साथ ऋषियों ने जो कुछ कहा है, उसको मैंने इन पन्नों पर उतारा है, और निश्चय ही इन लोगों में से कोई व्यक्ति इस प्रकार की दैवी सहायता प्राप्त करके ही प्रधानमंत्री पद को सुशोभित कर सकेगा; अन्यथा अस्थिर सरकार बनेगी . . . दो महीने चलेगी, तीन महीने चलेगी, पांच महीने चलेगी . . . इस प्रकार की अस्थिरता से पूरे विश्व में हम पूरी क्षमता के साथ आगे नहीं बढ़ सकेंगे। आवश्यकता है दैवी बल, दैवी सहायता अनुष्ठान के माध्यम से प्राप्त करने की, दो तिहाई बहुमत प्राप्त करने की तथा पूरी क्षमता के साथ प्रधानमंत्री पद पर पूरे पांच साल तक बने रहने की . . . और ऐसा होने पर ही हम देश को पूरी क्षमता के साथ आगे की ओर गतिशील कर सकेंगे और समर्थ प्रधानमंत्री बन सकेंगे।

— दिव्य चक्षु

२३.०८.९५

एक गोपनीय, दुर्लभ साधना...

ब्रह्मास्त्र साधना

"श्रीकृष्ण" जिन्होंने "ब्रह्मास्त्र साधना" कर शिव से अद्वितीय ब्रह्मास्त्र प्राप्त किया, जो पूरे परिवार की रक्षा के लिए, पूरे वर्ष भर के लिए अद्वितीय, अप्रतिम, अमोघ है।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति-
ब्रह्मणोऽधिपति ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोऽम् ।।

– अर्थात् ''जो सम्पूर्ण विद्याओं के ईश्वर, समस्त भूतों के अधीश्वर, समस्त ब्रह्माण्ड के अधिपति, ब्रह्म-बल, वीर्य के प्रतिपालक तथा साक्षात् परब्रह्म एवं परमात्मा हैं, वही सच्चिदानन्दमय, नित्य कल्याण स्वरूप शिव मेरे हृदय में निवास करें।''

वेद, पुराण, उपनिषद् आदि का अध्ययन करने के उपरांत यह तथ्य सामने आता है, कि शिव, विष्णु आदि विभिन्न नामों से निर्दिष्ट देवगण एक ही ईश्वर तत्त्व के अंश हैं, उसी एक ईश्वर की आराधना वेद आदि शास्त्रों में की गई है। वैदिक मंत्रों में भगवान् शिव को सर्वभूत अर्थात् समस्त प्राणियों के नियन्ता शब्द से निरूपित किया गया है।

भगवान् शिव को **'आदि जगद्गुरु'** शब्द से भी सम्बोधित किया गया है. . . और भगवान् शिव ही एकमात्र ऐसे देव हैं, जिनकी आराधना प्रत्येक मनुष्य, देवता, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर आदि जितनी भी योनियां हैं, जातियां हैं, सभी ने की है। जहां रावण ने भगवान् शिव की आराधना कर, उनके ही द्वारा ज्ञान प्राप्त कर, अपनी कुण्डलिनी का पूर्ण जागरण कर, अपने नाभिस्थल में अमृत-कुण्ड की स्थापना कर अमृतत्व को प्राप्त किया; वहीं भगवान् राम ने भी शिव की आराधना करके रावण पर विजय प्राप्त की।

प्रत्येक युग में जितने भी प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए हैं, सभी ने शिव की आराधना किसी न किसी रूप में की ही है, यहां तक कि जगद्गुरु शब्द से सम्बोधित किये जाने वाले योगीश्वर श्रीकृष्ण ने भी भगवान् शिव की आराधना अपने प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करने के लिए की।

लीला पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण ने भी शिव की आराधना कर उन्हें प्रसन्न किया, तो शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया— "हे कृष्ण! मेरे प्रसाद से देव, गन्धर्व एवं समस्त मनुष्यों में तुम अप्रमेय बल वाले होंगे". . . और भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं गीता में इस बात को स्वीकार करते हुए कहते हैं, कि "मैं भगवान् शिव की ही कृपा से, अपनी माया द्वारा जगत् को मोहित करता हुआ विचरण करता हूं।"

श्री महाभारत आनुशासनिक पर्व के चतुर्दशाध्याय में भीष्म पितामह की प्रेरणा से स्वयं भगवान् कृष्ण, शिव-महिमा का वर्णन करते हैं— शिव-महिमा का वर्णन प्रारम्भ करने से पूर्व श्रीकृष्ण आचमन, प्राणायाम आदि क्रिया द्वारा स्वयं को पवित्र करते हैं।

महाभारत में वर्णित इस तथ्य से स्पष्ट होता है, कि भगवान् कृष्ण, शिव के अनन्य उपासक रहे हैं। यहां तक कि जब अर्जुन ने जयद्रथ को मारने का वचन लिया, तब कृष्ण ने स्वयं अर्जुन को शिव-पूजन सम्पन्न कराकर पाशुपतास्त्र प्राप्त कराया था। भगवान् कृष्ण ने भी पुत्र-प्राप्ति की कामना से तथा एक मनुष्य रूप में जिस सम्मान, ऐश्वर्य, समृद्धि की श्रेष्ठ आकांक्षा होती है,

उसे प्राप्त करने के लिए भगवान् शिव की ही आराधना की।

भगवान् कृष्ण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सम्पूर्ण हैं, जहां उन्होंने पूर्णता के साथ अपने प्रेममय स्वरूप का परिचय दिया, वहीं उन्होंने एक कुशल योद्धा, एक कुशल राजनीतिज्ञ का रूप भी सभी के सामने रखा, इसके साथ ही साथ गुरुकुल में अध्ययनरत् श्रीकृष्ण ने एक पूर्ण समर्पित शिष्य का स्वरूप भी समाज के सामने प्रस्तुत किया है। गुरुकुल में अपने गुरु सांदीपन के द्वारा उन्होंने प्रत्येक शास्त्र एवं प्रत्येक गूढ़ विद्याओं को पूर्णता के साथ प्राप्त किया।

यदि सूक्ष्मता से भगवान् कृष्ण के जीवन का अवलोकन किया जाय, तो यह स्पष्ट होता है, कि उन्होंने सम्पूर्ण साधना-विधान, चाहे वह मांत्रोक्त हो या तांत्रोक्त हो, को सम्पन्न कर समस्त सिद्धियों को हस्तगत किया। जब भगवान् श्रीकृष्ण साधनारत् थे, तो उन्होंने उसी क्रम में भगवान् शिव की आराधना विविध आयुधों एवं वरदानों को प्राप्त करने के लिए भी की।

द्वापर युग में जब पाप वृत्ति वाले मनुष्यों का प्रभाव समाज में अत्यधिक बढ़ गया और वे समस्त राक्षसगण ऋषियों, मुनियों को दुःख पहुंचाने लगे, तो ऐसी अवस्था में सभी ने मिलकर भगवान् कृष्ण से कोई उपाय ढूंढने की प्रार्थना की. . . और ऋषि-मुनियों की प्रार्थना पर तथा जन-सामान्य की कारुणिक पुकार को सुनकर भी श्रीकृष्ण ने भगवान् शिव की आराधना कर विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों को प्राप्त किया।

एक हस्तलिखित तांत्रिक ग्रंथ में भगवान् कृष्ण द्वारा की गई **''ब्रह्मास्त्र साधना''** का वर्णन प्राप्त होता है। भोजपत्र पर लिखा होने के कारण इस ग्रंथ के कुछ पन्ने तो समाप्त हो चुके हैं, लेकिन कुछ एक पन्ने शेष रह गये हैं. . . और वे भी अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में।

घुमक्कड़ प्रकृति के साधु-संन्यासी प्रायः हमारे पत्रिका कार्यालय में आते रहते हैं, उन्हीं में से एक साधु ने, जिन्होंने अपना नाम "वैश्रव्यानन्द" बताया, हमें यह तांत्रोक्त ग्रंथ दिखाया। उस ग्रंथ में वर्णित "ब्रह्मास्त्र साधना" को समाज के हाथों में सुरक्षित रूप से सौंप सकें, अतः हमने इस प्रयोग को पत्रिका में प्रकाशित करने का निश्चय किया, और कर रहे हैं।

ब्रह्मास्त्र साधना के द्वारा भगवान् कृष्ण को ब्रह्मास्त्र प्राप्त हुआ था, जिसके द्वारा उनके जीवन की समस्त बाधाएं, चाहे वे देहिक हों, राजकीय हों, भौतिक हों या शत्रु विनाश से सम्बन्धित हों, स्वतः ही समाप्त होती रहती हैं। उस ग्रंथ में वर्णित विधि को अत्यधिक सरल भाषा में पाठकों एवं साधकों के हितार्थ पंक्तिबद्ध कर प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे हमारे पाठक एवं साधक इस अद्वितीय साधना से पूर्ण लाभ उठा सकें। इस साधना की महिमा या इसके लाभ का वर्णन जितना भी किया जाय, कम है; क्योंकि

ये श्रेष्ठ दीक्षाएं

लक्ष्य भेद दीक्षा

आत्म-ज्ञान दीक्षा

ध्यान सिद्धि दीक्षा

वैवाहिक योग दीक्षा

अभीष्ट सिद्धि दीक्षा

ब्रह्मदर्शन सिद्धि दीक्षा

गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा

मंगली दोष निवारण दीक्षा

आत्म-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा

निश्चित परिणाम प्राप्ति दीक्षा

जिस प्रयोग को भगवान् कृष्ण ने स्वयं सम्पन्न किया, उसकी दिव्यता, श्रेष्ठता एवं उससे अचूक लाभ प्राप्त करने का वर्णन करना हम मनुष्यों के सामर्थ्य की बात नहीं है।

इस साधना को सम्पन्न करने हेतु साधकों के लिए निम्न विधान होगा–

१. **''ब्रह्मास्त्र यंत्र''** एवं **''सिद्धि प्रदायक माला''** इन दो सामग्रियों की आवश्यकता इस साधना को सम्पन्न करने के लिए पड़ती है, जिससे कि हमारा सम्बन्ध देवाधिदेव महादेव के वरदायक स्वरूप से स्थापित हो सके।

२. **२३-०८-९५, भाद्रपद, कृष्ण पक्ष, बुधवार, प्रदोष व्रत के दिन** इस साधना को करने का विधान है या **किसी भी मास के प्रदोष व्रत को** अथवा जिस दिन आपके मन में इस साधना को करने की तीव्र भावना उत्पन्न हो, उस दिन ही इस साधना को सम्पन्न करें, क्योंकि इस साधना को करने के लिए पूर्ण श्रद्धा भावना एवं पूर्ण विश्वास का होना अत्यधिक आवश्यक है।

३. जिस किसी भी दिन आप इस साधना को सम्पन्न करना चाहें, उस दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अर्थात् सुबह **४ बजे से लेकर ७ बजे के मध्य** इस साधना को अवश्य प्रारम्भ कर दें।

४. स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर, धुले स्वच्छ पीले रंग के वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर बैठकर, **पूर्व दिशा** की ओर मुख कर इस साधना को सम्पन्न करें।

५. किसी साफ स्थान से मिट्टी लाकर किसी चौकी पर या जमीन
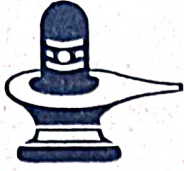
।। चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।

''मैं भगवान शिव की शरण में हूं, वे मेरे आराध्य हैं, मेरे इष्ट हैं और मुझे उनकी कृपा प्राप्त है, अतः यम भी मेरा कुछ अहित नहीं कर सकता''– ये मार्कण्डेय ऋषि स्वयं कह रहे हैं।

जहां भी शिव की साधना है, आराधना है वहां किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं है, वहां सभी प्रकार की सम्पन्नता व निर्भयता है . . . इसलिए शिव की आराधना श्रेष्ठतम है; शास्त्रों ने स्पष्ट कहा है– ''गुरु ही शिव है, शिव ही गुरु है।''

पर ही एक छोटी-सी वेदी का निर्माण करें, और उस वेदी के चारों तरफ **११ तिल के या सरसों के तेल के दीपक लगायें,** सभी दीपकों का मुख वेदी की ओर होना चाहिये। वेदी के ऊपर कुंकुम से **''ॐ नमः शिवाय''** अंकित कर, इसके ऊपर ''ब्रह्मास्त्र यंत्र'' को स्थापित करें और इस यंत्र का कुंकुम, अक्षत, धूप-दीप से पूजन कर, दूध से बने नैवेद्य को अर्पित कर अपनी मनोकामना को व्यक्त करें। आपकी मनोकामना किसी भी प्रकार की विपत्ति से छुटकारा प्राप्त करने की हो सकती है अथवा आप ऐसी भी प्रार्थना कर सकते हैं, कि ''हे भगवान् त्र्यम्बक! आप मेरे जीवन में आने वाली समस्त बाधाओं, विपत्तियों से मेरी रक्षा करें।''

६. ''सिद्धि प्रदायक माला'' का भी पुष्प, अक्षत, कुंकुम के द्वारा संक्षिप्त पूजन करें एवं उस माला को भगवान् शिव का वरदान समझकर अपने गले में धारण करते हुए मन में यह भावना रखें, कि मुझे इस साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो।

७. **गुरु-पूजन** तथा **एक माला गुरु मंत्र का जप** इस साधना को प्रारम्भ करने से पूर्व करना अनिवार्य है।

८. यंत्र पर त्राटक करते हुए १५ मिनट तक निरन्तर निम्न मंत्र का स्फुट स्वरों में उच्चारण करें। स्फुट स्वर का तात्पर्य है– मुंह से उतनी ही ध्वनि में मंत्र उच्चरित हो, जिसे कि स्वयं हम सुन सकें।

मंत्र

ॐ ह्रौं ग्लौं हुं ब्रह्मास्त्राय फट्

९. मंत्र-जप के पश्चात् आंख बंद करके अकम्पित भाव से पूर्ण ध्यानस्थ होने की प्रक्रिया करें, थोड़ी देर के पश्चात् पुनः १५ मिनट तक यंत्र पर त्राटक करते हुए उपरोक्त मंत्र का जप करें।

१०. मंत्र-जप के पश्चात् **गुरु आरती** एवं **शिव आरती** पूर्ण भक्ति-भाव से करें।

११. आरती के पश्चात् हाथ जोड़ कर विनम्र भाव से, भगवान् शिव से पुनः अपनी मनोकामना पूर्ण करने की प्रार्थना करें।

१२. आपको निश्चित रूप से एहसास होगा, कि भगवान् शिव आपके सम्मुख उपस्थित हैं तथा अपने वरदान की अमृत-वर्षा से आपको आप्लावित कर रहे हैं।

१३. साधना समाप्ति के पश्चात् यंत्र, माला तथा जिस मिट्टी से वेदी बनाई गई है, उस मिट्टी को तथा वेदी के चारों ओर प्रज्वलित दीपक (जो कि मिट्टी के हों अथवा गेहूं के आटे को गूंध कर बनाये गये हों), सभी सामग्री को किसी एक साफ वस्त्र में बांधकर रात्रि में ही नदी अथवा तालाब में प्रवाहित कर दें, यदि तुरन्त ऐसी सुविधा नहीं हो, तो जब कभी आप (१५ दिन के भीतर ही) बाहर जायें, तो उस स्थान पर प्रवाहित होने वाली किसी नदी, तालाब अथवा समुद्र में उसे विसर्जित कर दें।

१४. विसर्जित करने के पश्चात् वहां हाथ जोड़ कर मात्र ११ बार ब्रह्मास्त्र साधना के मूल मंत्र का उच्चारण कर, भगवान् शिव को मानसिक रूप से नमन कर घर वापिस लौट आयें।

१५. इस सम्पूर्ण प्रक्रिया से सम्पन्न की गई इस साधना के द्वारा, निश्चित रूप से समस्त प्रकार की भौतिक, दैहिक, राजकीय, शासकीय तथा सम्पत्ति से सम्बन्धित सभी समस्याएं समाप्त हो ही जाती हैं।

इस साधना में प्रयुक्त होने वाली सामग्री :

ब्रह्मास्त्र यंत्र - २४०/-, सिद्धि प्रदायक माला - १७५/-

घर में नई-नवेली बहू आती है, तो लगता है, जैसे पूरा घर हर्षोल्लास एवं आनन्द से मुखरित हो उठा है. . . घर-आंगन में गूंजती हुई उसकी पायल की रुनझुन. . . चूड़ियों की खनखनाहट, सभी के हृदय में एक आनन्द का संचरण कर देती है, पूरे परिवार के लोग उससे बहुत-सी उम्मीदें, कल्पनायें संजोये रहते हैं. . . और वहीं अगर उस नई-नवेली दुल्हन के हृदय को टटोल कर देखा जाय, तो उसके मन में भी यही भावना, यही कामना होती है, कि मैं अपने व्यवहार से, अपने कार्यों से सभी का मन मुग्ध कर लूं, अपने घर को एक कुशल माली की तरह ही सजा-संवार दूं।

— और इन सब भावनाओं के साथ ही साथ बहुत कुछ उसे सीखने को, समझने को मिलता है, उसे घर की परम्पराओं, रीति-रिवाजों, व्रत, उपवास एवं विभिन्न पर्वों से भी परिचित कराया

अखण्ड सौभाग्यवती पर्व

"पूर्ण सौभाग्य साधना", जिसे प्रत्येक
सौभाग्यवती स्त्री करना अपना धर्म समझती है,
और प्रत्येक पुरुष व स्त्री यह व्रत सम्पन्न कर
आधि-व्याधि, अकाल-मृत्यु सभी से छुटकारा पा लेते हैं,
प्रत्येक कुमारी कन्या के लिए योग्य वर प्राप्ति हेतु अद्वितीय प्रयोग-साधना।

जाता है, बहुत ही धूमधाम से उसके द्वारा किये गये प्रथम पूजन, प्रथम व्रत को एक उत्सव, एक पर्व के रूप में समारोह पूर्वक मनाया जाता है, ऐसा इसलिए किया जाता है, क्योंकि विवाह पूर्व तो लड़की अपने-आप में ही खोयी रहती है— अपने सपनों में, अपनी कल्पनाओं में।

ऐसी एक भी लड़की नहीं मिलेगी, जिसके मन में एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न पति को प्राप्त करने की कामना न हो या एक छोटे-से, प्यारे-से घर की कामना न हो. . . और जब उसका विवाह होता है, वह अपने ससुराल में आती है, तब उसे यह एहसास घेरने लगता है, कि अब वह समय आ गया है, जब मैं अपने सपनों को साकार रूप दे पाऊंगी. . . और जब अपने इन सपनों को साकार करने के लिये वह कार्य करना प्रारम्भ करती है, तो सहयोगी के रूप में उसका पति ही सर्वप्रथम उसे दिखाई देता है।

भारतीय नारी के मन में तथा पुरुष के मन में भी यह भावना बहुत ही गहराई के साथ बैठी हुई है, कि पति-पत्नी दो होते हुए भी एक हैं। इसी तथ्य को लेकर कहा गया है— "पति-पत्नी एक ही गाड़ी के दो पहिये होते हैं," इस प्रकार गृहस्थ रूपी गाड़ी को कुशलतापूर्वक अग्रसर करने के लिये बराबर का दायित्व दोनों के ही कन्धों पर होता है; अतः दोनों को ही अपने दायित्व को अच्छी तरह समझना चाहिये।

पति बाहर के कार्यों को अच्छी तरह सम्भालता है, समाज में अपनी तथा साथ ही अपनी पत्नी को भी सुप्रतिष्ठित करने का प्रयास करता है, और उसके हर प्रयास के पीछे निश्चित रूप से आधार होती है— 'नारी'।

नारी को शक्ति रूपा कहा गया है, और यह भी सत्य है, कि नारी जो एक बार निश्चय कर लेती है, उसे पूर्ण करके दिखा ही देती है।

सदियों पूर्व से ही नारी की इच्छा-शक्ति से यह जगत् परिचित होता आया है। नारी के अन्दर इतनी क्षमता होती है, कि वह अपने पति को यमराज से भी छीन कर वापिस ला सकती है। नारी के दृढ़ निश्चय के आगे तो काल को भी बाध्य होकर अपनी गति रोक देनी पड़ती है।

यह बात कोई कपोलकल्पित नहीं है, अपितु एक सत्य पौराणिक घटना है—

"सती शाण्डिली" अपने पति को अपने कन्धे पर उठाकर ले जा रही थी। उसके पति अत्यन्त ही घृणित रोग से ग्रस्त थे, फिर भी वह पूर्ण मनोयोग से उनकी सेवा करती। पति के द्वारा फटकारे-दुत्कारे जाने के बावजूद भी कभी भी शाण्डिली ने अपने मन में दुःख का भाव आने ही नहीं दिया था। उसके पति कौशिक ने एक रात्रि में कहा— "मुझे नगर वधू के पास ले चलो", अपने पति को कन्धे पर उठाकर शाण्डिली चल पड़ी, मार्ग में चोर के भ्रम में 'माण्डव्य' नामक ब्राह्मण को वहां के राजा ने सूली पर चढ़ा दिया था, कौशिक के पैर से छूने के कारण सूली हिल गई, दुःख से व्यथित ब्राह्मण ने श्राप दे दिया— "जिस नराधम के कारण मुझे दुःख हुआ, वह सूर्य उदय होने पर अपने प्राणों से हाथ धो बैठेगा।" इस दारुण श्राप को सुनकर शाण्डिली बोल उठी—

तस्य भार्या ततः श्रुत्वा तं शापमतिदारुणम्।
प्रोवाच व्यथिता सूर्यो नैवोदयमुपैष्यति।।

"मेरे पति की मृत्यु सूर्योदय होने पर तुम्हारे श्राप के कारण होगी, किन्तु यह एक सती का वचन है, कि अब सूर्योदय ही नहीं होगा।" सूर्योदय नहीं होने से सभी प्राणी, यहां तक कि देवता भी व्यथित हो उठे, किन्तु किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी, कि वह सती शाण्डिली के सामने जाकर यह प्रार्थना कर सके, कि वह अपने वचन को वापिस ले ले, अतः उन्होंने सती अनुसूइया से शाण्डिली के पास जाने की विनती की।

अनुसूइया ने शाण्डिली को समझाया और कहा— "विषाद न करो, तुम सूर्योदय होने की अनुमति प्रदान कर दो, मैं वचन देती हूं, कि तुम्हारे पति पूर्णतः रोगमुक्त होकर, पूर्ण तरुण बनकर वर्षों तक तुम्हारे साथ आनन्दयुक्त जीवन यापन करेंगे।"

तदुपरान्त शाण्डिली ने अपने श्राप से सूर्य को मुक्त किया, और अनुसूइया के प्रभाव से शाण्डिली के पति पूर्ण स्वस्थ हो गये।

'मार्कण्डेय पुराण' में वर्णित यह कथ्य यहां प्रस्तुत करने के पीछे एकमात्र कारण इतना ही है, कि वास्तव में नारी शक्ति स्वरूपा है। यह बात अलग है, कि **आज नारी अपने इस स्वरूप को बिसरा बैठी है, इसीलिए तो वह तमाम तरह की परेशानियों से घिरी रहती है, किन्तु ऐसा नहीं है, कि आज के युग में भी यदि कोई नारी ठान ले, तो अपने पूर्ण सौभाग्य को प्राप्त न कर सके।**

यह बात और है, किसी को मालूम नहीं है, कि किन विधियों से उस शक्ति को जाग्रत किया जा सकता है, जिसके

साधना और साधक जब ये दो उद्दाम पक्ष अभिसार कर संगम करते हैं, तो साधक के जीवन में आने वाली पर्वत के समान कठिनाइयां भी एक ओर सरक जाती हैं, और साधक के लिए पूर्ण सौभाग्य का मार्ग प्रशस्त कर देती है।

सौभाग्य के मार्ग का ही यह एक सशक्त पड़ाव है "अखण्ड सौभाग्यवती पर्व" जिस पर्व विशेष पर सम्पन्न की गयी साधना द्वारा व्यक्ति में अदम्य उत्साह से जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करने की क्षमता का संचरण होता है।

सदियों पूर्व से ही यह जगत् नारी की शक्ति से परिचित होता रहा है।

नारी के दृढ़ निश्चय के आगे तो काल को भी बाध्य होकर अपनी गति रोक देना पड़ती है . . . यदि वह चाहे तो!

इस जगत की उत्पत्ति और जगत का आधार नारी ही है। यहां तक कि भगवान शिव भी नारी शक्ति के द्वारा ही अपने-आप को पूर्ण शक्तिमान समझते हैं।

माध्यम से पूर्ण सौभाग्य प्राप्त हो सके, उसके परिवार पर से अकाल-मृत्यु की छाया का निवारण हो सके, उसका पति दीर्घायु हो, साथ ही अपनी पत्नी को, अपनी अर्धांगिनी समझते हुए पूर्ण सुख प्रदान करे।

नारी की इसी शक्ति को जगाने के लिए ही शास्त्रों में वर्णित है— **''पूर्ण सौभाग्य साधना''**, जिसे प्रत्येक सौभाग्यवती स्त्री करना अपना धर्म समझती है, और प्रत्येक पुरुष अपनी स्त्री से यह व्रत करवा कर या स्वयं इस प्रयोग को सम्पन्न करके सभी आधि-व्याधि, अकाल-मृत्यु से छुटकारा पा लेता है, साथ ही यह प्रत्येक कुमारी कन्याओं के लिए योग्य वर प्राप्ति हेतु अद्वितीय साधना है। यह साधना **''अखण्ड सौभाग्यवती पर्व''** पर सम्पन्न की जाती है।

इस दिन सभी सौभाग्यवती स्त्रियां निर्जला उपवास करती हैं, तथा परम्परागत रूप से चली आ रही विधि से ही पूरी रात धूमधाम से पूजन करती हैं।

यदि अखण्ड सौभाग्यवती पर्व के दिन परम्परागत पूजन के साथ ही सम्पूर्ण शास्त्रोक्त विधान के अनुसार वर्णित सम्पूर्ण सौभाग्य साधना भी करें, तो निश्चित रूप से उनकी मनोकामना पूर्ण होती ही है।

परम्परागत रूप से बताये गये तरीके से हमें सिर्फ इतना ही मालूम है, कि हमें चन्द्रमा का पूजन करना चाहिये; क्यों करना चाहिये, इसका ज्ञान बहुत ही कम लोगों को होगा।

चन्द्र देव महर्षि अत्रि के पुत्र हैं, और वे सर्वमय अर्थात् सोलह कलाओं से युक्त हैं। इनकी सोलह कलाओं का अनुभव तो हमें नित्य इनकी घटती-बढ़ती आकृति को देखकर ही होता रहता है। इसके साथ ही साथ ये अमृतमय पुरुष स्वरूप भगवान् हैं। चन्द्रमा के इन्हीं गुणों के कारण ब्रह्मा ने इन्हें बीज, औषधि, जल तथा ब्राह्मणों का राजा घोषित किया है। प्रजापति दक्ष ने अपनी अश्विनी, भरिणी आदि नाम वाली २७ कन्याओं का विवाह चन्द्रमा के साथ किया है, जो नक्षत्रों का बोध कराती हैं। इस तरह चन्द्रदेव अपने नक्षत्रों के साथ पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए सभी प्राणियों का पोषण करते हैं। चन्द्र देवता का वर्ण श्वेत है, इनका वाहन दस घोड़ों वाला रथ है, जो कि शंख के समान उज्ज्वल है, 'मत्स्य पुराण' में ऐसा वर्णन आता है।

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।
गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्त्तव्यो वरदः शशी।।

अर्थात् ''चन्द्र देवता गौर वर्णीय हैं, इनके वस्त्र, अश्व और रथ तीनों ही श्वेत हैं, चन्द्र देव ने एक हाथ में गदा धारण कर रखा है और दूसरे हाथ से वर प्रदान कर रहे हैं।''

चन्द्रमा का अमृतमय पुरुष स्वरूप के रूप में ही वर्णन प्राप्त होता है, इसीलिए शास्त्रों में **१३ अगस्त ९५ भाद्रपद की कृष्ण पक्ष तृतीया** को चन्द्र-पूजन का विधान रखा गया है, उस दिन चन्द्रमा की जिस कला की रश्मियां पृथ्वी को आप्लावित करती हैं, उनका यह गुण है, कि वे विशेष मंत्रों के माध्यम से साधना करने वाले साधक अथवा साधिका को पूर्ण सौभाग्य एवं पूर्ण आयु प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करती हैं, इसी तथ्य को ध्यान में रखकर अखण्ड सौभाग्यवती पर्व-पूजन का विधान निर्मित किया गया है।

पूर्वकाल में यह पूजन पुरुष एवं स्त्री अर्थात् पति-पत्नी दोनों ही सम्मिलित रूप से करते थे। यह कहने की आवश्यकता नहीं रही, कि ये दोनों मिलकर ही एक हैं। समय के प्रवाह में बहुत-सी परम्पराएं लुप्त होती गईं, आधुनिकता के प्रवाह के कारण पुरुषों को व्रत, उपवास रखने में बहुत ही हीन भावना महसूस होने लगी, इसीलिए धीरे- धीरे वे अपने दायित्व से दूर होते चले गये, किन्तु ऐसा करके उन्होंने कोई उत्तम कार्य नहीं किया है। यह बात तो सर्वविदित है, कि कोई भी यज्ञ, पूजा आदि पति-पत्नी दोनों को एक साथ मिलकर ही करनी चाहिये, इसीलिए अखण्ड सौभाग्यवती पर्व की सम्पूर्ण सौभाग्य साधना भी पति-पत्नी दोनों को ही मिलकर करनी चाहिये।

साधना विधान

१. इस साधना को सम्पन्न करने के लिए **अमृतोपम चन्द्रेश यंत्र, शशांक माला, सोलह उदधि प्रिया लघु शंखों** की आवश्यकता पड़ती है।
२. इस सौभाग्य प्रदायक साधना को **१३ अगस्त ९५ भाद्रपद कृष्ण पक्ष तृतीया** के दिन सम्पन्न करना चाहिए, और यदि उस दिवस विशेष पर सम्पन्न नहीं कर सकें, तो किसी भी मास में पड़ने वाली **कृष्ण पक्ष की तृतीया** अथवा **चतुर्थी**

को यह साधना सम्पन्न करनी चाहिये।

३. यह साधना रात्रि को **८ से १० बजे के मध्य** कभी भी प्रारम्भ कर सकते हैं।

४. यह साधना **पूर्व दिशा** की ओर मुख़ करके करनी चाहिये।

५. साधना प्रारम्भ करने से पूर्व स्नान करने वाले जल में **आठ-दस दाने सरसों** के तथा **दस चम्मच दूध** डालते हुए दस बार—''**ॐ सोमाय नमः वरदाय नमः**'' मंत्र का उच्चारण करना चाहिये, फिर इस जल से स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर लें।

६. साधना कक्ष में श्वेत आसन पर बैठ जायें तथा अपने सामने बाजोट पर भी श्वेत वस्त्र बिछाकर, अक्षत से उसी वस्त्र के ऊपर ही अर्द्धचन्द्र की आकृति निर्मित कर ''अमृतोपम चन्द्रेश यंत्र'' को स्थापित करें।

७. यंत्र की दाहिनी ओर ''शशांक माला'' तथा बाईं ओर सभी उदधि प्रिया लघु शंख स्थापित करें।

८. इन सभी सामग्रियों का, श्वेत पुष्प या जो भी सुगन्धित पुष्प उपलब्ध हो (वैसे चन्द्रमा को कदम्ब, कमल, केवड़ा, चम्पा तथा चमेली के पुष्प चढ़ाने का विधान है) के द्वारा पूजन करें।

९. तत्पश्चात् सोलह उदधि प्रिया लघु शंखों को अपने बाएं हाथ में ले लें, और दाहिने हाथ में एक-एक शंख लेते हुए, एक-एक मंत्र का क्रमशः उच्चारण करते हुए शंख को यंत्र पर अर्पित करें—

१. सोमाय शान्ताय नमः।
२. अनन्त धान्याय नमः।
३. कामसुख प्रदाय नमः।
४. अमृतोपमाय नमः।
५. शशांकाय नमः।
६. चन्द्राय नमः।
७. द्विजेश्वराय नमः।
८. कौमोदवनप्रियाय नमः।
९. आनन्द बीजाय नमः।
१०. वनौषधिनामधिनाथाय नमः।
११. इन्दीवरव्यासकराय नमः।
१२. उदधिप्रियाय नमः।
१३. सुषुम्नाधिपतये नमः।
१४. विश्वेश्वराय नमः।
१५. जलोदराय नमः।
१६. लक्ष्मी सौभाग्य सौख्यामृत सागराय पद्मश्रिये नमः।

१०. इस प्रकार पूजन करने के पश्चात् ''शशांक माला'' से निम्न मंत्र का **१६ माला जप** करें।

बीज, औषधि, जल तथा ब्राह्मणों के अधिपति ''चन्द्रदेव'' षोडशकला पूर्ण अमृतमय पुरुष भगवान् हैं। पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए ये धरा पर अमृत वर्षा कर अपनी आराधना करने वाले को अखण्ड सौभाग्य प्रदान कर देते हैं।

मंत्र

ॐ श्रीं सौभाग्य सिद्धि देहि देहि नमः।

११. इस प्रकार मंत्र-जप पूर्ण करने के पश्चात् एक तांबे के बर्तन में जल, घी, अक्षत, कपूर, श्वेत चंदन तथा श्वेत पुष्प डाल कर चन्द्रमा को पति-पत्नी दोनों मिलकर अर्घ्य प्रदान करें, तथा वहां खड़े-खड़े हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें— "हे चन्द्र देव! आप ही सबको परम आनन्द और मुक्ति प्रदान करने वाले हैं। आपकी कृपा से हमें भी सम्पूर्ण सौभाग्य, दीर्घायु, सम्पन्नता एवं पूर्ण दाम्पत्य सुख प्राप्त हो।"

१२. इस प्रकार पूर्ण पूजन करने के पश्चात् बाजोट पर बिछे श्वेत वस्त्र में ही यंत्र, माला तथा सभी लघु शंखों को लपेट कर पोटली बना लें एवं उसी रात्रि को अथवा अगले दिन ही नदी में उन्हें विसर्जित कर दें।

१३. चन्द्र-पूजन पूर्ण होने के पश्चात् पूरे परिवार के साथ बैठकर आनन्द पूर्वक भोजन ग्रहण करें।

१४. मूल मंत्र का जप यदि पति-पत्नी दोनों मिलकर करते हैं, तो ८ माला पति को और ८ माला पत्नी को मंत्र-जप करना है, किसी प्रकार की यदि कोई असुविधा हो, तो पति या पत्नी दोनों में से कोई एक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

१५. यह तो बताने की आवश्यकता ही नहीं रही, कि प्रत्येक साधना या पूजन प्रारम्भ करने से पूर्व गुरु-पूजन तथा गुरु मंत्र की एक माला जप करना आवश्यक है, अनुष्ठान पूर्ण होने के पश्चात् गुरु चित्र के सम्मुख भक्ति-भाव से नमन कर **गुरु आरती** सम्पन्न करना तो प्रत्येक साधक का कर्त्तव्य है ही।

साधना में प्रयोग होने वाली आवश्यक सामग्री

अमृतोपम चन्द्रेश यंत्र - २४०/-, शशांक माला - १५०/-

सोलह उदधि प्रिया लघु शंख - ६०/-

दीक्षा– एक वरदान है मानव को. . . और किसी अद्वितीय व्यक्तित्व अथवा सद्गुरु में ही इतनी क्षमता होती है, जो सहजता से इसे प्रदान कर सकते हैं। एक भाग्यशाली व्यक्ति ही श्रेष्ठ गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त कर सुख-सौभाग्य प्राप्त कर सकता है।

समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति का आधार मात्र दीक्षा ही है, जो आज के युग में शीघ्र प्रभावकारी एवं शीघ्र फलदायी है. . . और जब तक कामना पूर्ति नहीं है, तब तक जीवन अधूरा ही है।

प्रत्येक मनुष्य का यह स्वप्न होता है, कि वह अल्प समय में ही धनवान बन जाय, कम परिश्रम में ही उसे अधिक लाभ प्राप्त हो जाय, उसका परिवार समस्त प्रकार की

पाप-ताप संहारिणी
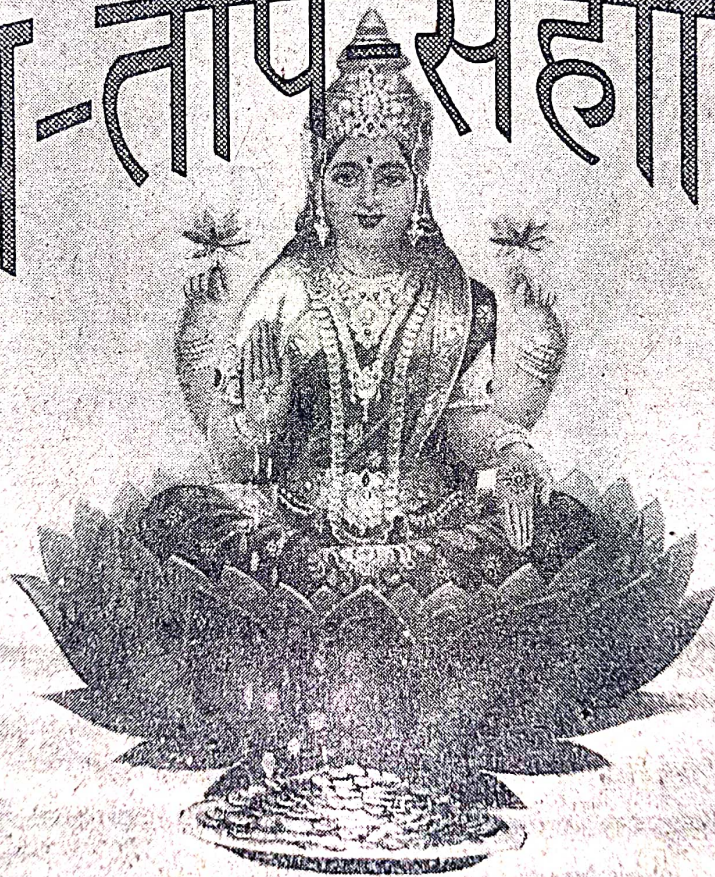
(सहस्त्राक्षी महालक्ष्मी दीक्षा)

सुख-सुविधाओं का भोग कर सके, एक मधुरता का वातावरण बन सके. . . और धन प्राप्त करना, ऐश्वर्य, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करना अपने-आप में कोई तुच्छता नहीं है, और ऐसा सोचना अनुचित भी नहीं है, क्योंकि वह चाहता है, कि मैं अल्प समय में ही सब कुछ प्राप्त कर लूं।

जीवन में भौतिक अभावों के कारण ही आज समाज में परिपूर्णता दृष्टिगोचर नहीं होती, और शास्त्रों में वर्णित– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों में से भी आज अर्थ को ही सर्वप्रथम महत्त्व दिया जाने लगा है, हर कोई इसे ही प्राप्त करना चाहता है, क्योंकि वह धनपति बनना चाहता है, और इसके लिए वह जी तोड़ परिश्रम करता है, इधर-उधर भागता फिरता है, परन्तु उसका परिश्रम सार्थक नहीं हो पाता, इसके लिए वह विभिन्न उपाय टोने- टोटके, मन्दिर, गिरिजाघर, गुरुद्वारे आदि में जाकर मन्नतें मांगता है, ईश्वर से प्रार्थना करता है, तथा पूजा-आराधना आदि भी सम्पन्न करता है, किन्तु फिर भी उसे सफलता नहीं मिल पाती।

अध्यात्म की ओर यदि दृष्टि डालें, तो ज्ञात होता है, कि ८० प्रतिशत व्यक्ति ऐसे हैं, जो लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाएं ही करना ज्यादा पसंद करते हैं, जिससे कि वे अपने जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य, समृद्धि, यश, मान, श्री, वैभव आदि से परिपूर्ण हो इस भौतिक जगत् में अपने गृहस्थ जीवन को पूर्णता के साथ संचालित कर सकें।

卐
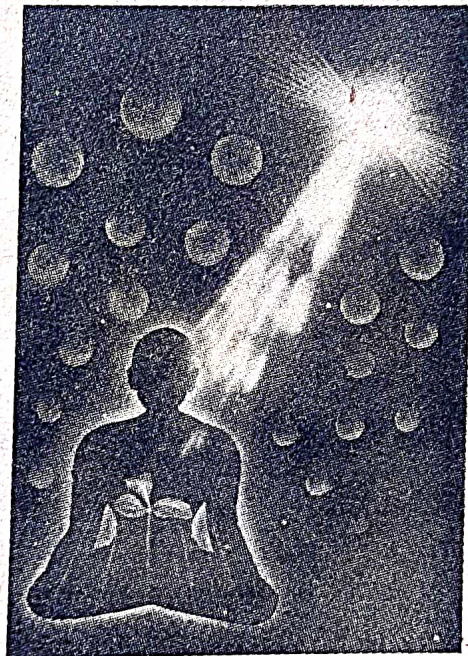
गुरु, शिष्य के विकारों को दूर करने वाला चिकित्सक है। शरीर में चुभे हुए कांटों को तो कोई भी निकाल देगा, किन्तु जीवन में चुभे हुए दरिद्रता रूपी कांटे को तो गुरु रूपी चिकित्सक ही सहस्राक्षी महालक्ष्मी दीक्षा द्वारा निकाल सकते हैं।

किन्तु जब आप हर उपाय करके थक जायें, जब आपको लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों की साधना करने पर भी सफलता नहीं मिल रही हो, और आपके प्रयास बार-बार विफल हो रहे हों, तो आपको चाहिये, कि आप अल्प समय में ऐसी कोई युक्ति अपनायें, जिससे आप अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकें।

और आज के युग में दीक्षा ही एक मात्र ऐसा संसाधन है, जो मानव-जीवन के लिए उपयोगी है। आज के इस अर्थवादी युग में, जो धनवान हैं, वही पूजनीय हैं, वही सम्माननीय हैं, और जो निर्धन हैं, गरीब हैं, उनका समाज में कोई विशेष स्थान नहीं है, ऐसे में धन के अभाव के कारण व्यक्ति को बहुत सी परेशानियों, समस्याओं, संकटों का सामना प्रतिपल करना पड़ता है, जिसके कारण वह हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है, और उसके मन में इस भावना का उदय होना ही, उसका मृत्यु की ओर गतिशील होना है. . . और तभी आज ७५ प्रतिशत व्यक्ति ऐसे हैं, जो धनाभाव के कारण मृत्यु का शिकार हो जाते हैं. . . क्योंकि उन्हें ऐसा कोई योग्य गुरु मिला ही नहीं, जो उन्हें उनके संकटों से उबार सके, और न ही आजकल ऐसे गुरु सहज सुलभ रह गये हैं, जो इस योग्य हों।

. . .और ऐसे में एक सामर्थ्यवान गुरु ही व्यक्ति को पूर्णता की ओर गतिशील

कर सकते हैं, अन्य नहीं। निर्धनता, बेरोजगारी तथा अन्य दुःख-ताप आदि उसके पूर्व जन्मकृत दोषों व पाप कर्मों का ही फल हैं, किन्तु **''सहस्राक्षी महालक्ष्मी दीक्षा''** को प्राप्त कर, इन समस्याओं से मुक्त हुआ जा सकता है।

''सहस्राक्षी दीक्षा''— मस्तक पर पड़ी दुर्भाग्य की लकीरों को मिटा देने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है, जिसे प्राप्त कर रंक भी राजा की उपाधि प्राप्त कर सकता है। इस महत्त्वपूर्ण दीक्षा को प्राप्त करने के पश्चात् लक्ष्मी का आगमन स्थायी रूप से उस साधक, शिष्य, अथवा व्यक्ति के घर में होता ही है, उस दीक्षा के प्रभाव से शीघ्र ही धनागम के स्रोत स्वतः ही खुलने लग जाते हैं, व्यापार में वृद्धि होने लगती है, साथ ही आकस्मिक रूप से भी धन की प्राप्ति होने लगती है।

✿✿✿

संसार में जो भी सम्पन्नता है, सभी बाह्य रूप से अर्जित की हुई होती है, इसीलिए उनसे मिलने वाली सफलता संदिग्ध होती है, किन्तु सहस्राक्षी लक्ष्मी दीक्षा द्वारा व्यक्ति के अन्दर निहित त्रिशक्ति क्रिया, ध्यान और इच्छा जाग्रत हो जाती है और उसे स्वयं ही लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होने लगती है।

✿✿✿

सहस्राक्षी महालक्ष्मी, साधक व शिष्य के जीवन के समस्त पूर्व जन्मकृत पाप-दोषों का नाश करने वाली देवी हैं, इन्हें पाप-ताप संहारिणी भी कहा जाता है— जो समस्त पाप-दोषों का निवारण कर व्यक्ति के भाग्य को ही परिवर्तित कर देती हैं, फिर उसे जीवन में अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता, क्योंकि ये उसे वैभव, समृद्धि, सम्पन्नता, ऐश्वर्य सभी कुछ तो प्रदान करने में समर्थ हैं।

धन-सम्पदा और वैभव-विलास की अधिष्ठात्री देवी सहस्राक्षी महालक्ष्मी हैं. . . इसीलिए जीवन में पूर्णता प्राप्ति हेतु इस दीक्षा का सर्वोपरि स्थान है, अतः शास्त्रों आदि में इसका विशेष महत्त्व स्वीकार किया जाता है।

सहस्राक्षी दीक्षा : ३०००/-

गुरुदेव के नाम से लोगों को गुमराह करने वाले

देहरादून
मई 26, 1995

परमपूज्य गुरुदेव
सादर दण्डवत प्रणाम, पूज्य गुरुदेव जी
देहरादून में एक व्यक्ति जो अपना नाम एस. के. चौहान बताता है और आजकल गांधी ग्राम नई बस्ती, देहरादून में किराये के मकान में रह रहा है तथा अपने को डा. नारायणदत्त श्रीमाली जी का शिष्य बताते हुए सिद्धाश्रम का योगी बताता है एवं गरीबों और [illegible] [illegible] करते हुए लोगों को दीक्षायें प्रदान कर रुपये [illegible] तरीके से [illegible] कर रहा है साथ ही जो लोग उसका कहना नहीं मानते उनसे दुर्व्यवहार एवं अनैतिक कार्य भी कर रहा है,
मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि क्या वास्तव में आपने उक्त व्यक्ति को दीक्षा का अधिकार दे रखा है। मैं उक्त व्यक्ति की फोटो जो कि दीक्षा प्रदान कर रहा है आपकी सेवामें संलग्न कर प्रेषित कर रहा हूँ इस सम्बन्ध में [illegible] कार्यालय से आवश्यक दिशा निर्देश आवश्यक कार्यवाही हेतु भेजने की कृपा करेंगे,

धन्यवाद आज्ञाकारी
शिष्य
(अनिल कुमार [illegible])
[illegible] अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम
साधक परिवार देहरादून
2, [illegible] रोड,

इस सम्बन्ध में हम क्या कहें, पत्र स्वयं सारी बातें स्पष्ट कर रहा है, जहां तक पूज्य गुरुदेव से सम्बन्धित तथ्य है, ''परम पूज्य गुरुदेव'' ने न तो किसी प्रकार का कोई प्रतिनिधि तैयार किया है, और न ही किसी को कोई प्रकट-अप्रकट आदेश ही दिया है, यह सारा कार्य हम से छिप कर किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में हमें किसी प्रकार की कोई जानकारी पत्र मिलने तक भी नहीं थी।

आप सभी शिष्यों से अनुरोध किया जाता है, कि आप न तो इस प्रकार के गलत कार्य होने दें, और न सहन करें। अगले अंक में कुछ साधकों के विशिष्ट पत्र, जो हमारे पास इस व्यक्ति से सम्बन्धित प्राप्त हुए हैं, पाठकों की जानकारी हेतु प्रकाशित किये जायेंगे।

— उप सम्पादक

विशेष
तंत्र रक्षा कवच
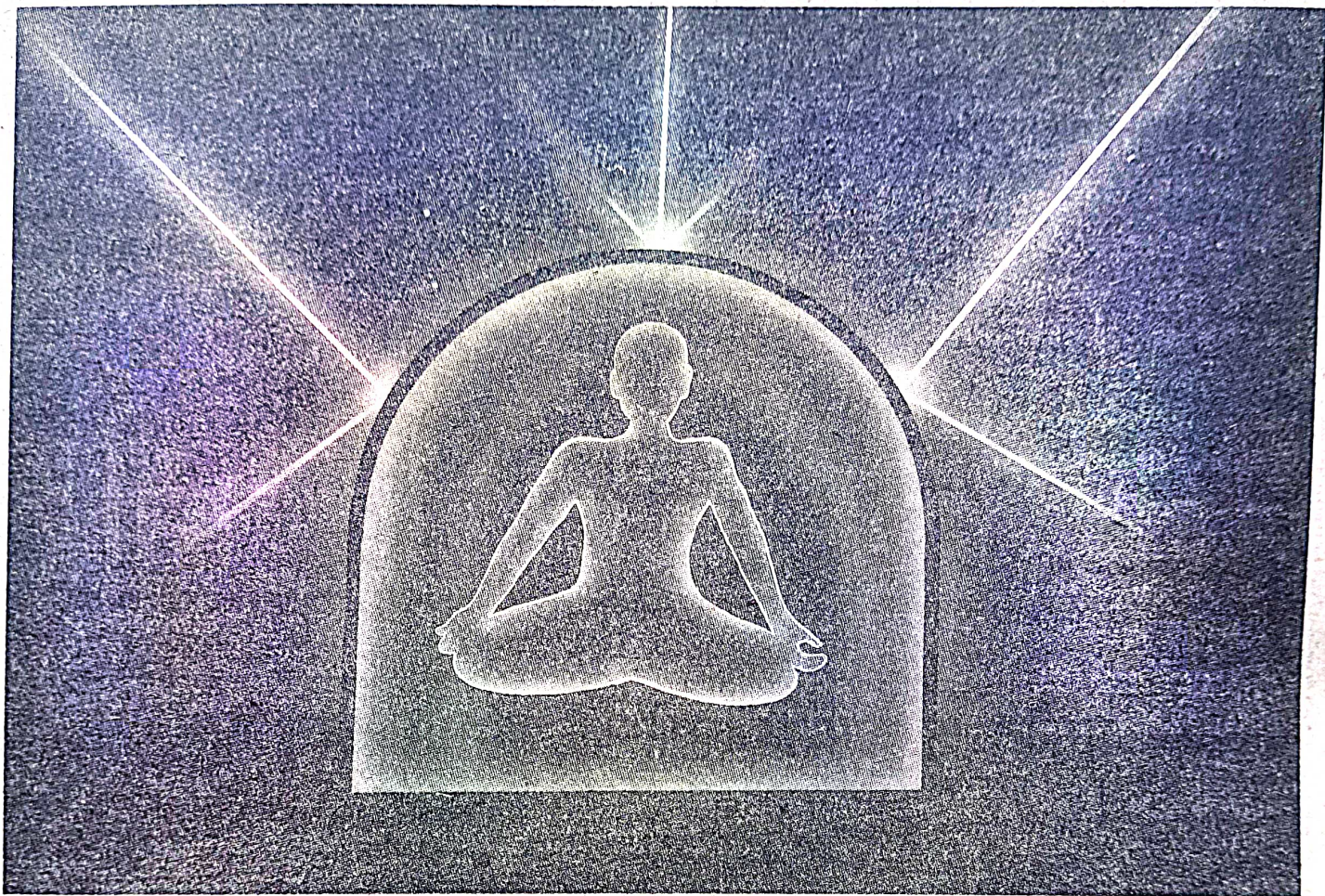
जब जीवन में विष घुल जाता है और समस्याओं के हल सही नहीं सूझते. . .यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाए

- ❋ कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
- ❋ शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
- ❋ पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
- ❋ विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाए
- ❋ घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
- ❋ ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
- ❋ निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता चला जाना
- ❋ बार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों

या फिर झगड़े- झंझटों में बार- बार फंस जाना, मुकदमेबाजी, जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।**

संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

(न्यौछावर - ११०००/- मात्र) **जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।**

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन:०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोन:०११-७१८२२४८, फेक्स:०११-७१९६७००

पूर्ण नारीत्व प्रयोग

बांझपन एक अभिशाप है, नारी की न्यूनता है, अगर साधना में इसका कोई हल, कोई उपाय है, तो यह लेख इसके लिए सम्पूर्ण चेतनायुक्त है, यदि पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ किया जाय . . .

एक नूतन . . . मौलिक और गोपनीय प्रयोग

कुपुत्र को रास्ते पर लाने के लिए, पुत्री को सन्मार्ग दिखाने के लिए, बांझपन मिटाने के लिए तथा पूर्ण मातृत्व के लिए आश्चर्यजनक प्रयोग

इस समाज में अधिकांश व्यक्ति पुत्र की ही मनोकामना करते हैं, और उसके होने पर जोरदार पार्टी देते हैं, खुशियां मनाते हैं, फिर भले ही चाहे वह पुत्र कुमार्गी क्यों न हो, सभी को प्यारा होता है, क्योंकि वह पुत्र उनके वंश को चलायमान रखता है, इसीलिए आज ९८ प्रतिशत व्यक्ति ऐसे हैं, जो अपने कुल की मर्यादा को, अपने वंश को पीढ़ी दर पीढ़ी बनाये रखने के लिए सुपुत्र की ही कामना करते हैं. . . और यह सम्भव भी केवल पुत्र के द्वारा ही होता है।

आज कम-से-कम ७० प्रतिशत स्त्रियां ऐसी होंगी, जो बांझ हों या जिनके गर्भ नहीं ठहरता हो अथवा बार-बार सन्तान उत्पन्न होने की स्थिति बनती हो, और सन्तान पैदा होते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती हों, अधिकांश जनसंख्या इस दुःख से पीड़ित रहती है। हर माता-पिता की यह आंतरिक इच्छा होती है, कि उनके एक न एक पुत्र अवश्य उत्पन्न हो, जो उनके बुढ़ापे का सहारा बन सके, जो उनकी सेवा कर सके और उनके वंश को आगे बढ़ा सके, उन्हें अंतिम समय में कंधा दे सके, इसीलिए लोग मंदिरों, मस्जिदों और गिरिजाघरों में पुत्र की कामना हेतु जाकर प्रार्थना करते हैं, मन्नते मांगते हैं, और पुत्र प्राप्ति के लिए तो, जाने वे क्या-क्या कर बैठते हैं, क्योंकि बिना पुत्र-प्राप्ति के वे अपना जीवन निरर्थक समझने लगते हैं।

ऐसे माता-पिता सैकड़ों प्रकार के इलाज भी करवा डालते हैं, हजारों रुपये

भी खर्च कर देते हैं, परन्तु फिर भी उन्हें पुत्र की प्राप्ति नहीं होती। वे उसके लिए अंतिम सांस तक कामना करते हैं, और हर तरह का उपाय करने के बाद भी अपने जीवन के इस अभाव को समाप्त न कर पाने के कारण, वे अपने-आप को बहुत ही हीन समझने लगते हैं, असमर्थ समझने लगते हैं, और तनाव ग्रस्त होने के कारण शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त भी हो जाते हैं।

सन्तान के बिना पति-पत्नी का जीवन अधूरा होता है, निरर्थक होता है, अपूर्ण होता है। सन्तान का दुःख उनके जीवन का सबसे बड़ा दुःख होता है, किन्तु जिन्हें ईश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास है, जो उसके प्रति पूर्ण आस्था रखते हैं, उनके लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं होता, क्योंकि आज अध्यात्म ने ऐसे मंत्र ढूंढ निकाले हैं, जिनसे कोई भी कार्य करना असम्भव नहीं है, आवश्यकता है उस मंत्र-शक्ति के प्रति पूर्ण श्रद्धा की।

पुत्र का उत्पन्न न होना या गर्भ का न ठहरना जैसी बाधाएं, जब बड़े-बड़े उपाय कर देने पर भी दूर नहीं होतीं, तो व्यक्ति उसे अपनी न्यूनता समझने लगता है, जबकि कारण यह न होकर कुछ और ही होता है, जिसे वह स्वयं भी समझ नहीं पाता।

प्रत्येक पति-पत्नी यही चाहते हैं, कि उन्हें सुयोग्य पुत्र की प्राप्ति हो, जो उनके जीवन का सहारा बने, किन्तु ऐसा अधिकांशतः सम्भव नहीं हो पाता, पर आध्यात्मिक दृष्टि से यह मनुष्य के पूर्व जन्मकृत दोष होते हैं, जो उन्हें इस जीवन में भोगने ही पड़ते हैं, उनके द्वारा पूर्वजन्म में किये गये पाप ही इस जीवन में दुःख का कारण बनते हैं, जिसका उस मानव को ज्ञान नहीं होता, ये पाप-दोष ही आड़े आकर उसके सुखी जीवन में दुःख का जहर घोल देते हैं, जिसको प्रत्येक व्यक्ति को भोगना ही पड़ता है।

मान लो पुत्र उत्पन्न हो भी, किन्तु अगर वह कुबुद्धि, कुमार्गी, कुपुत्र हो, तो ऐसे पुत्र से तो पुत्र का न होना ही ज्यादा अच्छा होता है। पुत्र यदि हो तो ऐसा, जो सहारा बन सके, कुछ करके दिखा सके समाज को, माता-पिता के प्रति जिसकी आस्था हो, सुपुत्र हो, सुयोग्य हो, और हर मां ऐसे ही पुत्र की आशा मन में संजोये एक-एक दिन गिनती रहती है, पुत्र के दुःखी होने पर, वह उसके लिए अपनी जान तक भी दे देने के लिए तत्पर रहती है, और वह हमेशा यही दुआ करती है, कि मेरा पुत्र सुन्दर, बलिष्ठ, तेजस्वी, पराक्रमी हो और हर क्षण उन्नति के मार्ग पर पूर्ण सफलता से अग्रसर हो सके।

माता-पिता का सम्पूर्ण जीवन ही पुत्र के हितार्थ व्यतीत होता है, फिर उनके जीवन में पुत्र की उन्नति के अतिरिक्त अन्य कोई कामना शेष नहीं रह जाती, वे जो भी कामना करते हैं, अपने पुत्र के लिए ही करते हैं अपने लिए नहीं, क्योंकि पुत्र माता-पिता के शरीर का ही एक भाग होता है, और उसी के सुखमय जीवन को बनाने के लिए वे अपने ऊपर सौ तकलीफें, कष्ट भी झेल सकते हैं, ऐसा होता है उनका शिशु के प्रति ममत्व, जिसके स्वास्थ्य और उन्नति के लिए वे कुछ भी कर सकते हैं।

किन्तु **सुन्दर, स्वस्थ, सुयोग्य पुत्र की प्राप्ति तभी सम्भव हो सकती है, जब पूर्व जन्मकृत पाप-दोषों का निवारण किया जाय, जिससे कि वे उन्नति के मार्ग में बाधाएं न उत्पन्न कर सकें,** क्योंकि पुत्र उत्पन्न न होने का सबसे बड़ा कारण यही है, और इसी से लोग अपरिचित रहते हैं, हर व्यक्ति को चाहिए कि वह मंत्र प्रयोग द्वारा इस समस्या का शीघ्र से शीघ्र समाधान करे।

पूर्ण नारीत्व प्रयोग अपने- आप में एक विशिष्ट साधना है, पूर्व जन्मकृत पाप नाश हेतु एवं तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति हेतु। शिव और शक्ति के सायुज्य से ही पूर्ण नारीत्व और पूर्ण पुरुषत्व की प्राप्ति होती

यह कलंक आमतौर पर स्त्रियों के ऊपर ही थोपा जाता रहा है, जबकि इसमें पुरुष भी बराबर के भागीदार होते हैं . . . कैसा भी बांझपन हो या सिर्फ लड़कियां ही लड़कियां पैदा हो रही हों, अथवा पुत्र कुमार्गी हो . . . कुपुत्र हो, जो सुखी जीवन में दुःख का जहर घोल देते हैं. . . किन्तु यदि जीवन में शिव-शक्ति का सायुज्य प्राप्त हो जाय . . . तो सम्भव को भी असम्भव किया जा सकता है, इस श्रेष्ठतम क्रिया के माध्यम से।

है, और इन दोनों शक्तियों शिव-शक्ति अथवा गौरी और शंकर का एक साथ समावेश होने के कारण **मानव-जीवन के समस्त पाप-दोष समाप्त हो जाते हैं, फिर उसे पुत्र की प्राप्ति हो जाती है। पुत्र भी ऐसा, जो अपने-आप में तेजस्वी हो, पराक्रमी हो, स्वस्थ हो, उन्नति के मार्ग पर बढ़ने वाला हो और बुद्धिमान हो।**

इस प्रयोग को बहुत से व्यक्तियों ने सम्पन्न कर इससे लाभ भी प्राप्त किये हैं, और तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति की है तथा अपने पूर्व जन्मकृत दोषों को समाप्त भी किया है। प्रत्येक व्यक्ति इस प्रयोग को सम्पन्न कर, ऐसे तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति कर सकता है, जिस पुत्र की प्राप्ति का स्वप्न वह अपने मन में संजोये रहता है।

और इस प्रयोग से केवल पुत्र का जन्म ही नहीं, अपितु कुपुत्र को भी सही मार्ग पर लाया जा सकता है, उसकी बुरी आदतों को छुड़ाया जा सकता है, उसे स्वस्थ किया जा सकता है, उसके कदम-कदम पर आड़े आने वाली बाधाओं और रुकावटों को दूर कर, उसे उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त किया जा सकता है, और यह सम्भव है इस महत्त्वपूर्ण प्रयोग द्वारा।

माता-पिता तथा पुत्र द्वारा किये गये पिछले जीवन के कुकर्मों का फल ही वे इस जीवन में भोगते हैं, किन्तु इस प्रयोग द्वारा उन्हें आसानी से मंत्र-जप कर उन सब कुकर्मों से छुटकारा मिल जाता है, और वे माता-पिता एक तेजस्वी पुत्र को प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं।

''शिव और शक्ति ही उत्पन्न करने वाले भी हैं और समाप्त करने वाले भी।'' अतः साधक शिव-शक्ति सायुज्य स्वरूप की साधना पूर्ण विधिवत् प्रयोग द्वारा सम्पन्न कर ले, तो उनकी विशिष्ट ऊर्जाशक्ति द्वारा साधक के समस्त दोषों की समाप्ति हो जाती है, और वे उसे तेजस्वी पुत्र प्रदान करते हैं. . . तब हर माता के हृदय की वेदना हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है।

सन्तान के विना
पति-पत्नी का जीवन
अधूरा होता है,
निरर्थक होता है,
अपूर्ण होता है. . .
सन्तान का दुःख
उसके जीवन का सबसे
बड़ा दुःख होता है. . .

किन्तु जिन्हें
ईश्वर के प्रति विश्वास
होता है, जो उसके
प्रति पूर्ण आस्था
रखते हैं, उनके लिये
कोई भी कार्य असम्भव
नहीं होता. . .

आवश्यकता है
मात्र उस
मंत्र-शक्ति के
प्रति पूर्ण श्रद्धा
भावना की . . .

सामग्री : **गौरी-शंकर यंत्र, पुत्र कामेष्टि माला।**

दिन : **६ सितम्बर द्वादशी या किसी भी सोमवार के दिन।**

दिशा : **इसमें दिशा विशेष का कोई महत्त्व नहीं है।**

समय : **ब्रह्म मुहूर्त में ४ बजे से ७ बजे के मध्य।**

प्रयोग विधि –

प्रातःकाल दैनिक कृत्य से निवृत्त होकर नित्य की तरह ही दैनिक साधना सम्पन्न करें। साधक पीले रंग के वस्त्र ही धारण करें, गुरु नामी दुपट्टा ओढ़ें तथा पीले रंग के आसन का ही प्रयोग करें। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व ही वटवृक्ष के सात पत्ते ले आएं। किसी बड़ी थाली में कुंकुम से एक वृत्त बना कर उसके चारों ओर इन पत्तों को रखें। वृत्त में 'गौरी-शंकर यन्त्र' स्थापित कर संक्षिप्त पूजन करें। फिर सभी पत्तों पर एक-एक दीपक (सात दीपक पहले से ही तैयार रखें, ये दीपक, मिट्टी या आटे के बने हों) रख कर प्रज्वलित कर दें। तदुपरान्त 'पुत्र कामेष्टि माला' से निम्न मंत्र का सात माला जप करें –

मंत्र

ॐ ह्रीं पूर्ण मनोकामना सिद्धये ह्रीं फट्

मंत्र-जप पूर्ण होने के बाद सातों दीपक, पत्ते, यंत्र व माला को किसी मिट्टी के पात्र में रख कर बन्द कर दें और नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। इस प्रकार सम्पन्न यह लघु प्रयोग निश्चित सफलता प्रदान करता है।

साधना में प्रयुक्त होने वाली सामग्री :
गौरी-शंकर यंत्र - २४०/-
पुत्र कामेष्टि माला - २१०/-

● विद्यापति सहाय

"

सद्गुरु तो शिष्य के अन्तरघट में सदैव ही व्याप्त रहते हैं, क्योंकि गुरु-शिष्य का प्रेम सम्बन्ध नूतन और क्षणिक नहीं होता है, अपितु युग-युगान्तर का सम्बन्ध होता है . . .

एक ऐसा सम्बन्ध जो इस धरा पर जीवन के प्रारम्भ से ही बना हुआ हुआ है . . . यह अलग बात है कि गुरु रूपी हिमालय की गोद में किलोल करने वाली बूंद खेल-खेल में अत्यधिक दूर चली आयी. . . और जब उस बूंद को इस बात का एहसास हुआ तो . . .

बहुत वेचैन हो उठी . . . क्योंकि उसे एक लम्बी यात्रा करनी होगी . . . समुद्र के अंक में सिमटने . . . और बादल वन कर पुनः उत्तुंग हिम शिखरों से टकरा कर अपने उद्गमदाता के गोद में खेलने के लिए . . .

"

शिष्य की यात्रा एक अविराम यात्रा होती है, और इस यात्रा की नूतनता इस बात में निहित है, कि शिष्य को प्रत्येक पड़ाव पर गुरुदेव का एक सर्वथा नवीन रूप ही देखने को मिलता रहता है . . . और वह विस्मित, विमुग्ध सा चलता जाता है . . . हिम शिखरों की उत्तुंग यात्राओं को करने के लिए अनेक प्रकार की घाटियों, झरनों, वृक्षों का साहचर्य ग्रहण करना पड़ता है; किन्तु जब हम ठेठ ऊंचाई तक चले जाते हैं, तो ऐसे अनेक हृदय परिदृश्य क्रमशः लुप्त होने लगते हैं और शनैः शनैः हिममंडित शिखरों की एक अनोखी पावनता और शीतलता आकर हमारे तन-मन से लिपट जाती है। तब विविधता नहीं एक शुभ्रता ही हमारे ध्यान का साक्षीभूत शेष रह जाती है . . . सद्गुरु शुभ्रता और शीतलता का ही साक्षात् स्वरूप होते हैं।

इसी कारणवश चाहे जितनी भी गुरु पूर्णिमाएं घटित हो चुकी हों, प्रत्येक गुरु पूर्णिमा एक नया पड़ाव और नया आयाम लेकर ही शिष्य के जीवन में आती है; यदि

चैतन्यता के साथ जीवन को निहारने की थोड़ी-सी भी चेतना, जीवन के द्वन्द्वों में लुप्त न हो गयी हो तो।

— यह तो एक प्रकार का प्रकाशोत्सव है।

— इसी को संत जन की भाषा में "निर्झर का साक्षी" होना कहा गया है।

— क्योंकि गुरु अपने सम्पूर्ण दिव्य स्वरूप में, अपनी मूल चेतना में दिव्य और निर्मल प्रकाश पुञ्ज की आभा ही हैं. . . और उनके लौकिक अवतरण में इसी आभा का साहचर्य एवं प्रमाण उनकी करुणा और ईश्वरीय प्रेम के रूप में आभासित होता है।

— यह चिर स्थायी पर्व है। केवल गुरु का बाह्य स्वरूप बदलता है। वे काल की सीमाओं का पालन करते हुए दैहिक आवरण ही बदलते हैं, अपना मूल स्वरूप नहीं। इसी अर्थ में यह दिवस शिष्य को सही अर्थों में गुरु की मूल चेतना से परिचित होने का अवसर होता है।

जब यह परिचय हो जाता है, तो उसे दृढ़ता और स्थायित्व देने की क्रिया सम्पन्न की जाती है. . . और अन्ततोगत्वा शिष्य गुरुत्व के दिव्य प्रकाश का केवल साक्षी ही नहीं रह जाता, स्वयं भी उसमें ओत-प्रोत होकर उसका अंग बनने की प्रक्रिया में आ जाता है।

यह सम्पूर्ण यात्रा शीतलतादायक है, आत्मतृप्ति की ओर ले जाने वाली है. . . और यही कारण है, कि गुरु पूर्णिमा पर्व का सम्बन्ध पूरे वर्ष में उस दिवस विशेष से है, जब प्रकृति एक प्रकार के 'सम' की अवस्था में रहती है– न अधिक शीत, न अधिक ऊष्ण। गुरुत्व एक प्रकार का संतुलन ही तो है।

स्वयं को नित्य प्रकाश स्वरूप जान लेना . . . जानने के उपरांत मान भी लेना . . . और मानने के उपरांत उसमें नित्यलीन हो जाना ही जीवन की पूर्णता है; ऐसी पूर्णता के उपरांत ही पहली बार मन में 'प्रेम' शब्द की सही भावभूमि समझ में आती है। जब गुरु रूपी मेघ मन के तपते आकाश पर आकर छा जाता है और विषमताओं की तपन भरी धूप से, कुछ देर के लिए ही सही, शीतलता मिलती है, तभी प्रेम का स्फुरण सम्भव होता है।

जब यह घन बरसता है तभी प्रेम का पौधा पुष्पित और पल्लवित होता है . . . और तभी अनहद रूपी कोयल की मधुरिम ध्वनि गूंजने लग जाती है।

गुरु पूर्णिमा दिवस का भी पर्व है और रात्रि का भी। इस दिवस में जहां एक ओर हर्षित हो उठी पृथ्वी की उमंग है, वहीं शांतिपूर्ण रात्रि की अनुगूंज भी है . . . और यह जीवन सही अर्थों में शांत उमंग से भरा ही तो होना चाहिए . . . इस उमंग में कोलाहल नहीं है, प्रदर्शन नहीं है, विकृति और भोंडापन नहीं है . . . केवल निर्मल पूर्णिमा के प्रकाश में आप्लावित हो हर्षित होने की भावना है।

शांत उमंग से ओत-प्रोत होना ही गुरुत्व के समीप पहुंचने की क्रिया है। जिस प्रकार चांदनी के प्रकाश में एक-एक बूंद ओस की टपकती है और झुलसते हुए मन की धरती को शांत कर देती है — वही इस पर्व की यथार्थ भावना है।

इस पूर्णिमा पर्व की एक और भी विशेषता है, और वह यह कि इस रात्रि को उस निःस्तब्धता का बोध प्राप्त हो सकता है, जो कि कदाचित किसी भव्य पूर्णिमा की रात्रि में नहीं; और यह इसलिए, क्योंकि गुरुदेव अपने अंतःकरण में इसी प्रकार निःस्तब्ध हैं। यही निःस्तब्धता ही तो साधना का मर्म है, यही तो विचार शून्य मस्तिष्क का पहला आयाम है, यही तो ध्यान के गुंजरित होते घंटों की पहली पुकार है. . . और यही तो समाधि का अंतिम सोपान है। सभी साधनाएं सभी ज्ञान, विज्ञान इसी निःस्तब्धता से ही उद्भूत हो रहा है।

जब यह जीवन में चिरस्थायी घटना बन जाएगी, तो फिर हमसे कुछ भी विलग रह ही नहीं सकेगा; तभी हमारे मन में जो आधा-अधूरापन है, एक प्रकार से जो द्वितीया या तृतीया के चांद सा प्रकाश है, वह पूर्णिमा के प्रकाश में बदल जाएगा।

— और उस अमृत निर्झर में भीग कर ही सभी के हृदय का समवेत स्पदंन हो सकेगा, जो नित्य उत्सव की पहली शर्त है।

एक कृषक कितनी ही फसलें काट चुका हो, आषाढ़ की ऋतु आते ही टकटकी लगाकर आकाश निहारने लगता है . . . और वर्षा की रिमझिम होते ही नाच उठता है . . . क्योंकि वह जानता है, कि उसका अस्तिव पूर्व अर्जित धन-भंडार से नहीं, अपितु इस वर्षा से सुनिश्चित होगा।

शिष्य भी इसी प्रकार प्रत्येक गुरु पूर्णिमा में अमृत कणों की रिमझिम में भीगना चाहता है, क्योंकि यही अमृत वर्षा उसके अस्तित्व का आधार जो होती है; भले ही वह कितनी ही ऊंचाई पर क्यों न पहुंच चुका हो या कितनी ही साधनाओं और सिद्धियों को क्यों न हस्तगत कर चुका हो। यों भी वह शिष्यत्व ही क्या जिसमें शिशुत्व न हो . . . और जो वर्षा की फुहारों में बिना कोई परवाह किए भीगने को उतावला न हो उठता हो।

गुरु पूर्णिमा एक पर्व ही नहीं, एक दुर्लभ अवसर ही नहीं, गुरुदेव का वंदन करने का मुहूर्त ही नहीं, वरन एक दिवस के लिए 'प्रेम नगर' में रहने का सुयोग है। अब यह तो अपनी-अपनी पात्रता है, कि कौन इस अवधि को कितना बढ़ा लेता है। जहां तक गुरुदेव के पक्ष की बात है, वे तो इसे चिरस्थायी ही कर देना चाहते हैं—

"आनन्द, निश्चिंता, निर्भयता के रूप में!"

गुरु हमारी जाति है . . .
गुरु हमारो धर्म. . .

गुरु पूर्णिमा अर्थात् पूर्ण हो जाना, यदि फिर भी किसी का भाग्य साथ न दे. . . जब गुरु-चरणों में पहुंचने के सारे मार्ग बन्द हो जायें, जब तूफान बीच में आकर खड़ा हो जायें, जब पांवों में बेड़ियां बांध दी जायें. . . और हर प्रयत्न विफल हो जाय, ऐसें मे सिवाय दुःख, वेदना, पीड़ा, निराशा के कुछ शेष नहीं रह जाता. . . आंखों से निरन्तर अश्रुओं की बहती अविरल धारा, और मौन हो जाता है मुखमण्डल. . . उचक-उचक कर, सिसक-सिसक कर अपनी असहनीय वेदना की कहानी कहने लगता है।

मिलने के लिए आतुर मन और मन की वह अभिलाषा, कि मैं गुरु चरण-रज को पखार सकूं, उसे अपने ललाट पर लगा सकूं और अपने "स्व" को तिरोहित कर सकूं. . . लेकिन कैसे होगा यह सब. . . जब सब कुछ असम्भव हो जाय और कोई उपाय नहीं अपने व्याकुल हृदय की वेदना को शांत करने का. . . हुलस-हुलसकर मन जब एक ही बात बार-बार दोहराये, जब नेत्रों में एक ही बिम्ब तैर रहा हो और मन, प्राण आत्मा का चिन्तन एक ही विन्दु पर केन्द्रित हो, जब रोम-रोम से एक ही पुकार निकल रही हो, हे गुरुदेव! आप मुझे बुला लीजिये. . . आप मुझे बुला लीजिये, जब भाव, चिन्तन-मन एक हो जाय. . . तो फिर उसे कोई नहीं रोक सकता. . . तब प्राण तत्त्व के माध्यम से उसकी बात गुरुदेव तक पहुंचती ही है और जब वे तरंगें आपस में टकराती हैं, तो गुरु और शिष्य दो अलग भाव नहीं रहते, एक हो जाते हैं. . . और तब गुरु का हृदय भी उस वेदना में जलने लगता है, और वे भी व्याकुल हो उठते हैं, व्यग्र हो उठते हैं उस शिष्य को अपनी बांहों में समेट लेने के लिए, उसके हृदय में खुद को स्थापित कर देने के लिए।

क्योंकि वह शिष्य तो दूर रहकर भी दूर नहीं रहता, अपितु प्राणों में बस जाता है. . . एकाकार हो जाता है. . . और तब वह अपने मन के अंधियारे को, कलुषिता को गुरु में लीन हो समाप्त करने में समर्थ हो जाता है।

यही है वास्तविक गुरु-शिष्य के मिलन की, जिसकी गाथा वर्षों से गाई जाती रही है, क्योंकि हमेशा यही होता आया है, कि नदी व्यग्र और व्याकुल होकर पहाड़ों को चीरती हुई उस समुद्र से मिलने के लिए बेताब रही है. . . और समुद्र भी उसे अपने विशाल, गहरे हृदय में समेट लेने को छिपा लेने को आतुर खड़ा दिखाई देता है. . . और फिर दोनों एक होकर पूर्ण तृप्त हो जाते हैं, शांत हो जाते हैं. . . फिर शिष्य का भटकाव समाप्त हो जाता है और वह पूर्ण हो जाता है, क्योंकि गुरु को प्राप्त कर लेना शिष्य की पूर्णता है।

ऐसे शिष्यों के लिए, जो गुरु-पूर्णिमा अवसर पर किसी कारणवश न पहुंच सकें, उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह सम्बन्ध मात्र दैहिक नहीं, अपितु आत्मिक है, जन्म-जन्मांतर का है।

. . .और किसी न किसी जीवन में गुरुदेव ने तुमसे पूर्णता प्रदान करने का वायदा अवश्य किया है, उसी कड़ी को जोड़ने के लिए. . . ललाट की दुर्भाग्य लिपि को बदलने के लिए ही आशीर्वाद स्वरूप गुरुदेव तुम्हारे प्राणों को झंकृत कर, चैतन्यता प्रदान कर **गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा एवं शक्तिपात दीक्षा प्रदान** करेंगे, जोकि अपने-आप में दिव्यतम हैं. . . और तब शिष्या को कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं रह जायेगी, क्योंकि गुरुदेव तो स्वयं चलकर उसकी धड़कनों उसके हृदयांगन में प्रवेश जो कर लेंगे. . .

साधक व शिष्य गुरु पूर्णिमा के दिन ब्रह्म मुहूर्त में स्नान आदि नित्य कर्मों से निवृत्त हो पूजागृह में बैठ जाय। पूजाग्रह स्वच्छ व सुगन्धित हो, जिससे कि वातावरण मधुरमय तथा आनन्दप्रद बन सके।

साधक पीली धोती पहिन कर ऊपर से गुरुनामी दुपट्टा ओढ़ ले, फिर गुरु चित्र का पंचामृत आदि से पूजन कर कुंकुम अक्षत, पुष्प आदि चढ़ावे तथा इसके पश्चात् निखिलेश्वर स्तवन का पाठ करें और यदि समय हो, तो इच्छानुसार गुरु मंत्र का जप करे।

साधक १२/०७/९५ को **प्रातः ७ से ८ बजे** के मध्य पूर्ण शांत चित्त हो ध्यानावस्था में गुरु नाम-स्मरण करते हुए बैठा रहे, क्योंकि उन दिव्य एवं तेजस क्षणों में ही गुरुदेव अपने तपस्यांश से ऊर्जा प्रवाहित कर शिष्य व साधक को, जो उनके चरण-कमलों में उपस्थित नहीं हो पाये हैं, उन्हें मानसिक रूप से उपरोक्त दीक्षाएं प्रदान करेंगे।

दीक्षा प्राप्त करने वाले साधक या शिष्य का कर्तव्य है, कि उसी दिन गुरु दक्षिणा स्वरूप एक नये स्वजन को एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बनाते हुए १९६/- रु० (१८० रु० पत्रिका शुल्क व १६ रु० डाक खर्च) का मनिआर्डर कर दे, जिसे पत्रिका सदस्य बनाना हो उसका नाम व पता साफ-साफ हिन्दी या अंग्रेजी में लिख कर उसी दिन मनिआर्डर रवाना कर दें. . . यही गुरु दक्षिणा है, यही दीक्षा की अनुपम भेंट है, यही शिष्य का कर्तव्य है।

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे।

केवल **7777/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल 3,000/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन: 0291-32209 फेक्स:0291-32010
गुरुधाम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 फोन:011-7192248, फेक्स:011-7186700

श्रावण मास: सर्वश्रेष्ठ सफलतादायक पर्व

इस पूरे मास में शिव कृपा स्वतः प्राप्त होती ही है।

श्रावण मास के आगमन से जहां आकाश में उमड़ते-घुमड़ते काले बादलों का नर्तन मन को मोह लेता है. . . और प्रत्येक प्राणि का मन, मयूर की तरह नृत्य करने को मचल उठता है, वहीं मनुष्य का हृदय अत्यधिक शिव भक्ति-भावना से ओत-प्रोत भी हो जाता है, क्योंकि पूरा श्रावण मास **''शिव कृपा सिद्धि कल्प''** के रूप में हमारे सम्मुख प्रति वर्ष उपस्थित होता है।

किसी भी देवी-देवता की आराधना करने के लिये एक विशेष

दिवस का निर्धारण पूरे वर्ष में एक बार या दो बार किया गया है, किन्तु भगवान् शिव की उपासना के लिये तो पूरा का पूरा एक माह ही हम सभी को प्रति वर्ष प्राप्त होता है।

श्रावण मास में की गई कोई भी साधना पूर्ण फलदायक होती ही है, क्योंकि इस मास का प्रत्येक दिवस सर्वकामना सिद्धि प्रदायक अमृत महोत्सव की गरिमा को अपने अन्दर समेटे हुए होता है। श्रावण मास भूतभावन भोले नाथ का मास है। इस पूरे माह में यदि पूर्ण श्रद्धा एवं विधि- पूर्वक पूजा-आराधना की जाय, तो निश्चित रूप से सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती ही हैं। यदि साधक को किसी कार्य को पूर्ण करने में अड़चन आ रही हो, किसी भी कारण से वह कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो या किसी साधना में सिद्धि प्राप्त नहीं हो रही हो, तो ऐसी स्थिति में श्रावण मास से अधिक सिद्ध मुहूर्त अन्य कोई नहीं है।

इस पूर्ण सिद्धि प्रदायक मुहूर्त की प्रतीक्षा केवल मात्र उच्चकोटि के साधु एवं योगियों को ही नहीं होती, अपितु प्रत्येक व्यक्ति को होती है, क्योंकि यह माह है ही पूर्ण आनन्द, पूर्ण मस्ती की फुहार से आप्लावित कर व्यक्ति के तन-मन और आत्मा में पूर्ण उत्साह, आवेग और चेतना भरने का. . .

श्रावण मास के महात्म्य का वर्णन करते हुए 'शिव पुराण' में उल्लेख किया गया है, कि श्रावण मास में की गई ''शिव साधना'' और वह भी इस माह में पड़ने वाले विविध सोमवारों को की गई साधना योगियों और गृहस्थों के लिये पूर्ण सौभाग्य का द्वार खोल देती है। जो इन विशिष्ट दिवसों पर साधना सम्पन्न कर लेता है, उसके भाग्य में यदि दुर्भाग्य अंकित हो, तब भी उसे सौभाग्य प्राप्त होता ही है।

व्यक्ति की घोर दरिद्रता समाप्त होकर पूर्ण सम्पन्नता प्राप्त होती है। व्यक्ति यदि ऋण बोझ से दबा हुआ हो, व्यापार में अत्यधिक श्रम के बाद भी हानि मिल रही हो, विपक्षियों के द्वारा मुकदमे तथा अड़चनें पैदा कर मानसिक व शारीरिक कष्ट निरन्तर प्राप्त हो रहा हो, या किसी भी प्रकार की कोई परेशानी हो, तो श्रावण मास के प्रयोगों से बढ़कर अन्य कोई लाभदायक विधान अन्यत्र है ही नहीं।

श्रावण मास में की गई साधना के द्वारा न केवल भगवान् शिव की कृपा प्राप्त होती है, अपितु उस व्यक्ति पर पूर्ण जीवन काल तक लक्ष्मी की कृपा भी बनी रहती है, क्योंकि मां पार्वती स्वयं अन्नपूर्णा, लक्ष्मी स्वरूपा हैं. . . और विघ्न विनाशक भगवान् गणपति तो साक्षात् शिव पुत्र हैं ही, अतः इनकी भी कृपा का फल प्राप्त होता है, कहने का तात्पर्य मात्र इतना ही है– ''जहां शिव हैं, वहां सब कुछ है।''

पुष्पदन्त अपने गुरु के सम्मुख विनीत भाव से प्रार्थना करते हैं– ''गुरुदेव! आप ही मेरे लिए साक्षात् शिव हैं, और आप ही ने अपने शिव स्वरूप में कृपा कर विष को अपने कण्ठ में धारण किया है।

मैं जानता हूं, कि मैं विष से भी गया बीता हूं, फिर भी आप से प्रार्थना है, कि अपनी पग धूलि बनने का सौभाग्य प्रदान करें।''

इस वर्ष श्रावण मास में पड़ने वाले प्रत्येक सोमवार को क्रमशः निम्न साधनाओं को करने का विधान फलप्रदायक है–

गुरु में अधिष्ठित शिव ही अपने तृतीय नेत्र के ताप से शिष्य के विकारों का, दोषों का नाश करते हैं, जिससे उसका पशुत्व दूर होकर के मनुष्यत्व, देवत्व और शिष्यत्व प्रगट हो सके।

★ १७ जुलाई १९९५ श्रावण का प्रथम सोमवार–

इस दिवस विशेष पर भगवान् शिव के **''नर्मदेश्वर शिवलिंग''** के पूजन का विधान है, इस पूजन के द्वारा अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति होती ही है, अतः निम्न मंत्र के द्वारा **५१ कमल बीजों** को नर्मदेश्वर शिवलिंग पर अर्पित करना चाहिये–

मंत्र-

ॐ नमः शिवाय

★ २४ जुलाई १९९५ श्रावण का द्वितीय सोमवार–

इस दिवस पर **''पारदेश्वर शिवलिंग''** का पूजन करने से सम्पूर्ण मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। पारद शिव का वीर्य है, सत्व है, और पूर्ण अमरत्व प्रदान करने में सक्षम है।

उसी पारद को विशेष क्रियाओं से आबद्ध कर पारदेश्वर शिवलिंग का निर्माण किया जाता है, ऐसे पारदेश्वर शिवलिंग पर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए **२१ बिल्व पत्र** व **२१ सिद्धि गुटिका** अर्पित करने से प्रत्येक मनोकामना पूर्ण होती है–

मंत्र-

ॐ शाम्ब सदाशिवाय नमः

★ ३१ जुलाई १९९५ श्रावण का तृतीय सोमवार–

इस दिवस विशेष को **''धातु निर्मित शिवलिंग''** के पूजन का योग स्पष्ट हो रहा है। यह शिवलिंग किसी भी धातु यथा– स्वर्ण, रजत, ताम्र अथवा कांसे का बना हो सकता है। इस शिवलिंग पर निम्न मंत्र के द्वारा ११ धतूरे के पुष्प अथवा फल **११ गोमती चक्र** के साथ चढ़ाने का विधान है। प्रत्येक धतूरे का पुष्प या फल और गोमती चक्र चढ़ाने से पूर्व १०८ बार उंगलियों पर निम्न मंत्र का जप करना चाहिये, ऐसा करने से आर्थिक समृद्धता प्राप्त होती है, तथा व्यापार में लाभ मिलता है–

मंत्र-

ॐ श्रीं गौरी शंकराय नमः

★ ७ अगस्त १९९५ श्रावण का चौथा सोमवार–

इस दिवस विशेष पर **''ज्योतिर्लिंग''** पूजन का विधान निर्धारित हुआ है। शास्त्रों में द्वादश ज्योतिर्लिंग का उल्लेख मिलता है, यदि आपके क्षेत्र के आस-पास कोई ज्योतिर्लिंग हो, तो आप वहां जाकर पूजन करें अथवा ऐसा शिवलिंग विग्रह प्राप्त करें, जिसके अन्दर भगवान् शिव के ज्योतिर्मय स्वरूप की स्थापना की गई हो, उस ''ज्योतिर्मय'' शिवलिंग पर **रुद्राभिषेक** करने से पूर्ण शिवत्व की प्राप्ति होती ही है तथा पूरे जीवन काल तक आकस्मिक धन प्राप्ति का योग निर्मित होता है, निम्न मंत्र का **विद्युत माला** से ३ माला मंत्र जप सम्पन्न करें–

मंत्र- **ॐ ह्रीं शंकराय नमः**

चारों सोमवार को की गई साधना में प्रयुक्त सामग्री– शिवलिंग, गुटिका, माला, कमलबीज एवं गोमती चक्र को अगले दिन नदी में प्रवाहित कर दें।

जो साधक घर में ये साधनाएं, अथवा पूजन सम्पन्न नहीं कर सकते, वे गुरुधाम में आकर इन विशेष दिवसों पर निर्धारित विशिष्ट प्रयोगों को सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना में उपयुक्त होने वाली सामग्री :

नर्मदेश्वर शिवलिंग - १५०/-, ५१ कमल बीज - ८०/-
पारदेश्वर शिवलिंग - ३००/-, २१ सिद्धि गुटिका - १५०/-
धातु निर्मित शिवलिंग - १५०/-, ११ गोमती चक्र - ८०/-
ज्योतिर्लिंग - ३००/- विद्युत माला - १५०/-

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी की दुर्लभ कृतियां

एस-सीरीज के अन्तर्गत प्रस्तुत हैं ये अमूल्य ग्रन्थ

मूल्य प्रति– 96/-

मूल्य प्रति– 240/-

हिन्दी कृति

कुण्डलिनी नाद ब्रह्म :

कुण्डलिनी जागरण की क्रिया क्या होती है? क्या होते हैं विविध चक्र? कैसे सम्पादित होती है यह अति श्रेष्ठ क्रिया? इसका सूक्ष्म विवेचन है इस ग्रन्थ में . . .

ध्यान, धारणा और समाधि :

इन तीनों विषयों पर विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं, इन सभी के चक्कर में फंस कर मनुष्य इसके मूल चिन्तन के प्रति भ्रमित हो गया है, इसी भ्रम का निवारण है, यह ग्रन्थ . . .

फिर दूर कहीं पायल खनकी :

प्रिया के आगमन का संदेश, दूर से आती उसकी पायलों की खनक से प्राप्त हो जाता है . . . किन्तु हम अपने प्रिय (ईश्वर, गुरु, इष्ट) के आगमन की आहट सुनने की सामर्थ्य खो बैठे हैं. . . इस श्रवण शक्ति को पुष्ट करने का माध्यम है, यह कृति . . .
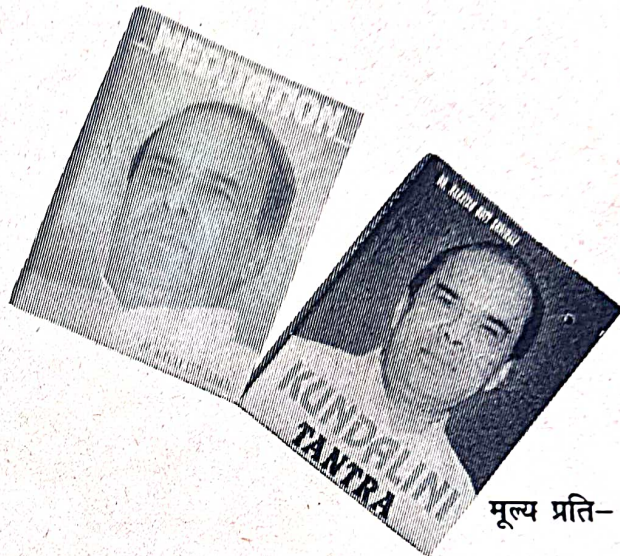
अंग्रेजी कृति

Meditation :

नाम के आकर्षण में फंस कर पूर्ण जानकारी न होने के कारण अधिकतर लोग ध्यान की खोज में भटकते रहते हैं। इस भटकने की क्रिया का समापन कर ध्यान का प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत है, इस कृति द्वारा . . .

Kundalini Tantra :

प्रस्तुत है इस ग्रन्थ के माध्यम से कुण्डलिनी की विस्तृत विवेचना, सप्त चक्रों का विश्लेषण, जिससे मनुष्य को पूर्णता प्राप्त हो सके।

The Sixth Sense :

छठी इन्द्रिय के जाग्रत होने का तात्पर्य है, सम्पूर्ण प्रकृति के कार्य में इच्छानुसार हस्तक्षेप करने की शक्ति प्राप्त कर लेना . . . लेकिन कैसे? यह आप इस ग्रन्थ को पढ़कर प्रामाणिक रूप से जान सकते हैं।

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली- 110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

ज्योतिष प्रश्नोत्तर

प्रश्न– किस व्यवसाय में सफलता मिलेगी?
उत्तर– भूमि, अनाज, होटल आदि में।

प्रवर स्वरूप गौतम, दिल्ली
प्रश्न– मैं कर्ज में डूब गया हूं, मुक्ति कैसे?
उत्तर– परेशानियां बढ़ेंगी, ''ऋण मुक्ति दीक्षा'' प्राप्त करें।

प्रदीप कुमार खुराना, लखनऊ
प्रश्न– पुत्र जन्म कब होगा?
उत्तर– **''पुत्रेष्टि प्रयोग''** सम्पन्न करें।

राजेन्द्र डाणी, अजमेर
प्रश्न– मुकदमा कब तक चलेगा?
उत्तर– समस्या बढ़ने की सम्भावना, अतः ''भैरव साधना'' सम्पन्न करें।

अशोक गुप्ता, झांसी
प्रश्न– साधना में सफलता नहीं मिल रही, कोई उपाय बताएं।
उत्तर– दीक्षा प्राप्त कर, साधना पुनः करें।

वसंत कुमार सिंह, विहार
प्रश्न– क्या मैं इस वर्ष इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा में सफल होऊंगा?
उत्तर– सम्भावनाएं हैं, प्रयास करें।

अविनाश रंजन, जामताडा
प्रश्न– मैं पढ़ाई करूं या कोई अच्छा व्यवसाय करूं अथवा नौकरी?
उत्तर– आप अभी अध्ययन में रुचि लें, इसके अलावा कोई छोटा-मोटा कार्य कर सकते हैं।

अजय कुमार गुप्ता, सूरजपुर
प्रश्न– पारिवारिक झगड़े एवं पैतृक सम्पत्ति के विवाद में विजय एवं छुटकारा किस प्रकार मिलेगा?
उत्तर– शत्रु बाधा निवारण अनुष्ठान सम्पन्न करें।

लाल कीर्ति , विलासपुर
प्रश्न– व्यवसायिक उद्देश्य से मारुति / महेन्द्रा जीप फाइनेन्स करवाना क्या लाभदायक होगा?
उत्तर– विशेष लाभप्रद नहीं।

नारायण प्रसाद, नई दिल्ली
प्रश्न– मेरे लिए कौन-सा व्यवसाय लाभप्रद रहेगा?
उत्तर– आप वस्त्रों से सम्बन्धित व्यवसाय करें।

जीतेन्द्र हरिशचन्द्र, पाडेसरा
प्रश्न– मैं १० वीं कक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हो सकूंगा या नहीं?
उत्तर– प्रयास करें सफलता मिलेगी तथा ''सरस्वती दीक्षा'' प्राप्त करें।

कमलेश पुरी गोस्वामी, उदयपुर
प्रश्न– गड़ा धन मिलेगा या नहीं, कब तक?
उत्तर– ''आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा'' प्राप्त करें, सम्भावनाएं बनेंगी।

रघुवीर राय, गुटौरीपाना
प्रश्न– आर्थिक समस्या कैसे सुधरेगी?
उत्तर– **''महालक्ष्मी दीक्षा''** प्राप्त करें तथा साधना सम्पन्न करें।

कुंवर देवी सिंह बुन्देला, हीरापुर
प्रश्न– मैं नौकरी करूं या व्यवसाय?
उत्तर– दोनों ही उत्तम हैं, परन्तु व्यवसाय अधिक फलप्रद।

हरीलाल , रायपुर
प्रश्न– विवाह में विलम्ब, उपाय बतायें।
उत्तर– ''शीघ्र विवाह दीक्षा'' प्राप्त करें, मनोकामना शीघ्र पूर्ण होगी।

कुमारी मंदाकिनी, शोभापुर
प्रश्न– मुझे नौकरी कब तक मिलेगी या अपना काम करूं?
उत्तर– नौकरी शीघ्र ही मिलने की सम्भावना।

यादराम, नई दिल्ली
प्रश्न– मुझे अप्सरा साधना से फायदा है या नहीं? किस अप्सरा की साधना शीघ्र फलदायी होगी?
उत्तर– आप धन प्रदायक **''यक्षिणी साधना''** करें।

रणछोड़ भाई, बलसाड़
प्रश्न– जीवन में स्थायित्व कब होगा? आजकल जो झगड़ा है, उसका क्या होगा?
उत्तर– आप **''गुरु दीक्षा''** प्राप्त कर **''बगलामुखी साधना''** सम्पन्न करें, शीघ्र लाभ होगा।

अजब सिंह चौहान, हरिद्वार
प्रश्न– कौन-सा रत्न धारण करूं और किसमें?
उत्तर– आप **''सूर्यकान्त''** उपरत्न पहिनें, दायें हाथ की अनामिका में।

त्रिलोक चन्द, नई दिल्ली
प्रश्न– वर्ष १९९५ में काम-धन्धा अच्छा चलाने के लिए क्या करना चाहिए?
उत्तर– जनवरी ९५ में पृष्ठ ४९ पर प्रकाशित नीलमणि का प्रयोग।

नाहरसिंह चन्द्रेल, मथुरा
प्रश्न– मैं इस वर्ष पी० एम० टी० की परीक्षा में उत्तीर्ण होऊंगा या नहीं, कृपया उपाय बताएं।
उत्तर– आप **''सरस्वती दीक्षा''** एवं **''पूर्ण मनोकामना सिद्धि''** दीक्षा प्राप्त करें।

गोपाल प्रसाद पटेल, भिलाई
प्रश्न– मैं बड़ा होकर किस नौकरी में कार्यरत होऊंगा, उपाय भी बताएं।
उत्तर– **''पूर्ण भाग्योन्नति दीक्षा''** प्राप्त करें, व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे।

टालेन्द्र कुमार पटेल, भिलाई,
प्रश्न– मुझे किस साधना में सर्वोच्च श्रेष्ठता प्राप्त होगी?
उत्तर– **''गुरु साधना''** सम्पन्न करें।

हेमन्त भाई, बलसाड़
प्रश्न– मेरा मकान कहां बनेगा? बनेगा या नहीं?
उत्तर– आपका मकान बनेगा, स्थान निश्चित नहीं।

धीरेन्द्र, हिमांचल

(कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे)

नाम :-..

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्..............

जन्म स्थान :- .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

– ज्योतिष प्रश्नोत्तर –
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय
306, कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034

मेष - चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

जल्दबाजी में लिये गये निर्णय आपके लिये हानिप्रद सिद्ध होंगे, अतः ठण्डे दिमाग से काम लें। इष्ट चिन्तन एवं साधना सम्पन्न करने की स्थिति में अनुकूलता प्राप्त कर सकते हैं। नवीन सम्पर्क आपके लिये लाभप्रद सिद्ध होंगे। राज्य पक्ष की ओर से स्थिति में तनाव होगा। स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता न बरतें। जीवनसाथी से मधुरता बनाये रखें। जो कार्य आप कर रहे हैं, उसे ही करते रहें, लाभ होगा। रोजगार सम्बन्धित चिन्ता बनी रहेगी, इस विषय में आप आयात-निर्यात, होटल तथा मनोरंजन से सम्बन्धित कार्यों पर विचार कर निर्णय ले सकते हैं। रुका हुआ धन प्राप्त होने के योग हैं। मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें। अनुकूल तारीखें ५, ६, १८, २२ एवं २७ कही जा सकती हैं।

मिथुन - का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

राज्य पक्ष से बाधाओं के आने से तनाव होगा। सहयोगियों के साथ छोड़ जाने से चिन्ता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे। प्रेम विवाह के मामलों को लेकर उतावली न करें। कला-जगत् के व्यक्ति समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। रुका हुआ धन प्राप्त होने के योग, परन्तु आकस्मिक धन-प्राप्ति का योग नहीं, अतः व्यर्थ के कार्यों में धन व्यय न करें। नवीन विवादों में पैर न फंसायें। यात्रा-योग सामान्य ही रहेगा। नवीन व्यवसाय के क्षेत्र में आप सौन्दर्य प्रसाधन, होटल आदि के बारे में विचार कर सकते हैं। आपके लिये अनुकूल रत्न पन्ना होगा, अतः धारण कर लाभ प्राप्त करें। जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद हो सकता है, शान्ति बनाये रखें।

सिंह - मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे

जल्दबाजी में लिया गया निर्णय अहितकर हो सकता है, सूझ-बूझ से किए गये कार्यों में लाभ होगा। भूमि विस्तार एवं भवन-निर्माण के प्रबल योग बन रहे हैं। वैवाहिक सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। धार्मिक प्रसंगों में व्यय-भार बढ़ेगा। संतान पक्ष की ओर विशेष ध्यान दें। मित्रों से मेलजोल बनाये रखें। अधिकारियों के सहयोग से किसी पुरानी समस्या का समाधान होगा। साधक वर्ग में विशेष उत्साह दिखाई देगा। रुका हुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी। दो लाभ-तीन खर्च से चिन्ता बनी रहेगी। प्रेम विवाह के मामलों में रुचि न लें। जो कार्य वर्तमान में हो, उसे पहले सम्पन्न करें। प्रलोभन में आकर कोई भी गलत कार्य अथवा निर्णय न करें। अनुकूल तारीखें १, ७, १०, १५, १६, २० एवं २८ कही जा सकती हैं।

वृषभ - इ, उ, ए, ओ, बा, बी, बु, बे, बो

किसी तीर्थस्थान पर जाने के योग प्रबल। यात्रा में सावधानी बरतें। जमीन-जायदाद के मामले सुलझने के योग बनेंगे, परन्तु अदालती मामलों को लेकर निष्क्रियता न बरतें। समाज में मान-सम्मान प्राप्ति की स्थिति बनेगी। सन्तान पक्ष के क्रियाकलापों पर विशेष ध्यान दें। शिक्षा से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्ति मानसिक तनाव की स्थिति में रहेंगे। आप ३ अथवा ५ रत्ती का हीरा धारण करें, लाभ होगा। अनुष्ठान आदि में आर्थिक व्यय-भार में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद के क्रय-विक्रय का योग बन रहा है।

कर्क - ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

व्यापारिक विस्तार से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। किसी अप्रिय घटना का योग प्रबल, वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें। भैरव साधना सम्पन्न कर स्थिति नियंत्रण में ला सकते हैं। आर्थिक संकट पर काबू होगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अच्छा नहीं, अतः खान-पान पर विशेष ध्यान दें, स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। साधक वर्ग के लिये समय अनुकूल चल रहा है। प्रेम-प्रसंगों को लेकर शिथिलता रहेगी। कारोबारी मामलों में धैर्य से काम लें। नौकरी में पदोन्नति के अवसर बन रहें हैं। प्रेम विवाह अनुकूल सिद्ध होगा।

कन्या - टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

यह माह आपके लिये विशेषकर अनुकूल सिद्ध होगा। व्यापार के विस्तार से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी, और इसके साथ ही खर्चों में भी वृद्धि होगी। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी, परन्तु हड़बड़ी करने पर मान-हानि की स्थिति बन सकती है। सभा-सोसायटी आदि में मान-सम्मान की क्षति अनुभव होगी। शत्रु हताश होंगे, पर मित्रों के साथ छोड़ जाने से दुःख होगा। किया हुआ वायदा निभाने में कठिनाई हो सकती है। अनुकूल तिथियां ३, ५, ६, १४, २०, २३, २७ कही जा सकती है।

तुला - रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

यह माह आपके लिये भी अनुकूलताओं से भरा होगा। इसके पश्चात् आर्थिक लाभ की स्थितियां भी बनेंगी। धार्मिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आयेगी एवं मांगलिक कार्यों को लेकर यात्रा-योग। यात्रा अनुकूल एवं सुखकर रहेगी। अध्यात्म की ओर झुकाव होगा। आप हीरा धारण कर जीवन में विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साधनात्मक दृष्टि से ४ से १५ तारीखों का समय विशेष फलप्रद सिद्ध होगा। व्यापारिक मामलों की साझेदारी में कटुता आयेगी। समाज में प्रतिष्ठा बनाये रखें।

धनु - ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, डा, भे

यह माह आपके लिये भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से लाभ देने वाला होगा। अधिकारियों से मतभेद होने पर शांति बनाये रखें। मित्रों से मेलजोल बढ़ेगा। जीवनसाथी की उपेक्षा न करें एवं स्वास्थ्य के प्रति पूरा ध्यान दें। संतान की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। महिलायें पारिवारिक उत्तरदायित्वों के प्रति लापरवाही न बरतें एवं समाज में सम्मान की स्थिति बनाये रखें। आकस्मिक धन-प्राप्ति का कोई योग नहीं, व्यर्थ का धन व्यय न करें। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें।

कुंभ - गु, गे, गो, सी, सु, से, सो, दा

व्यापारिक कार्यों को लेकर स्थान परिवर्तन के विचार बनेंगे। धार्मिक कार्यों को लेकर यात्रा के योग बन रहे हैं। जीवन में नये मार्ग तथा नये-नये अध्याय खुलेंगे। आर्थिक मेलजोल बनाकर चलें, परन्तु अधिक विश्वास की स्थिति घातक हो सकती है। बगलामुखी साधना सम्पन्न करें, लाभ होगा। राज्य पक्ष अनुकूल रहेगा। अधिकारियों से वार्तालाप कर स्थिति सुधारें, रुके हुए काम बन सकते हैं। सामाजिक कार्यों में भी व्यस्तता बनी रहेगी। मान-हानि की स्थिति से बचें। अतिथियों के आगमन से प्रसन्नता होगी।

वृश्चिक - तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू

जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें। अदालती मामलों के उलझने से चिन्ता बनी रहेगी। राज्य पक्ष की ओर से सहयोग प्राप्त होगा। व्यर्थ के वाद-विवादों से दूर रहें, तो उचित रहेगा। आर्थिक स्थितियों में सुधार के लिये कारोबार में एवं यात्राओं में विशेष ध्यान दें। प्रेम-प्रसंगों में उत्साह दिखाई देगा। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति इंटरव्यू में सफलता के अवसर प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। सोचा हुआ कार्य आसानी से पूरा होगा।

मकर - भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

घर में किसी मांगलिक कार्य का योग, मांगलिक कार्यों से बाहर की यात्रा भी सम्भव। मासान्त परेशानियों में बीतेगा। मुकदमे में विजय के योग निर्मित होंगे। पारिवारिक उत्तरदायित्वों की ओर पूर्ण ध्यान दें। आर्थिक स्थिति दृढ़ रहेगी, परन्तु उच्च वर्ग में तनाव की स्थिति रहेगी। आप ३ रत्ती का नीलम धारण करें, लाभ होगा। ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियों का जोर रहेगा, अतः स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें और खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

मीन - दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

कार्य का होना या न होना आपके परिश्रम पर निर्भर होगा। जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें। आप पुखराज धारण करें, तो लाभ होगा। शत्रु पक्ष आपके अनुकूल होगा, वहीं मित्रों के साथ छोड़ जाने से खिन्नता होगी। नवीन सम्पर्क भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे। शारीरिक न्यूनताओं में सुधार होगा। संतान की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। नवीन वाहन के क्रय-विक्रय का योग बन रहा है। यात्रा में अनुकूलता रहेगी।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

दिनांक	तिथि	पर्व
१०/०७/९५	आषाढ़ शुक्ल पक्ष १३	प्रदोष व्रत
१२/०७/९५	**आषाढ़ शुक्ल पक्ष १५**	**गुरु पूर्णिमा**
१५/०७/९५	**श्रावण कृष्ण पक्ष ४**	**गणेश चतुर्थी**
१८/०७/९५	श्रावण कृष्ण पक्ष ६	सर्वार्थ सिद्धि योग
२३/०७/९५	श्रावण कृष्ण पक्ष ११	कमला एकादशी
२५/०७/९५	श्रावण कृष्ण पक्ष १३	प्रदोष व्रत
२७/०७/९५	**श्रावण कृष्ण पक्ष ३०**	**हरियाली अमावस्या**
२८/०७/९५	श्रावण शुक्ल पक्ष १	पुष्य नक्षत्र
०१/०८/९५	श्रावण शुक्ल पक्ष ५	नाग पंचमी
०२/०८/९५	श्रावण शुक्ल पक्ष ६	कल्कि जयन्ती
०६/०८/९५	श्रावण शुक्ल पक्ष १०	सर्वार्थ सिद्धि योग
०८/०८/९५	श्रावण शुक्ल पक्ष १२	प्रदोष व्रत
१०/०८/९५	श्रावण शुक्ल पक्ष १५	रक्षा बन्धन
११/०८/९५	भाद्रपद कृष्ण पक्ष १	सिद्धि योग
१३/०८/९५	भाद्रपद कृष्ण पक्ष ३	कजली तीज
१४/०८/९५	भाद्रपद कृष्ण पक्ष ४	गणेश चतुर्थी
१८/०८/९५	भाद्रपद कृष्ण पक्ष ८	कृष्ण जन्माष्टमी
१९/०८/९५	भाद्रपद कृष्ण पक्ष ९	अमृत सिद्धि योग
२१/०८/९५	भाद्रपद कृष्ण पक्ष ११	अमृत योग
२३/०८/९५	भाद्रपद कृष्ण पक्ष १३	प्रदोष व्रत
३०/०८/९५	भाद्रपद कृष्ण पक्ष १५	ऋषि पंचमी

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

वर्तमान में चल रही राजनीतिक उथल-पुथल और अपनी-अपनी पार्टी के संगठन को मजबूती देने के प्रयास व पार्टी के जोड़-तोड़ अत्यन्त ही विचारणीय दौर से गुजर रहे हैं, और यह देश के लिये बहुत ही आश्चर्य का विषय ही कहा जायेगा, कि समस्त भारत राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त ही शांत है। इसका कारण मुख्यतः जन-सामान्य की राजनीतिक रवैये के प्रति शिथिलता ही कही जा सकती है। जनता का विश्वास राजनीति के प्रति, देश के नेताओं के प्रति लगभग समांप्त ही होता जा रहा है।

टाडा को लेकर चल रहे तनाव तथा टाडा को समाप्त करने के विषय को लेकर बहुत अधिक मतभेद दिखाई देगा, और बहुत अधिक संघर्ष के पश्चात्, अन्त में टाडा की समाप्ति होगी ही, लेकिन टाडा के समाप्त होने से जिन उद्देश्यों को लेकर टाडा समाप्त किया जायेगा, वह पूरा हो, ऐसा दिखाई नहीं देता, और टाडा के प्रति अन्य कानून बनाया जाना भी निश्चित होगा।

कश्मीर में, पंजाब में, सीमा पर जिस प्रकार से उग्रवाद की गतिविधियां बढ़ रही हैं, ये सब राजनीतिक स्तर पर चुनौती का कारण बनेंगी। निरन्तर बढ़ती उग्रवाद की घटनाओं का असर दिल्ली में एवं अन्य राज्यों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकेगा। इस उग्रवाद को लेकर प्रशासन में अत्यधिक शिथिलता रहेगी, जिसे लेकर जन-आन्दोलन तेज होगा। कश्मीर में चुनाव के समय आतंकवादी गतिविधियां तीव्र होंगी, संशय की स्थिति में चुनाव होने के कारण किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिलने की सम्भावना न्यून होने से अस्थायी सरकार बनने की सम्भावना होगी, लेकिन प्रशासन की चुस्ती से उक्त स्थितियां बदल भी सकती हैं, इसके लिये सभी राज्यों का एकजुट होकर प्रयास करना नितान्त ही अनिवार्य होगा।

हरियाणा में श्री भजनलाल अपना वर्चस्व बनाने के लिये, कठिन परिश्रम एवं तीव्र राजनैतिक दांवपेचों का प्रयोग करते दिखाई देंगे। इसके बाद भी हरियाणा में श्री चौटाला का बहुमत बढ़ता दिखाई देगा। हरियाणा के विकास कार्यों में शिथिलता रहेगी। जल-विवाद को लेकर राजनैतिक तनाव बना रहेगा। चरार-ए-शरीफ के मामलों को लेकर चल रहा तनाव समाप्त होगा, परन्तु सुरक्षा-व्यवस्था में ढील होते ही मामला पुनः भड़कने की स्थिति में आ सकता है। इस विषय में जन-मानस में अत्यन्त क्षोभ की स्थिति देखी जा सकती है।

राजस्थान में राजनैतिक गति विधियों को लेकर तनाव रहेगा एवं शान्ति के प्रयासों में बढ़ोतरी होने से प्रसन्नता का माहौल बनेगा। सूखे की स्थिति से एवं भयंकर गर्मी से भी राहत मिलने से मानस में प्रसन्नता का वातावरण बनेगा।

शेयर मार्केट

देशी-विदेशी कम्पनियों की लिवाली एवं देनदारी से इस माह शेयरों की तेजी में विशेष परिवर्तन दिखाई देगा। आलोच्य मंदड़ियों में भी विशेष प्रकार की खरीद-फरोक्त होती दिखाई देने से कई प्रमुख शेयरों के भावों में परिवर्तन आयेगा।

शेयर बाजार में वित्तीय संस्थाओं के समर्थन को लेकर बन रही ऊहापोह की स्थिति के कारण भी शेयरों में अस्थिरिता दिखाई देगी, पर इसके बावजूद भी शेयर बाजार में विशेष हलचल एवं तेजी की स्थिति रहेगी।

इस माह में तेजी के रुख में रहने वाले शेयरों में कुछ प्रमुख शेयरों के नाम इस प्रकार हैं— डी० सी० एम० लिमिटेड, डी० सी० एम० डेवू मोटर्स, एस्सार शिपिंग कॉर्पो०, हिन्द लीवर, जे० पी० इंड०, ओसवाल एग्रो, रिलायंस इंड०, टिस्को, अपोलो टायर्स आदि।

इसके अलावा कुछ शेयर अपनी स्थिति से आशा के विपरीत मंदी की स्थिति में आयेंगे। ऐसे शेयरों में कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार है— केल्विनेटर, एशियन होटल, डी० सी० एम०, श्रीराम कंसो०, एस्कोर्ट्स, हीरो होंडा, एच० डी० सी० इंडो गल्फ फर्टि०, जे० सी० टी० लिमि०, एल० एण्ड टी०, एल० एम० एल० आदि शेयर प्रमुख रहेंगे।

इसके अलावा भी अन्य शेयरों में भारी परिवर्तन आयेगा, जिसका विवरण हम स्थानाभाव के कारण दे पाने में असमर्थ हैं। कुछ शेयर ऐसे भी रहेंगे, जिनके बारे में कारोबारी रिपोर्ट शानदार आयेगी, और फिर उनके दामों में भारी गिरावट देखी जायेगी। इस प्रकार की स्थितियों को देख कर शेयर धारकों के मानस में भारी असन्तुलन दिखाई देगा एवं खरीद-फरोक्त में विशेष उत्साह दिखाई नहीं देगा। ❀

एक ऐसी साधना. . . एक ऐसा प्रयोग, जो शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करता है, और उन्हें नेस्तनाबूद कर देता है, एक अत्यधिक तीव्र, तेजस्वी एवं प्रत्येक साधक के लिये उपयोगी,आवश्यक एवं अनिवार्य लेख. . .
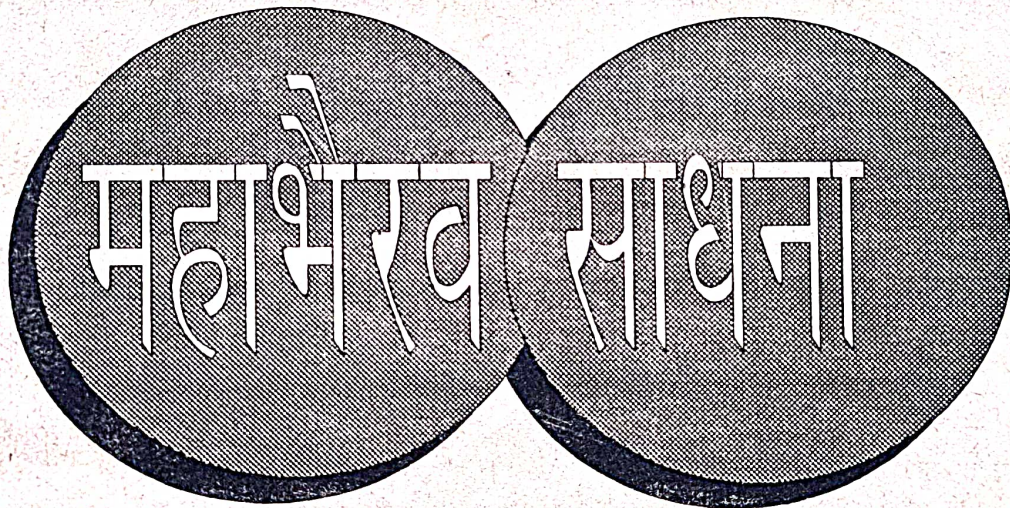
मानव अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं, बाधाओं, परेशानियों, दुःखों से प्रतिपल संघर्षरत रहता ही है। व्यक्ति का पूरा जीवन इनको समाप्त करने, इन पर विजय प्राप्त करने में ही बीत जाता है। नित्य प्रति व्यक्ति इन्हें सुलझाने का प्रयास करता है, पर वह उतना ही ज्यादा उनमें उलझता जाता है, कोई उपाय जब उसकी बुद्धि के अनुसार सफल नहीं हो पाता, तब वह हार कर देवी-देवताओं की आराधना करने लगता है, क्योंकि जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आवश्यक है, कि मानव मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो और किसी भी प्रकार का तनाव उसको नहीं हो, तभी वह निश्चिंतता पूर्वक सभी समस्याओं का हल प्राप्त कर सकता है।

इस प्रकार की स्थिति प्रदान करने में साधना पक्ष का सहारा लेना मनुष्य के लिए अत्यधिक हितकारी होता है, अब यहां प्रश्न यह उठता है, कि हमारे सामने तो सैकड़ों प्रकार की साधनाएं हैं, और प्रत्येक ही अपने-आप में महत्त्वपूर्ण और तेजस शक्तियों से युक्त है, ऐसी स्थिति में हम अपने जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए, वह भी विशेष कर शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए, अपने जीवन की समस्त विपत्तियों का नाश करने के लिए
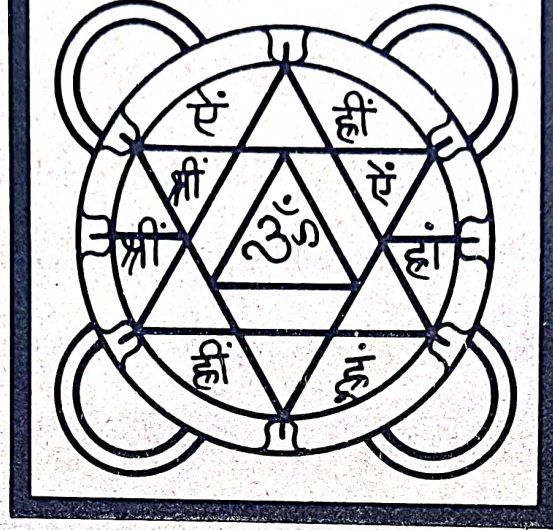
साथ ही अपने बालकों की सुरक्षा करने के लिए जो साधना अत्यधिक उपयुक्त हो, उसका चयन कैसे करें?

ऐसी स्थिति में व्यक्ति का ध्यान सर्वप्रथम **''महाभैरव साधना''** की ओर ही आकृष्ट होता है। वैसे भी देखा जाय तो एक भी ऐसा गांव नहीं है, जहां भैरव का मन्दिर न हो। जन-जन के देवता के रूप में भैरव के प्रति लोगों की आस्था जुड़ी हुई है।

विभिन्न तांत्रिक ग्रंथों में चाहे वह ''तंत्र चूड़ामणि'' हो अथवा किसी भी ऋषि-मुनि के द्वारा रचित साधना-विधान हो। प्रत्येक देवी-देवता के पूजन के पूर्व गुरु, गणपति एवं भैरव पूजन अनिवार्य होता ही है, क्योंकि भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होते हैं। ''भैरव तंत्र'' के अनुसार— **भैरव साधना सम्पन्न करने से मनुष्य को अपने जीवन में निम्न लाभ प्राप्त होते हैं–**

१. मानसिक कष्ट एवं संताप का नाश।
२. समस्त प्रकार के उपद्रवों का नाश।
३. शरीर स्थित रोगों का नाश।
४. सामाजिक शत्रुओं का नाश।
५. समस्त प्रकार के कर्जों की समाप्ति।
६. शासन की ओर से आने वाली अकारण बाधाओं का नाश।
७. मुकदमे में विजय।
८. अकाल-मृत्यु निवारण।
९. वृद्धावस्था के समय व्याप्त होने वाले रोगों का नाश।
१०. बालकों की सर्वविधि रक्षा के लिए।
११. परिवार तथा स्वयं के ऊपर आने वाली बाधा या विपत्ति को पहले से ही समाप्त करने के लिये।
१२. किसी भी प्रकार का कोई एक्सिडेन्ट न हो, यदि एक्सिडेन्ट की स्थिति आ ही जाय, तो उस स्थिति से भी बिना हानि के बच सके।

— ऐसे अनेक लाभ महाभैरव साधना से साधक को प्राप्त होते ही हैं।

भैरव तंत्र में ही वर्णन आता है, कि जो व्यक्ति अपने-आप के प्रति सजग एवं चैतन्य होता है, वह निश्चित रूप से महाभैरव साधना सम्पन्न करता ही है, क्योंकि उसे अपना जीवन प्रिय होता है, अपने बच्चों का जीवन प्रिय होता है, पूरे परिवार का जीवन प्रिय होता है। यदि कोई शत्रु हो तो उसको सर्वविधि समाप्त करने के लिए भी भैरव साधना उपयुक्त है। इसके अलावा भैरव दिवस पर प्रत्येक उच्चकोटि के संन्यासी महाभैरव साधना सम्पन्न करते ही हैं, जिससे उन्हें अपने द्वारा की जा रही समस्त प्रकार की साधनाओं में किसी भी प्रकार की विपत्ति का सामना न करना पड़े।

समाज में पूर्ण सम्माननीय स्थान प्राप्त व्यक्ति भी निश्चित रूप से महाभैरव साधना सम्पन्न करता ही है। इस प्रकार समस्त व्यक्तियों का अनुभव यही है, कि कलियुग में महाभैरव साधना अतिशीघ्र लाभदायक होती है। महाभैरव साधना करने के लिये कोई विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती है।

साधना विधि--

१. **भैरव यंत्र, महाभैरव गुटिका, काली हकीक माला** इन तीनों सामग्रियों का प्रयोग इस साधना में किया जाता है। भैरव तंत्र में वर्णित विशिष्ट मंत्रों से अनुप्राणित इन सामग्रियों को आप पहले से ही प्राप्त कर लें।

२. स्नान आदि से निवृत्त होकर, साफ-स्वच्छ वस्त्र पहिन कर साधना में प्रवृत्त हों।

३. धोती आप पीली या काली इन दोनों में से किसी भी रंग की पहिनें, किन्तु गुरु चादर अवश्य ओढ़ें।

४. पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बैठें।

५. अपने सामने किसी प्लेट में काले तिल की एक ढेरी निर्मित करें, और उस पर 'भैरव यंत्र' स्थापित करें। भैरव यंत्र के ऊपर ही 'महाभैरव गुटिका' स्थापित करें।

६. **काले रंग में रंगे हुए अक्षत** एवं **काली सरसों** चढ़ाकर यंत्र और गुटिका का पूजन करें।

७. गुड़ से बने नैवेद्य का भोग लगायें।

८. पूजन करने के पश्चात् निम्न महाभैरव मंत्र का 'काली हकीक माला' से ११, २१ या ५१ माला मंत्र-जप अपनी सामर्थ्य एवं कार्य की कठिनता को देखते हुए सम्पन्न करें।

९. मंत्र-जप सम्पन्न करते समय आपको हिलना-डुलना नहीं है।

१०. भैरव यंत्र की ओर अपलक देखते हुए इस मंत्र-जप को करना है।

मंत्र

ॐ भ्रं भैरवाय नमः

११. मंत्र-जप समाप्ति के पश्चात् महाभैरव से अपनी जिस इच्छा को, जिस कामना को लेकर आपने साधना सम्पन्न की है, उसे पूर्ण करने के लिये पुनः प्रार्थना करें।

१२. जिस दिन आप इस साधना को सम्पन्न करें, उसके ठीक तीसरे दिन गुटिका, यंत्र व माला को किसी काले वस्त्र में बांधकर किसी नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें।

१३. यह साधना किसी भी **शनिवार** के दिन अथवा **किसी भी मास की कृष्ण पक्ष में पड़ने वाली अष्टमी को तथा १७-०६-९५ भैरव योग के दिन रात्रि ९ बजे** के पश्चात् तथा **सुबह ३ बजे** के बीच में सम्पन्न की जाती है।

पूर्ण श्रद्धा भावना के साथ इस साधना को सम्पन्न करने पर १५ दिन के अन्दर-अन्दर लाभ प्राप्त होने लगता है।

साधना में प्रयुक्त होने वाली सामग्री :
भैरव यंत्र - २४०/-, महाभैरव गुटिका - ६०/-
काली हकीक माला - १५०/-

आपकी पत्रिका . . . आपके सुझाव

प्रिय बन्धुओं! सदा ही हमें आपके सुझावों का इन्तजार रहता है. . . और हमने आप लोगों के उचित सुझावों का सदैव सम्मान किया है। आज **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका का १५ वां वर्ष चल रहा है, और दिनोंदिन इसकी मांग बढ़ती ही जा रही है. . . यह सब आप लोगों के सहयोग का ही परिणाम है।

हमें अनेकों बार यह सुझाव प्राप्त हुआ, कि पत्रिका की हेडिंग ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' की स्टाइल चेंज की जाय, और अधिक आकर्षक बनाया जाय। पिछले तीन माह से आप सभी पाठकों के इस सम्बन्ध में अत्यधिक पत्र प्राप्त हुए, अतः हम आपके सुझावों को ध्यान में रख कर ही **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** की हेडिंग स्टाइल चेंज कर रहे हैं–

अभी तक यह स्टाइल है–

और अब आगे से –

लेकिन इसका निर्णय आपके द्वारा प्राप्त पत्रों के आधार पर ही किया जायेगा। जिस स्टाइल के पक्ष में ज्यादा पत्र होंगे, उसे ही कवर पर दिया जायेगा। आपके पत्रों के इन्तजार में . . .

– उप सम्पादक

साधक साक्षी हैं

पत्रिका परिवार से सम्बन्धित प्रिय बन्धुओं! साधक साक्षी स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाले पत्र आप जैसे साधकों के ही हैं . . . जिन्होंने साधना की इस पगडण्डी पर चलने से पहले अपने मानस में कई भ्रांतियां पाल रखी थीं, दीक्षा लेने से पहले उनके मानस में कई द्वंद्व थे . . . लेकिन वे ही साधक हैं, जब उन्हें उनके द्वारा की गई साधना के और दीक्षा के द्वारा अच्छे परिणाम प्राप्त हुए तो उनमें एक ललक सी जगी. . . कुछ करने की, साधना द्वारा, दीक्षा द्वारा अपने कष्टों से, अभावों से मुक्ति पाने की . . . यह तो हमारा फर्ज है, कि आज के भौतिकता पूर्ण सघन अंधकार में इस पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** के द्वारा आपको प्रकाश दिख सके।

प्रतिदिन हमें इस स्तम्भ के अन्तर्गत सैकड़ों पत्र प्राप्त होते हैं, जिनको एक साथ पत्रिका में स्थान देना सम्भव नहीं हो पाता, अतः आपके अनुभव प्रकाशित होने में थोड़ा विलम्ब होता है, तो आप निराश न हों, आप अपने अनुभव अवश्य भेजा करें, जिससे आपके अनुभवों से लोगों में अपने-आप को सुखी व सम्पन्न बनाने की एक चेतना जाग्रत होती रहे . . . आशा है आपका सहयोग इसी तरह सदैव बना रहेगा और आप सब इस पत्रिका के द्वारा लाभान्वित होते रहेंगे।

– उपसम्पादक

सांच को आंच नहीं

मैं मध्य प्रदेश जिला **बिलासपुर** का रहने वाला हूं, मेरी उम्र १८ वर्ष है। मैं पिछले कुछ दिनों से बहुत बीमार था। रायपुर अस्पताल में मनोरोग विशेषज्ञ के सान्निध्य में मैं लगभग २५ दिन भर्ती रहा, उसके बाद जब डॉक्टर साहब ने छुट्टी दी, तो घर आया करीबन १५ दिन के बाद मेरी बीमारी एकदम से बढ़ गई। मैं अपने घर से गली तक भी नहीं निकल सकता था, मुंह से लार गिरती रहती तथा हाथ-पैर कांपते रहते थे। रात भर मैं सो नहीं पाता था, और अगर ऐसी ही हालत रहती, तो दो-चार माह में न जाने क्या हो जाता! तब मेरे पिताजी ने हमारे वरिष्ठ गुरु भाई को घर बुलाकर दिखाया, उनके साथ में दो गुरु भाई और भी थे, उन सभी ने मुझे गुरु मंत्र से अभिमंत्रित जल तीन-चार दिन तक पिलाया। उसके बाद मेरी तबियत में २० प्रतिशत सुधार हो गया। अप्रैल में इलाहाबाद शिविर के अवसर पर मैं पूज्य गुरुदेव के चरणों में पहुंचा और गुरु दीक्षा प्राप्त की और गुरु दीक्षा प्राप्त कर मैंने ज्यों ही उनके चरण स्पर्श किये, मुझे शरीर में एक झनझनाहट-सी महसूस हुई. . . और मुझे लगा कि मैं पूर्ण स्वस्थ हूं, और आज मैं बिना दवा के पूर्णरूप से स्वस्थ हूं।
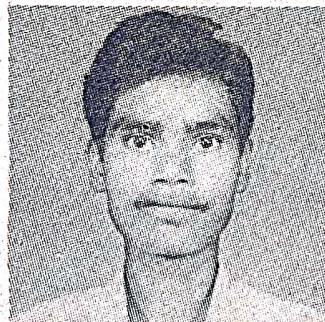
मेरा उदाहरण देखकर शिष्यों ने शिवरी नारायण में शिविर का आयोजन किया। गुरुदेव! मैं किन शब्दों में लिखूं, मेरे पास तो शब्द ही नहीं हैं। ये सभी ऊपर लिखे शब्द सत्य हैं, आपको कोई भी पत्र यदि आये, तो उसका उत्तर देने के लिये मुझे सेवा का अवसर दें। अंत में मैं इतना ही कहूंगा, कि "सांच को आंच नहीं।"

सुखराम साहू
शिवरी नारायण, बिलासपुर, म० प्र०

ooooo

जा पर कृपा आपकी होई

मैं एक तकनीकी कर्मचारी संयंत्र सहायक श्रेणी-२ के पद पर **'हंसदेव ताप विद्युत परियोजना' कोरबा (पश्चिम)** में कार्यरत हूं। अगस्त १९९४ से पवित्र मासिक पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** का वार्षिक सदस्य बना और इस पवित्र पत्रिका का ध्यान लगाकर अध्ययन किया, तो मुझे यह बहुत ही अच्छी लगी।

माह **''सितम्बर ९४''** की पत्रिका में प्रकाशित एक कॉलम, जो कि अपनी समस्या को भरकर जोधपुर कार्यालय को भेज दिया, तद्रूप मुझे वहां से पूज्य गुरुदेव के आशीर्वादयुक्त **''मनोवांछित चैतन्य यंत्र''** भेजा गया। उस यंत्र को मैंने बताये गये विधि-विधान एवं मंत्र से २१ दिन तक प्रतिदिन सुबह एक माला **''रक्त स्फटिक माला''** से मंत्र-जप किया।

मंत्र-जप की समाप्ति के अन्तिम दिन यंत्र एवं माला को नदी में विसर्जित कर दिया, तो पूज्य गुरुदेव की कृपा से मेरी समस्या का पूरा-पूरा हल प्राप्त हो गया। मेरी समस्या यह थी, कि एक व्यक्ति मुझे प्रतिदिन व्यक्तिगत रूप से प्रताड़ित करता था, जिसकी वजह से मुझे आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक कष्टों का तनाव बना रहता था।

और अब पूज्य गुरुदेव की कृपा से पूरा-पूरा हल हो गया है, जिसके लिये मैं उनका बहुत ही आभारी हूं, और गुरु-कृपा से वह व्यक्ति मुझे भविष्य में कभी भी प्रताड़ित न कर सके, ऐसा ही मैं पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद चाहता हूं।

श्री हेतराम रौतिया
कोरबा, म० प्र०

भाग्येश्वरं त्वं प्रणमं नमामि. . .

मैं कुछ वर्षों से अपनी बेरोजगारी से बहुत ही ज्यादा परेशान था। मैंने पत्रिका के एक अंक में **''भाग्यवर्धिनी रत्न''** के बारे में पढ़ा, जो कि रोजगार प्राप्ति में सहायक होता है। उसके पश्चात् मैंने वी० पी० पी० द्वारा जोधपुर कार्यालय से उसे प्राप्त किया और धारण भी किया।

उस वक्त मैं उत्तराखण्ड में प्रवास कर रहा था। रत्न धारण करने के बाद १५ दिनों के अन्दर ही मुझे एक प्राइवेट फाईनेंस कम्पनी के विकास अधिकारी पद का नियुक्ति पत्र प्राप्त हो गया। उसके पश्चात् उस पद पर कार्यभार सम्भालने से पूर्व ही मेरे गृह नगर अम्बिकापुर से फोन आया, कि आप तत्काल चले आओ, यहां सरकारी नौकरी में आपकी नियुक्ति की सम्भावना है। मैं शीघ्र ही उत्तराखंड (खटीमा) से अम्बिकापुर पहुंचा एवं कागजी कार्यवाहियों के पश्चात् मात्र १२ दिन में ही मैं शिक्षक के पद पर नियुक्त हो गया। ये सब पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एवं 'भाग्यवर्धिनी रत्न' के चमत्कार से ही हुआ। आज मैं यह पत्र लिखने में अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूं। मेरी सारी चिन्ताएं, तनाव, परेशानियां समाप्त हो गई हैं। मैं पुनः पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में अपना प्रणाम पत्र के माध्यम से पहुंचा रहा हूं।

अरुण कुमार जोशी
स० शिक्षक
सरगुजा, म० प्र०

गुरु कृपा

मेरा पुत्र 'वरुण गुप्ता', जिसकी आयु ११ वर्ष है, आज से एक माह पूर्व अपने घर से स्कूल के लिए गया था। स्कूल से वापिस आते समय बस में चढ़ रहा था, तो बस में चढ़ते समय पायदान पर पैर रखते ही हाथ से हैन्डिल छूट गया।

मेरे पुत्र का पैर पायदान में फंस गया और हाथ छूटने के कारण वह घिसटने लगा। दस कदम चलने के बाद लोगों के शोर मचाने पर बस रुकी और जब बच्चे को उठाया, तो उसे खरोंच तक नहीं आयी थी, लोग उस बच्चे को देखकर अचम्भे में रह गये!

इस बच्चे ने एक वर्ष पूर्व ही पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली थी और इसके माता-पिता भी दीक्षित हैं। यह गुरु-कृपा ही थी, कि दुर्घटना होकर भी क्षति टल गई। गुरुदेव हर क्षण हमारी रक्षा करते हैं।
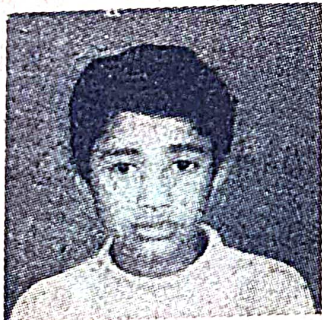
आर० सी० गुप्ता
रामा विहार, दिल्ली

फिर दूर कहीं पायल खनकी

मैं दिल्ली में लकड़ी का कार्य करने वाला एक सामान्य सा व्यक्ति हूं, मैंने आपसे दीक्षा ले रखी है। आपसे दीक्षा लेने के बाद से, मैं एकदम से अपने आप को तनाव मुक्त महसूस करता हूं। एक समय था जब मेरी आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि घर में खाने के लिए भोजन भी नहीं था, जब से आपसे दीक्षा ली और आपके द्वारा बताई गई साधना को सम्पन्न किया, उसके बाद से ही दिनों-दिन मेरी आर्थिक स्थिति सुधरती गयी और मैंने अपने बच्चों की शादी भी बड़ी धूम-धाम से की है।

प्रभु, आपके द्वारा रचित ग्रंथ मैंने पढ़े हैं। उनमें से एक ग्रंथ **''फिर दूर कहीं पायल खनकी''** पढ़ी, वह मुझे अत्यन्त ही अच्छी लगी। उस किताब को लेकर मैं अपने एक परिचित के घर में पहुंचा तो पता चला कि उन्होंने अपना मकान बदल लिया है। वहीं पास में करीब ५०-६० लोग बैठे थे, जो किसी धार्मिक संस्था से सम्बन्धित थे और सत्संग के लिये बैठे थे। मैंने उन लोगों से पूछा— यहां क्या हो रहा है? वे बोले – यहां सत्संग होने जा रहा है। मैं वापिस घर आने के लिए मुड़ा ही था कि उन लोगों के आग्रह पर मैं वहां कुछ देर के लिए बैठ गया।

मैंने देखा कि वे आपस में अपनें-अपने पक्ष को लेकर वाद-विवाद कर रहे थे, प्रत्येक अपने को ज्ञानी सिद्ध करने में लगा हुआ था। फिर उन लोगों ने मुझसे आग्रह किया कि आप भी अपनी संस्था के बारे में बताओ?

मैंने अपनी संस्था **''सिद्धाश्रम साधक परिवार''** के बारे में बताया, और कहा कि हमारे गुरुदेव ने यह किताब लिखी है, उसे पढ़कर मैं आप लोगों को सुनाता हूं, फिर मैंने अपने पास रखी किताब **''फिर दूर कहीं पायल खनकी''** के कुछ पेज पढ़ कर उन लोगों को सुनाया। वे इससे इतने अधिक प्रभावित हुए कि उनके नेत्रों से आंसू वह चले। सभी बहुत ही प्रसन्न थे। मैंने अपनी पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** के बारे में उन लोगों को बताया तो कुछ लोगों ने कहा कि हमारी तो आंखें ही खुल गईं; और उनमें से काफी लोगों ने गुरुदेव का पता लिया। वहां मेरा जो सम्मान हुआ वह सब आपकी ही कृपा का परिणाम है।

श्री रामनिवास
कारपेन्टर, नई दिल्ली-३४

इस मास में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

दिल्ली और इसके आस-पास रहने वाले साधकों एवं शिष्यों के लिये एक नई योजना प्रारम्भ कर रहे हैं, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली **''गुरुधाम''** में ही **पूज्य गुरुदेव** या **श्री राम चैतन्य जी शास्त्री** के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जायेंगी, जो कि उस दिन **शाम ५ से ८ बजे** के बीच सम्पन्न होंगी।

श्रावण मास तो भोले भण्डारी भगवान् शिव का मास है, जो १३-०७-९५ से प्रारम्भ हो रहा है, इस महीने का प्रत्येक सोमवार अद्भुत धन-धान्य, समृद्धि, ऐश्वर्य एवं प्रत्येक मनोकामना को पूर्ण करने वाला है।

साधना में भाग लेने वाले को यंत्र, पूजन-सामग्री आदि गुरुधाम से ही निःशुल्क उपलब्ध होगी (केवल धोती और दुपट्टा अपने साथ लावें या न हो तो यहां से प्राप्त कर लें)–

७ जुलाई ९५ – **षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना**
समस्त प्रकार का ऐश्वर्य प्रदान करने वाली महाविद्या साधना।

१७ जुलाई ९५ – **श्रावण का प्रथम सोमवार – अखण्ड लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग**
नर्मदेश्वर पूजन पूर्ण विधि-विधान युक्त, अखण्ड लक्ष्मी प्राप्ति हेतु।

२४ जुलाई ९५ – **श्रावण का द्वितीय सोमवार – पारदेश्वर शिवलिंग पूजन**
सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ति हेतु सिद्ध, सफल प्रयोग।

२७ जुलाई ९५ – **गुरु पुष्य योग – हरियाली अमावस्या**
स्वयं के तथा पूरे परिवार के सम्पूर्ण स्वास्थ्य एवं रोग मुक्ति के लिये।

३१ जुलाई ९५ – **श्रावण का तीसरा सोमवार – धातु शिवलिंग पूजन**
सम्पूर्ण जीवन में इच्छा पूर्ति हेतु व्यापारिक, आर्थिक समृद्धियुक्त शिवलिंग पूजन, प्रयोग।

७ अगस्त ९५ – **श्रावण का चौथा व अन्तिम सोमवार – ज्योतिर्लिंग शिव पूजन**
पूर्ण रुद्राष्टाध्यायी के साथ सम्पूर्ण अखण्ड आकस्मिक लक्ष्मी प्राप्ति एवं शिव सायुज्य हेतु।

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे–

१. आप अपने किन्हीं भी दो मित्रों या स्वजन को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर प्रत्येक से 180/- रुपये वार्षिक शुल्क तथा 16/- रुपये डाक व्यय इस प्रकार कुल 196/- रुपये प्राप्त कर लें। आप इन दोनों मित्रों का शुल्क (196+196 = 392/-) जमा करा कर, कार्यालय से रसीद प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको साधना-सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क **''नवनिधि प्रदायक कुबेर यंत्र''** दिया जायेगा व उन दोनों सदस्यों को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका निष्ठापूर्वक प्रतिमाह भेजते रहेंगे।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं दो वर्ष की सदस्यता प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको **''नवनिधि प्रदायक कुबेर यंत्र''** उपहार स्वरूप प्राप्त नहीं हो सकेगा।

३. आप यदि किन्हीं कारणों से दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 360/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।

नोट : इस योजना में आप-अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं करा सकते।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

अभी-अभी प्रकाशित

सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने वाले
पूज्य गुरुदेव की लेखनी से लिखे
अद्भुत और अचरज भरे ग्रन्थ

गुरु-गीता

गुरुत्व से सम्बन्धित अनमोल ग्रन्थ, जिसमें सर्म्पूर्ण वेदों और उपनिषदों का सार छिपा है, जिसके पाठ से ही . . .जीवन में सब कुछ प्राप्त हो जाता है . . . फिर उस व्यक्ति के सामने दीनता, दरिद्रता, मलीनता, अभाव, समस्याएं नहीं आतीं. . . क्योंकि इसका पाठ करना ही सम्पूर्णता की प्राप्ति है।

न्यौछावर 96/-

कुण्डलिनी यात्रा – मूलाधार से सहस्रार तक

योग, तंत्र, मंत्र के द्वारा कुण्डलिनी जागरण की क्रिया अधिकांशतः ग्रंथों में वर्णित है. . . इनके द्वारा लोगों ने कुण्डलिनी जाग्रत की भी है . . . किन्तु एक अति प्राचीन पद्धति, जिसका प्रयोग अब केवल शरीर की व्याधियों को समाप्त करने के लिए किया जाता है, अर्थात् "आयुर्वेद" के द्वारा भी कुण्डलिनी जागरण की क्रिया सम्पन्न होती है। इस गूढ़ रहस्य का उद्‌घाटन इस ग्रन्थ द्वारा सर्वथा पहली बार . . . साथ ही उन दुर्लभ,औषधियों का ज्ञान भी . . .

जिनके द्वारा सहज सम्भव है– कायाकल्प, रोग मुक्ति व अनिन्द्य सौन्दर्य की प्राप्ति।

न्यौछावर 96/-

लक्ष्मी साधना

जीवन की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति का आधार . . . चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक . . . मगर किस तरीके से सम्भव है. . . इन्हीं समस्याओं से मुक्ति का उपाय है यह ग्रंथ, जिसके बारे में कहना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है।

न्यौछावर 96/-

परकाया प्रवेश

उच्चकोटि के योगियों द्वारा सम्पन्न होने वाली क्रिया . . . अपने शरीर को छोड़कर अन्य शरीर में प्रवेश कर लेने की क्रिया . . . जो शंकराचार्य ने सम्पन्न की थी . . . एक अद्वितीय ज्ञान का उद्‌घाटन पूज्य गुरुदेव के द्वारा।

न्यौछावर 240/-

श्री गुरु आज्ञा है, कि आप में से प्रत्येक शिष्य इन ग्रंथों को प्राप्त करे

अभी धनराशि मत भेजिये, सम्बन्धित पोस्टकार्ड (पीछे दिया हुआ है) भर कर भेज दीजिये, हम आपको वी०पी० से ये दुर्लभ पुस्तकें आपके दरवाजे तक पहुंचा देंगे।

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

हिप्नोटिज्म. . . वशीकरण. . . आप कुछ भी कहें, यह प्रयोग इतना तीक्ष्ण है, कि सामने वाले को वश में होना ही पड़ता है, चाहे वह देवता हो, अप्सरा हो, प्रेमी हो या प्रेमिका . . .

सम्मोहन प्रयोगान्ते अवश्यं वश्यमेव च।
न रिक्त इत् प्रयोगश्च दुर्लभो प्राप्यते नरः।।

इस प्रयोग का प्रभाव खाली जा ही नहीं सकता, क्योंकि यह दुर्लभ और गोपनीय है तथा पहली बार पत्रिका के पन्नों पर उतारा जा रहा है. . .

जीवन में हर ऋतु आती है और चली जाती है. . . और फिर आती है, लेकिन प्रेम ऋतु जीवन में केवल एक बार ही आती है, जो कि जीवन को रस, सौन्दर्य और आनन्द की फुहार से आप्लावित कर सराबोर कर देती है।

प्रेम कोई शब्द नहीं, अपितु भाव है. . . हृदयानुराग है, जो दैहिक न होकर आत्मिक है, कितनी ही उपमायें, कितने ही प्रेम के पर्याय बने हों, किन्तु द्वापर युग के राधेश्वर अर्थात् श्रीकृष्ण क्या किसी के भी मानस से विस्मृत हो सके? अतः भाव को प्रेम का सार कहा गया है. . . और भाव की पराकाष्ठा की विग्रह स्वरूपा श्री राधा हैं–

ह्लादनी सार ''प्रेम'' प्रेम सार ''भाव'',
भावेर परम काष्ठा नाम ''महाभाव''।
महाभाव स्वरूपा श्री राधा ठकुरानी;
सर्वगुण खानि, कृष्ण कान्ता शिरोमणी।।

श्री राधा-कृष्ण का प्रेम तो विभु अर्थात् सर्वव्यापक है, वह तो निरन्तर, प्रतिक्षण वृद्धि को ही प्राप्त होता है. . . और वह भी नित्य नवीन भाव से।

अस कहि चरण परी अकुलाई।
कहि कहि मेरे प्राण कन्हाई।।

राधा के तो बाहर और भीतर सर्वत्र श्रीकृष्ण ही विद्यमान हैं, जहां-जहां उनकी दृष्टि पड़ती है, वहां-वहां उन्हें श्रीकृष्ण की ही अनुभूति होती है, और इसीलिये वे कृष्णमय कहलाईं. . . और राधा-कृष्ण कोई दो व्यक्तित्व नहीं, वे तो दो होते हुए भी एक ही हैं, यही द्वैत और अद्वैत भाव है, यही निर्गुण और सगुण रूप है. . . और जो इस भाव को समझ सका, वह भव-सागर से पार उतर गया।

कृष्ण के लीलामयी स्वरूप को जान पाना इतना सरल नहीं, क्योंकि कृष्ण ने अपने ही एक मधुर, प्रेममयी, सौम्य स्वरूप को राधा के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत कर, समाज को प्रेम के यथार्थ रूप से परिचित कराया। कृष्ण तो अपने-आप में पूर्ण सौन्दर्य व आनन्द से परिपूर्ण प्रेम के साक्षात् प्रतिरूप हैं, वे ही प्रेमी और वे ही प्रेमिका रूप में हमारे समक्ष विद्यमान हैं, उनकी मनमोहक मुस्कान एवं चित्तचोर छवि का दर्शन कर चराचर-जगत् उनके प्रेम से आविर्भूत हो उठा, इसीलिए कृष्ण स्वयं कहते हैं—

कृष्ण रूप हूं मो कहं जानो,
हम दोउन बिच भेद न मानौ।
इभि जिन तत्त्वज्ञान प्रगटायौ;
अनुष्ठान विधिवत् जिन भायो।।

अर्थात् ''कृष्ण ही राधा और राधा ही कृष्ण हैं, दोनों में कोई भेद है ही नहीं. . . और यही प्रेम की पराकाष्ठा है, चरम परिणति है, जिसे प्राप्त करना पूर्णत्व को प्राप्त करना है, इसलिए प्रेम और कृष्ण दोनों एक-दूसरे के पर्याय माने जाते हैं।''

कृष्ण कोई शरीर मात्र का प्रस्फुटीकरण नहीं, अपितु प्रेम तत्त्व का प्राकाट्य स्वरूप हैं, जिन्होंने साकार रूप में उन गोप-ग्वालों के समक्ष विद्यमान हो, प्रेम के प्रगाढ़तम स्वरूप को प्रतिपादित किया।

प्रेम कृष्ण प्रेमहि श्री राधा, वृंदावन हूं प्रेम अगाधा।
सहचरियन हूं प्रेम स्वरूपा, सिगरहि भजन भगति रति रूपा।।

कृष्ण के अतिरिक्त किसी और में प्रेम को प्रकट करने की सामर्थ्य ही नहीं है. . . और यदि जीवन में प्रेम नहीं, तो फिर जीवन की सार्थकता कैसी? जीवन में प्रेम का आविर्भाव, प्रस्फुटन ही तो जीवन्त जीवन की आनन्दानुभूति है. . . और यही जीवन की सर्वोत्कृष्टता भी है, कृष्ण साकार रूप में उद्घटित हो प्रेमास्पद को प्रेम और सौन्दर्य का रसास्वादन करते हैं। मीरा उनके इसी सौन्दर्यमयी स्वरूप का वर्णन करती हुई कहती है—

बसो मोरे नैनन में नंदलाल।
मोहिनी मूरत सांवली सूरत, नैना बने बिसाल।।
अधर सुधारस मुरली राजती, उर बैजन्ती माल।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत वछल गोपाल।
बसो मोरे नैनन में नन्दलाल।।

कृष्ण के जन्म के अवसर पर ही उनके अप्रतिम रूप-सौन्दर्य का पान कर समस्त ब्रजवासी, गोप-ग्वाले अपनी सुध-बुध खो बैठे थे, और उसी क्षण से ही उनके हृदय में प्रेम का अंकुरण प्रस्फुटित हो गया. . . उनकी नित्य नवीन क्रीड़ाओं व लीलाओं ने सभी के प्राणों को झंकृत कर दिया, जिस प्रेम-रस से आपूरित, मधुरिम संगीत की आवाज सुन राधा भी अपने-आप को न रोक सकीं, और अपने अस्तित्व को उन्हें सौंप पूर्णतः उनमें विलीन हो गईं. . . और उनकी आह्लादिनी शक्ति कहलायीं, क्योंकि शक्तिमान के भीतर ही शक्ति का समाहितीकरण होता है, अतः फिर वे उनकी हृदयगामिनी कहलाईं, क्योंकि यह सम्बन्ध देह का नहीं, प्राणों का है।

अतः प्रेम का यह दार्शनिक रूप प्रेम तत्त्व के गूढ़तम रूप का प्रतिपादन करना मात्र है, क्योंकि कृष्ण ने शक्तिमान और शक्ति की ऐक्यता को उजागर कर प्रेम और प्रेमिका, आत्मा और परमात्मा, गुरु और शिष्य के मध्य की घटना को उद्घटित किया है।

कृष्ण का धरा पर अवतरण ही जीवन को सरस ढंग से जीने, मन में नई हिलोर पैदा करने, जीवन को पूर्णरूप से रसमय तथा मधुरतम बनाने और जीवन्तता प्रदान करने के लिए हुआ. . . और इसी सौन्दर्य, रसमयता, मधुरता व जीवन्तता के प्रतीक हैं श्रीकृष्ण।

जो कृष्णमयी अर्थात् प्रेममय हो गया, जिसने देह से ऊपर उठ कर प्राणों को झंकृत कर, आत्मा रूपी कमलदल की पंखुड़ियों को खोल लिया, उसने तो प्रेम करने की कला ही सीख ली, उसने तो परमात्मा को पा लिया, फिर तो आत्मा और परमात्मा दो भिन्न रूप न होकर, अभिन्न हो गये. . . और यही प्रेममयता ही तो सम्पूर्ण जीवन का रहस्य है।

आज भी कृष्ण का नाम लेते ही लाग अपनी सुध-बुध बिसरा बैठते हैं, अतः इसीलिये शास्त्रों, पुराणों आदि में जन्माष्टमी के पर्व को बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है, क्योंकि प्रेम के मूल अर्थ को समझना है, तो जन्माष्टमी के मूल अर्थ को
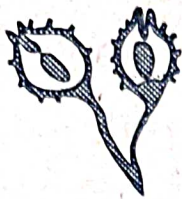
भगवान् श्रीकृष्ण ही प्रेमी हैं, और वही प्रेमास्पद भी . . . प्रेम ही भोक्ता, भोग्य और प्रेरक तीनों रूपों में प्रगट होता है . . . क्योंकि प्रेम ही परिपूर्ण है। प्रेम अपने-आप को सम्पूर्ण करने के सिवा और कुछ नहीं चाहता!

भी सर्वप्रथम समझना आवश्यक होगा, क्योंकि प्रिय मिलन का इससे सुमधुर अवसर तो शायद और कोई नहीं, यही जीवन के आनन्दास्वादन का अवसर है. . . हृदय-कमल में नये प्राण स्पंदित कर प्रेम-वर्षा की रिमझिम फुहार में भीग जाने का अवसर है, यही अवसर है स्वयं निहित शक्ति को प्रस्फुटित करने का; आत्म-पक्ष को चैतन्य कर परम तत्त्व को प्राप्त करने का यही अवसर है, यह जन्माष्टमी मात्र कृष्ण का जन्मोत्सव ही नहीं, वरन् इसे स्वयं के अन्दर आह्लादिनी शक्ति स्वरूपा श्री राधा का समाहितीकरण ही कहा जा सकता है. . . और यह एक हो जाना ही अमरत्व की प्राप्ति कर लेना है, अतः—

प्रेमी भोक्ता सोई रसपाई, प्रेमास्पद प्रिय भोग्य सदाई।
रति स्वरूप इन प्रेरक जानौ, रसन विधान विधायक मानौ।।

प्रेम, प्रेमी और प्रेमास्पद अर्थात् जो रसपान करने वाला अथवा रसपान करने योग्य होता है. . . और इसकी प्रेरणा देने वाला भी प्रेम ही होता है, अतः प्रेम, प्रेमी और प्रेमास्पद अलग नहीं हैं, एक ही हैं।

— किन्तु इस एक होने की प्रक्रिया के पीछे जो गूढ़ रहस्य छिपा है, वह क्या है— यह जानना अत्यन्त जरूरी है, जब तक उस रहस्य का ज्ञान नहीं होगा, तब तक उस जटिल क्रिया को भी समझना असम्भव है, जो कि प्रेम, प्रेमी और प्रेमास्पद के बीच की एक कड़ी है, एक होने का माध्यम है, जिससे कि ये तीनों भिन्न-भिन्न होते हुए भी अभिन्न हैं।

लौकिक दृष्टि से यदि देखा जाय, तो इस अभिन्नता की एकमात्र क्रिया है— **''प्रैक्टिकल सम्मोहन''**, जिसे वशीकरण भी कहा जाता है। एक-दूसरे के प्रति सम्मोहन, एक ऐसा आकर्षण, एक ऐसी चुम्बकत्व शक्ति, जो परस्पर इन्हें जोड़े हुए है, जिसके फलस्वरूप ये कहीं भी, किसी भी प्रकार से अलग नहीं दिखाई देते।

— और न ही ये अलग हैं, क्योंकि इस क्रिया के माध्यम से तथा इस आह्लादिनी शक्ति के माध्यम से, जो प्रेमी और प्रेमास्पद दोनों के अन्दर निहित होती है. . . वह प्रेम छिछलापन या हल्कापन लिये हुए नहीं होता, अपितु गाम्भीर्य युक्त होता है, जो मनुष्य को देव योनि में प्रविष्ट कर देता है, फिर उसका प्रेम साधारण न रहकर दिव्य हो जाता है, फिर उसमें कृष्ण की भांति प्रेम का आदान-प्रदान करने की क्रिया स्वतः ही आ जाती है. . . और तब वह स्वयं कृष्णमय हो जाता है।

आमतौर पर देखा जाता है, कि हल्के स्तर पर या मात्र शारीरिक देह दृष्टि से निकटता या शारीरिक आकर्षण को ही लोग प्रेम के नाम से सम्बोधित करने लगते हैं. . . और तब वह प्रेम नहीं, मात्र एक वासनात्मक आकर्षण अथवा वासनात्मक सम्बन्ध ही कहा जा सकता है. . . जो कि मात्र प्रदर्शन होता है, प्रेम नहीं; यही कारण है; कि उनके व्यवहारिक सम्बन्ध कमजोर पड़ने लगते हैं, उनमें कटुता आ जाती है या सन्देह, भ्रम आदि के कारण उनके प्रेम-सम्बन्धों में दरार पड़ने लगती है. . . और इस तरह अनेक परेशानियां प्रेमी और प्रेमास्पद के बीच दीवार बनकर उनके सम्बन्ध को तोड़ डालती हैं, उनके जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर डालती हैं, किन्तु प्रेम की परिभाषा तो यह है ही नहीं। प्रेम तो वह है, जो नष्ट नहीं करता, अपितु निर्माण करता है. . . नव जीवन का. . . आनन्द का. . . रस का. . . मधुरता का।

— किन्तु इस आनन्द को प्राप्त करने की क्रिया तो केवल कुछ बिरले लोगों तक ही सीमित रह गई, जिन्होंने प्रेम की चरम सीमा अर्थात् उच्चता को प्राप्त कर लिया और प्रेम शब्द को अमर कर, स्वयं भी अमर हो गये।

और वह क्रिया है— एक ऐसी चुम्बकत्व शक्ति, जो प्रेमी और प्रेमिका को दो रहने ही नहीं देती, इस क्रिया के द्वारा वे एक ऐसे तत्त्व में विलीन होते चले जाते हैं, जहां उन्हें स्वयं का भी भान नहीं रहता. . . और ऐसी स्थिति में वह ऐक्य भाव उन दोनों के मध्य एकता स्थापित करने लग जाता है, जिसे प्रेम की प्रगाढ़ता कहा गया है, प्रेम की पूर्णता कहा गया है, ब्रह्मानन्द कहा गया है, दिव्यानन्द कहा गया है. . . ।

— और वह प्राप्त होता है, इस **''प्रैक्टिकल सम्मोहन प्रयोग''** के माध्यम से, जो अपने-आप में एक ऐसा तीक्ष्ण प्रयोग है, जिसे सिद्ध करने पर सामने वाले को वश में होना ही पड़ता है, चाहे वह देवता हो, अप्सरा हो या प्रेमिका . . .

यह इतना जटिल, दुर्लभ एवं गोपनीय है, कि इसका प्रभाव, अचूक, शीघ्र एवं तीव्र फलदायी होता ही है। आपने वैसे तो सम्मोहन, वशीकरण आदि प्रयोग अनेकों किये होंगे, किन्तु यह प्रयोग, जो कि अत्यन्त दुर्लभ है, पहली बार ही आपके समक्ष जीवनोपहार स्वरूप पाठकों के लिये, जो कि इस **'मंत्र-तंत्र-यंत्र**

विज्ञान' पत्रिका के प्रेमी हैं, उसी प्रेम-भाव को द्विगुणित करने हेतु, एक अमोघ अस्त्र स्वरूप अत्यन्त सरल एवं सहज भाषा में इन पन्नों पर प्रस्तुत किया जा रहा है . . . और जब यह क्रिया पूर्ण होगी तो हर कोई राधा और हर कोई कृष्ण बन सकता है, क्योंकि जिसे उस आनन्द को लेने की क्रिया आ जाती है, जो एकाकार होने की क्रिया को समझ लेता है, वह स्वयं में ही देवतुल्य हो जाता है, अतः फिर वही प्रेमी और वही प्रेमास्पद कहलाने लगता है. . . फिर कोई भेद रहता ही नहीं।

प्रयोग विधि

१. इस प्रयोग के लिए विशिष्ट मंत्रों से अभिमंत्रित एवं प्राण-प्रतिष्ठित- **वैदुर्या माला, अलक्ष्यालक्ष्य यंत्र** एवं **विश्रवावेत्वा** की आवश्यकता होती है। अतः साधकों को चाहिये, कि वे पहले से ही इस सामग्री को, जो कि मंत्रसिद्ध हो, मंगवाकर रख लें।

२. इस प्रयोग को सम्पन्न करने की इस वर्ष की विशेष तिथि है— **जन्माष्टमी १८/०८/९५ भाद्रपद कृष्ण पक्ष, शुक्रवार, साधक प्रातःकाल ४ से ७ बजे के मध्य** इस साधना को सम्पन्न करें। यदि किसी कारणवश इस दिन इस प्रयोग को सम्पन्न न कर सकें, तो **३१/०८/९५ भाद्रपद शुक्ल पक्ष, षष्ठी** के दिन भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकते हैं।

३. सर्वप्रथम साधक स्नानादि से निवृत्त होकर, पूजा कक्ष को स्वच्छ एवं सुगन्धित कर, गुलाबी वस्त्र अथवा अन्य सुन्दर, सुसज्जित वस्त्रों को धारण कर, सुगन्धित इत्र आदि लगाकर प्रसन्नचित हो इस प्रयोग को प्रारम्भ करें।

४. पीला आसन बिछाकर, **पूर्व दिशा** की ओर मुख कर बैठ जायें।

५. फिर एक बाजोट पर गुलाबी नया वस्त्र बिछाकर, गुलाब के फूलों को उस पर बिछाकर **गुरु चित्र** तथा **राधा-कृष्ण के चित्र** को उस पर स्थापित करें, तथा एक तांबे या स्टील की प्लेट लें, उसमें चन्दन से अर्द्धचन्द्राकार चिन्ह बनाकर, ''अलक्ष्यालक्ष्य यंत्र'' को स्वच्छ जल से स्नान कराकर स्थापित करें और गुरु चित्र एवं राधा-कृष्ण के चित्र पर भी पुष्पमाला अर्पण करें, यदि सम्भव हो तो गुलाब के पुष्पों की माला चढ़ायें।

६. फिर पंचामृत से यंत्र को स्नान कराकर तथा स्वच्छ जल से उस यंत्र को धोकर कुंकुम, अक्षत आदि चढ़ायें और फिर धूप, अगरबत्ती तथा एक तेल या घी का दीपक प्रज्वलित करें, ध्यान रहे कि यह दीपक पूरे साधना काल में प्रज्वलित रहना चाहिये।

७. साधक **''दैनिक साधना विधि''** पुस्तक में दिये पूजा-विधान के अनुसार संक्षिप्त गुरु-पूजन सम्पन्न करें।

८. इसके पश्चात् **एक माला गुरु मंत्र** का ''वैदुर्या माला'' से ही जप करें।

९. तदुपरान्त ११ माला निम्न मंत्र का वैदुर्या माला से जप सम्पन्न करें।

मंत्र-

ॐ श्रीं ह्रीं सम्मोहनाय फट्

१०. मंत्र-जप की समाप्ति के पश्चात् पुनः एक माला गुरु मंत्र का जप करें।

११. इस मंत्र-जप को पूर्ण करने के पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं यह प्रयोग पूर्ण सम्मोहन क्षमता प्राप्ति के उद्देश्य की पूर्ति के लिए कर रहा हूं, या कर रही हूं और मुझे इसमें सफलता मिले, ऐसा कहकर जल को जमीन पर छोड़ दें, और मंत्र-जप प्रारम्भ कर दें।

१२. मंत्र-जप की समाप्ति के पश्चात् गुरु प्रार्थना कर **गुरु आरती** और **कृष्ण आरती** भी सम्पन्न करें।

१३. प्रयोग समाप्ति के पश्चात् अगली रात्रि को समस्त सामग्री को उसी गुलाबी वस्त्र में लपेट कर किसी नदी, कुएं या तालाब में विसर्जित कर दें।

१४. सामग्री विसर्जन के पश्चात् घर आकर पुनः गुरु आरती सम्पन्न करें।

१५. इसमें खीर का तथा पंचामृत का भोग लगाना चाहिए, और साधना समाप्ति के पश्चात् भोग को स्वयं ही ग्रहण करें।

यह प्रयोग सर्वथा नवीन एवं नूतन है, जो कि पहली बार ही प्रकाशित किया जा रहा है, तथा जिसका प्रभाव अपने-आप में तीक्ष्ण प्रभावकारी है, और यदि प्रेमपूर्वक, पूर्ण श्रद्धा भाव एवं विश्वास से इस प्रयोग को किया जाय, तो पूर्णता प्राप्त होती ही है, यह निश्चित है।

साधना में प्रयुक्त होने वाली सामग्री :
वैदुर्या माला - २१०/-, अलक्ष्यालक्ष्य यंत्र - २४०/-
विश्रवावेत्वा - १५०/-

बम्बई

भारत का विशाल औद्योगिक नगर बम्बई . . . और बम्बई में एक व्यक्ति ऐसा भी है, जो निश्छल और निष्कपट भाव से बराबर संस्था के लिए गतिशील है, उस व्यक्ति का नाम है— **श्री गणेश वटाणी,** जो धुन का पक्का है, वह एक बार जो निश्चय कर लेता है, उसे पूरा करके ही छोड़ता है। पिछले दो वर्षों में उसने यह प्रण ठान लिया था, कि मैं प्रत्येक महीने में शिविर करके दिखा दूंगा। यह प्रण उसने उस समय लिया था, जब 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' धीरे-धीरे करके आगे बढ़ रहा था, जब अलग-अलग क्षेत्रक बन गये थे, अलग-अलग लोगों के टुकड़े बन गये थे, उस समय गणेश वटाणी आगे बढ़ कर खड़ा हुआ और प्रण किया कि— **''गुरुदेव! यदि मैं सही अर्थों में आपका शिष्य हूं, तो हर महीने एक सफल शिविर करके आपको दिखा दूंगा।''**

इसी परम्परा में इस बार भी २८ मई को एस० वी० रोड पर बोरीवली वेस्ट में **''गणेश महालक्ष्मी साधना शिविर''** सम्पन्न हुआ। एक दिन पहले ही **गुरुदेव श्री कैलाश चन्द्र जी** बम्बई पहुंच गये थे और वे 'हरे कृष्ण मंदिर' में ठहरे। यद्यपि प्रत्येक साधक उन्हें अपने घर में ठहराना चाहता था। हवाई अड्डे पर भी बहुत अधिक संख्या में साधक और शिष्य मिल करके गुरुदेव श्री कैलाश चन्द्र जी की जय-जयकार से पूरे आकाश को गुंजायमान कर रहे थे।

प्रातःकाल गणपति प्रयोग सम्पन्न हुआ, और पूरी क्षमता के साथ उस प्रयोग को वैदिक मंत्रों और शास्त्रीय मंत्रों से सम्पन्न कराया। गणेश वटाणी ने अपने भाषण में कहा— ''गुरु छोटा या बड़ा नहीं होता, जिसमें गुरुत्व होता है, वह अपने-आप में पूर्ण गुरु होता है। बड़े गुरुजी ने जिसके आज्ञा चक्र को पूर्णरूप से जाग्रत कर दिया है, वह अपने-आप में पूर्ण गुरु है, क्योंकि बिना तेजस्विता के आज्ञा चक्र जाग्रत नहीं किया जा सकता।''

गुरु सेवक श्रीवास्तव जी तो संस्था के लिए पूर्णरूप से समर्पित हैं, उन्होंने अपने प्रवचन में कहा— ''गुरु अपने-आप में कोई छोटा या बड़ा नहीं होता, उम्र से गुरु को नहीं आंका जा सकता, ज्ञान से आंका जाता है, और इस प्रकार का ज्ञान पुस्तकों के माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकता, इस प्रकार का ज्ञान पाठशालाओं में प्राप्त नहीं किया जा सकता, इस प्रकार का ज्ञान तो ऊर्ध्वपात क्रिया के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है, जिस प्रकार कालीदास को हुआ था।''

सम्पूर्ण विधि-विधान के साथ **राम चैतन्य शास्त्री जी** ने पूज्य गुरुदेव से अनुमति प्राप्त कर प्रयोग प्रारम्भ करवाया, और विशेष मंत्रों का उच्चारण पूज्य गुरुदेव ने इसे सम्पन्न किया। **प्रयोग सम्पन्न कराने के बाद पूज्य गुरुदेव ''कैलाश चन्द्र जी'' ने अपने प्रवचन में कहा— ''मेरे जीवन का उद्देश्य शिष्यों को पूर्णता देना है, उनको अपने-आप में पूर्ण क्षमतावान बनाना है। मैं चाहता हूं, कि उनको साक्षात् अपने इष्ट के दर्शन हों और वे सही अर्थों में साधक बन सकें, शिष्य से आगे बढ़ करके साधक के स्तर तक पहुंच सकें, तो कोई दो राय नहीं, कि उनकी साधना की सफलता में न्यूनता रहे।''**

उसके बाद दीक्षा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और प्रत्येक व्यक्ति ने दीक्षा प्राप्त कर अपने-आप में पूर्णता अनुभव की। ऐसा लगा, जैसे जिस उद्देश्य के लिए वे आये हैं, वे अपने-आप में पूर्णतः प्राप्त हुआ हो। सभी लोगों ने आगे बढ़ कर के दीक्षा प्राप्त की— काम्य दीक्षाएं और अकाम्य दीक्षाएं।

साधना का कार्यक्रम काफी समय तक चलता रहा। गणेश वटाणी ने अंत में सभी साधकों, शिष्यों और सज्जनों को धन्यवाद देते हुए यह घोषणा की, कि प्रत्येक महीने जो मैंने प्रण ठान लिया है, उसी प्रकार से साधना सम्पन्न करवाता रहूंगा, बम्बई के अलग-अलग स्थानों पर, उन स्थानों पर भी, जो कमजोर वर्ग के हैं, उन स्थानों पर

भी जहां गरीब लोग रहते हैं, क्योंकि साधना तो सभी के लिए है।

अंत में पूज्य गुरुदेव ने सभी शिष्यों को आशीर्वाद दिया और कहा— "मैंने पूर्ण विधि-विधान से आप लोगों को दीक्षाएं प्रदान की है। आप लोगों को गोपनीय मंत्र उच्चरित करवाये हैं, साधनाएं बतायी हैं। यदि आप इसी प्रकार से साधनाएं सम्पन्न करते रहेंगे, तो निश्चय ही जब मैं अगली बार आऊंगा, तो आप लोगों के चेहरे पर एक तेज, एक ओजस्विता, एक प्रभामण्डल बन सकेगा। आप एहसास
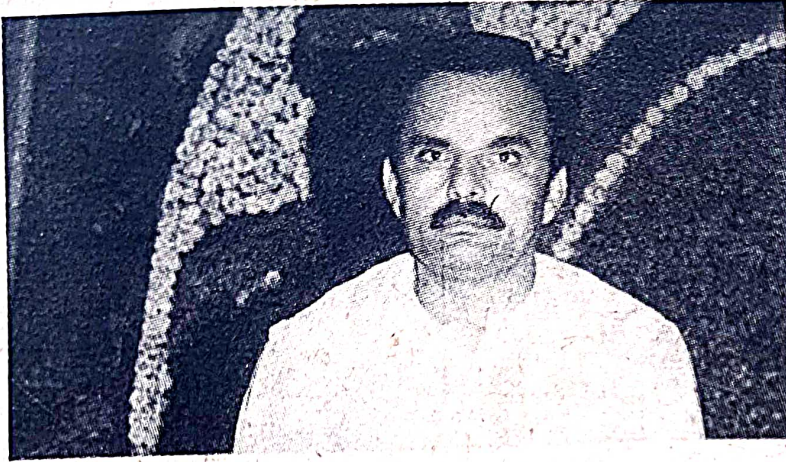
कर सकेंगे, कि वास्तव में साधनाओं में पूर्णता है। और जब आप साधनाओं में सफलता प्राप्त कर सकेंगे, तो मुझे सबसे ज्यादा प्रसन्नता प्राप्त होगी।" गुरुदेव की जय-जयकार से आस-पास का वातावरण गुंजरित हो गया और अत्यन्त भव्य और मधुरता के साथ यह शिविर सम्पन्न हुआ, जिसकी सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की, और एहसास किया कि सही अर्थों में हमें साधना, दीक्षा, मंत्र-जप और गुरुत्व प्राप्त हुआ है।

वास्तव में ही सभी दृष्टियों से देखा जाय, तो यह शिविर अपने-आप में पूर्ण, दिव्य, भव्य, अद्वितीय और श्रेष्ठ रहा, इसके लिये गणेश वटाणी और उनके सहयोगियों का कार्य अपने-आप में सराहनीय था, और एक प्रकार से लोगों ने मन में पूर्णता का अनुभव किया तथा सभी दृष्टियों से यह शिविर सफल और सम्पन्न रहा।

मनाली

हिमाचल की सुरम्य, सुन्दर, अद्वितीय देवताओं की घाटी और उसमें सिद्ध इन्द्र कानन से भी सुन्दर, महत्त्वपूर्ण, आकर्षक और चित्ताकर्षक मनाली, जो मनु की तपस्या स्थली रही है, जो व्यास का उद्गम स्थल रहा है, जो अपने सौन्दर्य से पूरे भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में विख्यात है, जिसका पत्ता-पत्ता अपने-आप में देववाणी का उच्चारण करता है, जिसके लम्बे-लम्बे पेड़ ऐसे लगते हैं, जैसे देवता स्वयं हाथ जोड़ कर खड़े हों, जहां व्यास नदी कलकल की गुनगुनाहट के माध्यम से वेदों का उच्चारण करती प्रतीत होती है . . . और ऐसे ही सुरम्य वातावरण में एक अद्वितीय साधना शिविर का अयोजन करने का निश्चय हुआ।

कुछ दिन पूर्व ही सक्रिय और महत्त्वपूर्ण, पुराने और समर्पित साधक **एम.आर. वशिष्ट** ने पूज्य गुरुदेव "डॉ० श्रीमाली जी" से निवेदन किया, कि काफी समय से आप मनाली पधारे नहीं हैं, आप आयें और कुछ दिन वहां व्यतीत करें, क्योंकि सभी साधक और शिष्य आपके दर्शन करने के लिए आतुर हैं। यद्यपि गुरुदेव का कार्यक्रम अत्यन्त व्यस्त था, फिर भी उन्होंने स्वीकृति दे दी, कि इस बार मैं अवश्य ही आऊंगा।

२१ मई को पूज्य गुरुदेव, माननीया माता जी और छोटे गुरुदेव श्री कैलाश चन्द्र जी तीनों वायुयान से भुन्तर हवाई अड्डे पर उतरे। हवाई अड्डे के बाहर साधक और साधिकाएं खड़ी थीं, चिलचिलाती धूप में भी वे अपने-आप को रोक नहीं पा रहे थे। पुलिस उस रेले को रोकने में समर्थ नहीं हो पा रही थी, क्योंकि यह एक या दो व्यक्तियों की नहीं हजारों साधकों और साधिकाओं के दर्शन करने की व्यग्रता थी, एक एहसास था कि पूज्य गुरुदेव कई वर्षों बाद कुल्लू के भुन्तर के इस हवाई अड्डे पर उतरे हैं, और ज्योंही वे हवाई अड्डे से बाहर आये सैकड़ों फूल मालाओं से उन्हें लाद दिया गया, ऐसा लगा, जैसे वास्तव में ही यहां किसी उत्सव का अयोजन हो रहा हो। ऐसा लग रहा था, जैसे दीपावली सजाई जा रही हो, वहां से पूज्य गुरुदेव कार के द्वारा मनाली की तरफ रवाना हुए, साथ में पन्द्रह-बीस कारें थीं, कुल्लू में एक अत्यन्त समर्पित शिष्य **श्री मोहन** का घर था, उन्होंने अत्यन्त विनम्रता से निवेदन किया, कि पूज्य गुरुदेव सिर्फ पांच-सात क्षणों के लिए मेरे घर आयें, तो मेरा घर धन्य हो जायेगा। पूज्य गुरुदेव ने उनके अनुरोध को स्वीकार किया और उन्होंने बड़े प्रेम से जितने भी साधक थे, उन सबके जलपान की व्यवस्था की।

वहां से पुनः गुरुदेव रवाना हुए और एक घंटे की यात्रा के बाद मनाली पहुंचे। मनाली में उन्हें जरीम होटल में ठहराया गया, जो कि वहां का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होटल है, और इससे भी बड़ी बात यह है, कि उस होटल के मालिक पूज्य गुरुदेव के शिष्य की तरह हैं, शाम को पूज्य गुरुदेव ने कई शिष्यों के साथ पास में ही स्थित हिडिम्बा देवी के दर्शन किये, ये हिमाचल की कुल देवी मानी जाती हैं, और वरदायिका हैं।

दूसरे दिन अत्यन्त सुन्दर और महत्त्वपूर्ण वातावरण में शिविर का आयोजन हुआ, कार से गुरुदेव को लाने व ले जाने की व्यवस्था गुरुदेव के प्रिय शिष्य **"ठाकुर"** ने संभाली, ठाकुर अपने-आप में पूर्ण समर्पित शिष्य हैं। **शिविर के पूरे कार्य का संचालन और जिम्मेदारी तो श्री वशिष्ट जी की थी,** जो उस पूरे हिमाचल में अत्यन्त सम्माननीय दृष्टि से देखे जाते हैं, जिनकी आज्ञा का पालन प्रत्येक शिष्य करता है, और करे भी क्यों नहीं, प्रत्येक शिष्य की यही तो आकांक्षा और इच्छा थी, कि पूज्य गुरुदेव आयें, उनके दर्शन हों, उनके

चरणों को स्पर्श करें।

शिविर के प्रारम्भ में गणपति वन्दन और दीपक प्रज्वलन हुआ। पूज्य गुरुदेव ने बताया, कि यह मनु की तपस्या स्थली है, यह सैकड़ों-सैकड़ों सिद्धों, योगियों, यतियों की तपस्या स्थली है, यह अपने-आप में महत्त्वपूर्ण और उच्चकोटि की तपस्या स्थली रही है। उन्होंने साधना के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

लगभग एक बजे शिविर का पहला सत्र समाप्त हुआ, विश्राम के लिए साधकों को छोड़ दिया गया और शाम का सत्र फिर तीन बजे प्रारम्भ हो गया। **इस सत्र में पूज्य गुरुदेव ने भगवती लक्ष्मी के बारे में पूर्णता के साथ समझाते हुए कहा– ''यहां पर गालव्य ऋषि ने साधना सम्पन्न कर लक्ष्मी को अपने सामने पूर्णता के साथ प्रत्यक्ष प्रकट किया था।''** गालव्य ने किन मंत्रों के माध्यम से इस साधना को सम्पन्न किया था, उस साधना की विधि भी समझायी, और साधकों को वह साधना-क्रिया दी। कई लोग दीक्षा लेने के इच्छुक थे, और सभी लोग चाहते थे, कि पूज्य गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करें। पूज्य गुरुदेव ने उन्हें उनकी मनोवांछित दीक्षाएं भी प्रदान कीं, और कई लोगों ने गुरु दीक्षा प्राप्त कर पूर्णता के साथ अपने-आप को गुरुदेव से जोड़ लिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल गुरुदेव ठीक ९ बजे साधना स्थल पर पहुंच गये, आज चारों तरफ हल्की-हल्की वर्षा की फुहारें चल रही थीं, ऐसा लग रहा था, जैसे अभिषेक किया जा रहा हो। आज के दिन गुरुदेव के प्रवचन का सार था, कि हम अपने जीवन में प्रत्येक दृष्टि से पूर्णता किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं।

वास्तव में ही आज का सत्र अपने-आप में अत्यन्त ही सारगर्भित और महत्त्वपूर्ण था, जिसे प्रत्येक साधक ने सराहा और उस समय व्यवस्था इस प्रकार से की गई थी, कि ज्योंही गुरुदेव का प्रवचन समाप्त हो, त्योंही कैसेट तैयार होकर के टेबल पर लग जाया करती थी, ज्यादा से ज्यादा कैसेट्स लोगों ने लीं, क्योंकि उन सबकी इच्छा यही थी, कि वे बार-बार गुरुदेव की वाणी को सुनें, अपने घर में इस कैसेट को रखें, और ऐसा लगे, हमारे घर में गुरुदेव बैठे हुए बोल रहे हों। लगभग साढ़े बारह बजे के आस-पास बाहर से आये शिष्य अम्बाला से कृष्णा एवं राजेश; आसनसोल से बनर्जी एवं रश्मि; फैजाबाद से श्यामल बनर्जी एवं अर्पिता व अन्तरा और मनाली के शिष्यों के साथ स्नोपोइंट की ओर गये।

वहां से लगभग पांच बजे पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों के साथ सीधे साधना स्थल पर पहुंचे। दीक्षा देने के साथ-साथ गुरुदेव ने उनको यह समझाया, कि इस मानव-जीवन को शीघ्रातिशीघ्र दरिद्रता से मुक्त करना है, दरिद्रता जीवन का अभिशाप है और इस दरिद्रता से मुक्त होना ही अपने-आप में जीवन की पूर्णता है, विश्वामित्र प्रणीत उस मंत्र का भी वर्णन किया, जो अपने-आप में दुर्लभ, अमोघ, अद्वितीय और श्रेष्ठ माना जाता है। साधकों ने पूर्णता के साथ इस प्रयोग को सम्पन्न किया।

शाम को गुरुदेव ने होटल में आकर स्नान किया और अपनी रात्रिकालीन साधना में बैठ गये।

आज तीसरा दिन था और शिविर का समापन दिवस था, पूज्य गुरुदेव ने प्रातःकाल जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने की क्रिया समझायी। यह गोपनीय ज्ञान गुरुदेव ने इतने सहज और सरल तरीके से समझाया, कि लोगों ने पहली बार इस बात को एहसास किया, कि कठिन-से-कठिन विषय को भी गुरुदेव अत्यन्त नम्रता पूर्वक समझा सकते हैं। इसके बाद मध्याह्न काल में शिविर समाप्त हो गया, मगर सभी उदास थे, सभी को लग रहा था, कि पूज्य गुरुदेव आज चले जायेंगे, सभी की आंखें नम थीं।

दो घंटे बाद ही पुनः शाम का शिविर प्रारम्भ हुआ, पूज्य गुरुदेव आज शाम बिलकुल स्वतंत्र रहना चाहते थे, किसी भी प्रकार की साधना नहीं करवाना चाहते थे, परन्तु साधकों के अनुरोध पर उन्हें गणपति-लक्ष्मी की साधना सम्पन्न करवाई, जो वहां के लिए अत्यन्त आवश्यक व दुर्लभ थी, और उस यौवन क्रिया को भी समझाया, जिसके माध्यम से सौन्दर्य, यौवन, बल, ओज, साहस, ताकत, तेजस्विता प्राप्त होती है। इसके बाद आरती सम्पन्न हुई और सभी साधकों ने उस यज्ञ में भाग लिया, और पूर्णाहुति देकर अपने-आप को गौरवान्वित अनुभव किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल गुरुदेव को जल्दी मनाली से रवाना होना था, सुबह करीब आठ बजे गुरुदेव कार से रवाना हो गये और देखा कि बसों में भरकर साधक, गुरुदेव के साथ रवाना हो गये, वे चीख रहे थे– गुरुदेव! मत जाइये, और आवाज दे रहे थे, कि गुरुदेव! एक दिन और रुक जाइये, साधकों ने उनकी कार को घेर लिया और एक मानव श्रृंखला बनाकर खड़े हो गये, कि गुरुदेव! हमें कुचल करके ही जाइये।

गुरुदेव ने नीचे उतरकर उनको समझाया, कि जीवन के और भी कर्त्तव्य हैं, जिनका भी पालन करना आवश्यक होता है। मैं एक बार फिर आऊंगा और आपके साथ कुछ दिन व्यतीत करूंगा। इसके बाद वह काफिला रवाना हुआ और लगभग ११ बजे भुन्तर हवाई अड्डे पर पहुंचा, तो देखा कि उससे भी दुगने साधक पहले से ही उस हवाई अड्डे पर उपस्थित थे। हवाई अड्डे के अधिकारियों ने एहसास किया, कि वास्तव में ही इस प्रकार के शिष्य मिलना अत्यन्त ही दुर्लभ है। गुरु तो यहां सैकड़ों आते हैं, मगर किसी के पास चार शिष्य होते हैं, किसी के पास पांच शिष्य होते हैं, मगर यहां तो सैकड़ों-सैकड़ों शिष्य, साधक और साधिकएं रो रहे हैं, पुकार रहे हैं, एक ही आवाज है– ''गुरुदेव! आप मत जाइये''; गुरुदेव ने पांच दस मिनट उनको समझाया, और अत्यन्त भारी मन से उनको सांत्वना देते हुए बिदा हुए।

इस शिविर में एम०आर०वशिष्ट, मोहन, कर्मदत्त शर्मा, ठाकुर और लगभग सभी शिष्यों ने जितना सहयोग दिया, जितना कार्य किया, जिस प्रकार शिविर को सफल बनाने में योगदान दिया है, वह अपने-आप में अवर्णनीय है, और वास्तव में ही यह शिविर अपने-आप में एक ऐतिहासिक शिविर सा बन गया था, जिसे सभी साधकों ने स्वीकार किया।

❀

आकर्षक योजना
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
१९८१ से प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के कई दुर्लभ अंकों की मांग आप सभी पाठकों द्वारा की गई है। आपकी इस आवश्यकता को ध्यान में रख कर ही हमने इन दुर्लभ अंकों का प्रकाशन किया है। इन्हें प्राप्त करने के लिए आप सिर्फ अपना नाम व पता हमें लिख कर भेज दें, और हम आपको मात्र १००/- में भेजेंगे इन दुर्लभ १२ अंकों का पूरा सेट, इनका संग्रह आप अपने लिए कर सकते हैं और अपने किसी मित्र को उपहार में दे कर उसके जीवन को प्रशस्त करने का मार्ग प्रदान कर सकते हैं ... अब देर नहीं करें—
पुनर्प्रकाशित विशेषांक –
१९९१ का पूरा सेट
१९९२ का पूरा सेट
१९९३ का पूरा सेट
१९९४ का पूरा सेट
१९८६ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८७ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८८ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९८९ के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
१९९० के दुर्लभ अंक (१२ प्रतियां)
इनमें से आप कोई भी १२ अंक अपनी इच्छानुसार हमें लिख भेजें। हां! इतना अवश्य है कि यदि आप एक साथ ६ अंक मंगायेंगे, तो ६०/- देय होगा तथा १२ अंक मंगाने पर मात्र १००/- देय होगा। प्रति अंक १५/- देय होगा।
नोट : पुराने अंक सीमित संख्या में ही उपलब्ध हैं।
मंत्र-तंत्र-यंत्र
मंत्र यंत्र
मंत्र-तंत्र-यंत्र
मंत्र-तंत्र-यंत्र
: प्राप्ति स्थान :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९, फेक्स : ०२९१-३२०१०
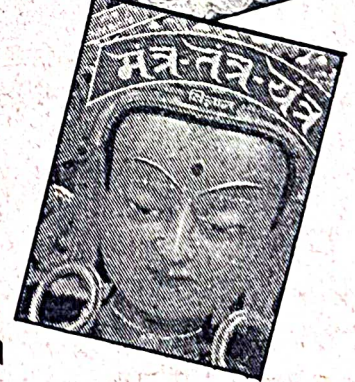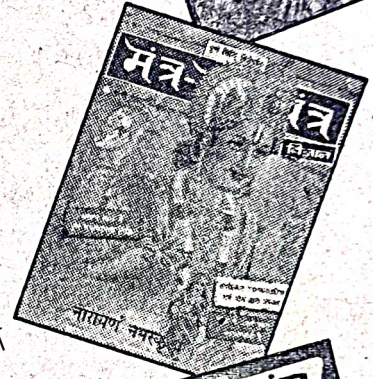
मानव-व्यक्तित्व एक रहस्यमय संग्रहालय

''मानव - मस्तिष्क सदियों से एक रहस्यमय विषय रहा है. . .
''यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे''
इस उक्ति के अनुसार ब्रह्माण्ड में जितनी शक्तियां व्याप्त हैं, वे सभी मानव-शरीर में विद्यमान हैं. . . आश्चर्यजनक है मानव-मस्तिष्क का यह रहस्योद्घाटन, जिसमें कई प्रकार के व्यक्तित्व कार्यशील रहते हैं, जो व्यक्ति को अच्छे-बुरे कर्मों की ओर प्रेरित करते हैं. . . व्यक्ति एक, किन्तु व्यक्तित्व दो. . . एक 'साधु', तो दूसरा 'राक्षस'। . . . और व्यक्ति की पूर्णता के लिए दोनों में सामञ्जस्य स्थापित हो यह जरूरी है . . .''

''मानव-मस्तिष्क में एक ही समय में कई विचार उत्पन्न होते हैं, और उन्हीं विचारों के अनुरूप कई प्रकार के व्यक्तित्व काम करते हैं। यदि इन सभी व्यक्तित्वों में आपसी तालमेल हो और सहयोग हो, तो वे व्यक्ति आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु आपसी असहयोग के कारण व्यक्ति एक विक्षिप्त व्यक्तित्व की तरह बन कर रह जाता है। व्यक्तित्व का परस्पर असहयोग ही कारण होता है, व्यक्ति विशेष के शारीरिक और विशेषतः मानसिक रोगों का।''

उपरोक्त कथन प्रसिद्ध मनःचिकित्सक **''मार्टिन''** का है। अपने इस कथन की पुष्टि उन्होंने अपने एक रोगी के उदाहरण से की है। उन्होंने मानसिक रोग से सम्बन्धित अपनी एक पुस्तक में लिखा है, कि उनके पास एक व्यक्ति आया और कहने लगा– ''मैं जब भी कोई कार्य करने चलता हूं, तो मुझे दो-तीन तरह की आवाजें सुनाई देती हैं और अपने अनुसार कार्य करने की आज्ञा देती हैं; मैं क्या करूं समझ नहीं पाता, लगता है मैं पागल हो जाऊंगा।'' मार्टिन ने आगे स्पष्ट किया है, कि इस व्यक्ति के अन्दर उसके अलावा दो अन्य व्यक्तित्व भी रहते हैं। वह व्यक्ति तो स्वयं एक सामान्य से स्वभाव का ही व्यक्तित्व रखता है, किन्तु उसके अन्दर रहने वाले दो अन्य व्यक्तित्व में से एक ''साधु'' है और दूसरा ''राक्षस''। जब भी वह सामान्य व्यक्तित्व के अनुसार कोई कार्य करने लगता, तो उसके अन्दर निवास करने वाले दोनों व्यक्तित्व अपनी-अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अपना-अपना मत व्यक्त करने लगते. . . और वह व्यक्ति अपने-आप में ही उलझ कर रह जाता। यही कारण था, कि वह व्यक्ति अपने-आप को पागल जैसा समझने लगा।

आश्चर्यजनक है व्यक्तित्व का यह रहस्योद्घाटन, किन्तु इस संसार के अधिकतर व्यक्ति इसी प्रकार के द्वन्द्व में उलझे रहते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर्मन में सदैव दो व्यक्तित्वों के मध्य संघर्ष चलता रहता है। इस बात की पुष्टि विश्व के अनेकों धर्म ग्रंथ भी करते हैं। हमारे भारतीय धर्म साहित्यों के अनुसार– पौराणिक काल में हुआ देवासुर
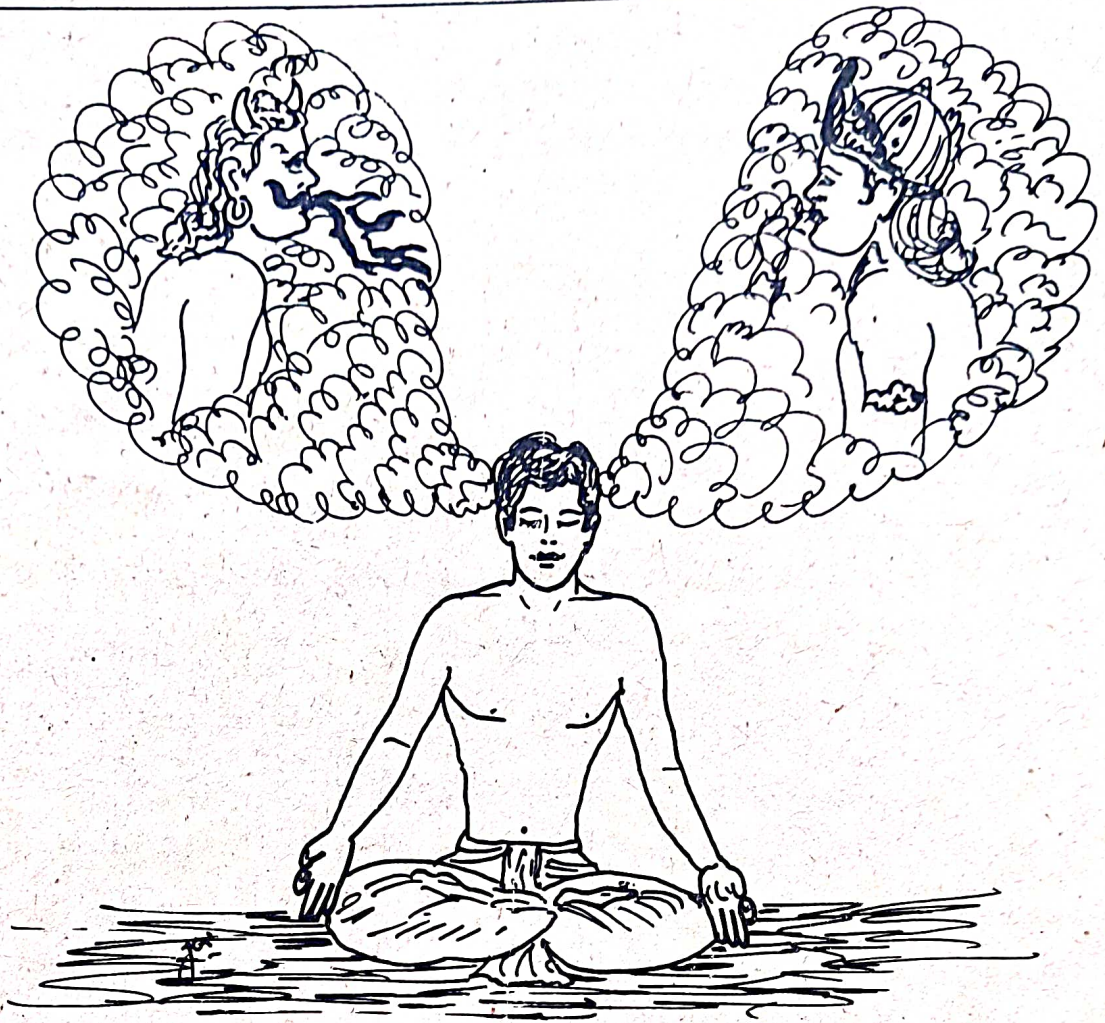
संग्राम इसी बात का द्योतक है। सभी धर्म साहित्य यह स्वीकार करते हैं, कि मनुष्य के शरीर में देवताओं का निवास है और असुरों का भी। इन सभी बातों के पीछे एकमात्र यही बात परिलक्षित होती है, कि प्रत्येक मनुष्य के अंदर दो विपरीत विचारों के व्यक्तित्व रहते ही हैं, और इन दोनों में व्याप्त असमानताएं ही मनुष्य के मस्तिष्क में संकल्प और विकल्प को उत्पन्न करती रहती हैं, जिससे उस व्यक्ति विशेष का व्यक्तित्व अस्त-व्यस्त सा हो जाता है।

अतः स्पष्ट है, कि किसी भी व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है, कि उसके अन्दर रहने वाले दोनों व्यक्तित्वों में पूर्ण सामञ्जस्य की भावना हो, क्योंकि देव और असुर जब तक संग्राम करते रहे, उन्हें स्वयं की हानि के अतिरिक्त और कुछ भी प्राप्त न हो सका, और जब उन दोनों ने एकमत हो समुद्र-मंथन करने की ठानी, तब उन्हें प्राप्त हुआ एक से बढ़कर एक दुर्लभ रत्न, जिसे प्राप्त कर मात्र वे ही नहीं, अपितु आज तक यह सम्पूर्ण पृथ्वी स्वयं को धन्य समझ रही है।

पुराण के इसी कथानक पर आधारित है मनोविज्ञों द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धान्त, कि प्रत्येक शारीरिक और मानसिक व्याधि मस्तिष्क में हो रहे द्वन्द्वों के कारण ही

शरीर की बहत्तर हजार नाड़ियों को स्पन्दित करता मस्तिष्क, जिसमें छिपी हैं अद्भुत शक्तियां– सम्मोहन, विचार संक्रमण, टैलीपैथी, दूरदर्शन . . . और ये सभी शक्तियां मात्र विचारों को तरंगित कर सक्रिय होती हैं . . . तथा इन्हें प्राप्त कर सकता है हर व्यक्ति ध्यान के माध्यम से, साधना के माध्यम से, क्रिया योग के माध्यम से अपने अन्दर उतर करके।

उत्पन्न होती है। मानव को अपने अन्दर हो रहे शारीरिक और मानसिक व्याघातों का अनुभव तो हो जाता है, परन्तु वह यह नहीं जान पाता, कि इसका कारण है– उसके व्यक्तित्व का दो विपरीत भागों में विभक्त हो जाना, जिसके कारण उसमें असन्तोष, डर और चिन्ता का साम्राज्य व्याप्त हो गया है।

मनुष्य के इन व्यक्तित्वों को तीन नामों से सम्बोधित कर समझा जा सकता है– **क्रिया, विचारणा** और **भावना।** जहां इन तीनों में अनुरूपता होने से मनुष्य दिव्य व्यक्तित्व का स्वामी बन सकता है, वहीं इनमें विरोध के कारण, परस्पर अनुरूपता नहीं होने से मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध हो जाता है, उसका बहुमुखी विकास सम्भव नहीं हो पाता है।

साधारणतः इन तीनों में एकता स्थापित नहीं हो पाती है, और प्रायः दो के घटक का युग्म बन जाता है। पहला, प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला व्यक्तित्व, जिसका प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को बोध होता है, जो अत्यन्त आदर्शवादी, चरित्रवान एवं श्रद्धायुक्त हो सकता है, और दूसरा अज्ञात व्यक्तित्व, जिसका बोध सामान्यतः मनुष्य को नहीं हो पाता है, वह दुराग्रही, व्यभिचारी और क्रूर हो सकता है।

उपरोक्त बात अक्षरशः सत्यापित होती हुई दिखाई देती है। व्यक्त व्यक्तित्व के अनुसार वह बहुत ही धर्मात्मा और दान-पुण्य करने वाला तथा परदुःखकातर होता है, और यदि धन, वासना का पंक उसके सम्मुख आ जाय, तो उससे बच नहीं पाता, तथा वह अवश्य ही उस कीचड़ में फंसता है।

ऐसी निकृष्ट क्रिया वह मनुष्य जान-बूझ कर नहीं करता है, किन्तु उसके अन्दर का, अज्ञात राक्षस वृत्ति का व्यक्तित्व उसके सदाचारी व्यक्तित्व पर हावी हो जाता है, और तब न चाहते हुए भी मनुष्य ऐसे कार्य कर बैठता है, जो सामाजिक व नैतिक दृष्टि से सर्वथा अनुचित होते हैं, और तब व्यक्ति को प्रायश्चित करना पड़ता है। बहुत ही अशक्त व असमर्थ-सा हो जाता है मनुष्य, इन दोनों व्यक्तित्वों के संग्राम में फंस कर।

मनोविज्ञान की भाषा में मनुष्य की इस प्रकार की वृत्ति को "डबल पर्सनालिटी" (दोहरा व्यक्तित्व) कहा गया है, और यह भी बताया गया है, कि समस्त मानसिक रोगों का कारण यही होता है।

अब हमारे सम्मुख प्रश्न उठता है, कि द्विमुखी व्यक्तित्व के निर्माण में बाह्य परिस्थितियां कारण हैं या स्वयं मनुष्य?

मनःचिकित्सकों के अनुसार– "द्विमुखी व्यक्ति के निर्माण का ६० प्रतिशत तो मनुष्य स्वयं उत्तरदायी है और १० प्रतिशत बाह्य परिस्थितियां भी, जिनके कारण मनुष्य का व्यक्तित्व छिन्न-भिन्न हो जाता है।"

अध्यात्म तत्त्व वेत्ताओं के अनुसार भी एक शरीर में दो व्यक्तित्वों का रहना अत्यधिक हानिकारक है। उन्होंने इस स्थिति को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है– **"मनुष्य के अन्तःकरण की संरचना दैवी तत्त्वों से होती है, ईश्वर की तरफ से स्नेह, सौजन्य और सद्भाव जैसी सत्प्रवृत्तियां ही उसमें भरी जाती हैं,** जिनके कारण मानव-जीवन को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करने वाली प्रवृत्तियां उत्पन्न होती

गुरु ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने बहुमुखी व्यक्तित्व में निहित सत्प्रवृत्तियों को जाग्रत कर अपने जीवन को एक इन्द्रधनुषी आयाम प्रदान कर सकता है. . . जिसकी अद्भुत छटा में सराबोर हो वह पूर्णता के उच्चतम शिखर को छू लेने में सफल हो जाता है।

रहती हैं, और दुष्प्रवृत्तियों को अन्तःकरण में प्रवेश होने से रोकती हैं, किन्तु दुष्प्रवृत्तियां अपने आक्रामक स्वरूप के कारण मानव के अन्तःकरण में प्रविष्ट हो ही जाती हैं, और तब सत्प्रवृत्तियों और दुष्प्रवृत्तियों में संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है, यही देवासुर संग्राम है, जो प्रत्येक मनुष्य के अन्तःकरण में होता रहता है।

इन दोनों व्यक्तित्वों में होने वाले संघर्ष से मात्र वही मनुष्य नहीं, अपितु उसके आस-पास का क्षेत्र और लोग भी प्रभावित होते हैं। द्वन्द्व तो व्यक्ति विशेष के अन्दर अप्रत्यक्ष रूप से चलता है, किन्तु उसकी प्रतिक्रिया प्रत्यक्ष दिखाई पड़ती है। इसी संघर्षपूर्ण क्रिया का दुष्परिणाम होती हैं– शारीरिक और मानसिक विकृतियां, जो शोक-संताप और रोग-क्लेश के रूप में प्रस्तुत होती हैं।

शरीर शास्त्रियों ने भी एक मनुष्य के अन्दर दो मुखी व्यक्तित्व का होना हानिकारक माना है। न्यूरोसाइकोलॉजी विशेषज्ञ **डॉ० डायमण्ड** के अनुसार– "प्रत्येक मनुष्य की दृष्टि प्रणाली मस्तिष्क के एक विशेष भाग द्वारा नियंत्रित होती है। "सेरिब्रल हेमीस्फेयर" मानव-मस्तिष्क का वह भाग है, जो दृष्टि की क्रिया पर नियंत्रण करता है। मस्तिष्क में इसकी संख्या दो होती है, और दोनों के संयुक्त प्रयास से दृष्टि नियंत्रित होती है, किन्तु किसी-किसी मनुष्य में जब द्विमुखी व्यक्तित्व का विकास हो जाता है, तब दाएं और बाएं सेरिब्रल हेमीस्फियर्स में परस्पर एकरूपता नहीं होने के कारण उन्हें सामान्य मनुष्य की तरह एक नहीं दो भिन्न-भिन्न दृश्य-जगत् का बोध होता है।

अमेरिका के डॉ० डॉक्स और डॉ० जॉनिगा के अनुसार– "मस्तिष्क के दोनों सेरिब्रल हेमीस्फियर्स कभी-कभी अपनी-अपनी तरफ के अंगों को परस्पर विरोधी आदेश देने लगते हैं।" लेख के प्रारंभ में दिया गया उदाहरण इसी प्रकार के निर्देश का प्रतिफल है।

द्विमुखी व्यक्तित्व के मनुष्य की स्थिति दो मुंहा सर्प की तरह होती है। दो मुंहा सर्प के मुंह तो दो होते हैं, किन्तु धड़ एक ही होता है, और परस्पर विरोधी दिशा में गतिशील होने का प्रयास करने में वह अपने धड़ की दुर्गति कर डालता है। इसी प्रकार द्विमुखी व्यक्तित्व का मनुष्य भी अपने आन्तरिक व्यक्तित्वों के संघर्ष में उलझ कर रह जाता है और उसका व्यक्तित्व खण्डित हो जाता है।

इस विवेचना से हमारे समक्ष प्रश्न आता है, कि अन्तर्द्वन्द्वों को किस प्रकार समाप्त किया जाय और किस प्रकार मनुष्य के इन विरोधी व्यक्तित्वों में एकरूपता लायी जाय?

इस प्रश्न के उत्तर में आधुनिक मनोविज्ञान मात्र व्यक्ति की मनोभावनाओं का विश्लेषण कर ही चुप हो जाता है, वह सिर्फ इतना ही बता पाता है, कि किसी व्यक्ति के विचारों में होने वाले द्वन्द्वों के परिणामस्वरूप ही उसकी यह दशा हुई है, किन्तु निदान की बात पर मनोविज्ञान सर्वथा मौन धारण कर लेता है, क्योंकि आधुनिक मनोविज्ञान की पहुंच व्यक्ति के अन्दर तक नहीं है, उसके अन्दर यह क्षमता नहीं है, कि वह व्यक्ति के परस्पर विरोधी विचारों में ऐक्य भाव उत्पन्न कर सके। इस प्रकार आधुनिक मनोविज्ञान इस प्रकार की उलझन से बच निकलने का कोई स्थायी निदान नहीं दे पाता है।

ऐसी स्थिति में ही हमारा ध्यान बरबस अध्यात्म की ओर खिंच जाता है, क्योंकि यह शत-प्रतिशत सत्यापित है, कि जहां विज्ञान की सीमा समाप्त होती है, वहीं से अध्यात्म का प्रारम्भ होता है. . . और जब हम अध्यात्म की ओर आशा भरी निगाहों से देखते हैं, तो हमें इसका समाधान अध्यात्म मनोविज्ञान के अन्तर्गत ही उपलब्ध हो जाता है, जैसा कि पूर्व में ही उल्लेख किया गया है, कि दुष्प्रवृत्तियों के कारण मनुष्य गलत कार्य कर बैठता है, लेकिन सत्प्रवृत्तियों के कारण उसके मन में प्रायश्चित का भाव उत्पन्न होता है, और उसकी आत्मग्लानि उसे परेशान कर डालती है।

इस पर अध्यात्म वेत्ताओं का कहना है– "इस दुःखद स्थिति से बचने के लिए यह आवश्यक है, कि अपने मार्गदर्शक (गुरु) के सम्मुख, व्यक्ति अपने द्वारा की गई गलती को बताकर सहर्ष क्षमा-याचना कर ले, और इसके लिए प्रायश्चित ही वह माध्यम है, जिसके कारण दोहरे व्यक्तित्व से मुक्ति मिल सकती है, और साथ ही सत्प्रेरणाओं को स्वीकार करने का साहस भी प्राप्त होता है, जिसके फलस्वरूप अंतरात्मा की निश्छल भावना और श्रेष्ठ प्रवृत्तियां व्यक्तित्व पर प्रभावी होने लगती हैं, और शनैः-शनैः व्यक्ति अपनी परेशानियों से स्वयं को मुक्त एहसास करने लगता है।"

अध्यात्म वेत्ताओं के इस सिद्धान्त को सभी मनोविज्ञ भी स्वीकार करते हैं, और उनका भी कहना है, कि "मनुष्य का विवेक और आत्म-बल किसी भी प्रकार की विषम परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने में सक्षम है। ईश्वर ने मनुष्य को ऐसी शक्तियां प्रदान की हैं, जिनके द्वारा वह उचित-अनुचित का आकलन कर सकता है, तथा उन सभी सम्भावनाओं से बच सकता है, जो उसके व्यक्तित्व को छिन्न-भिन्न कर सकती हैं।"

बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता और विवेकशीलता के आधार पर अपने अन्दर के सत्प्रवृत्ति वाले व्यक्तित्व को विकसित कर, अपने विचारों को परिष्कृत कर एक श्रेष्ठ मानव बनने में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

एक साधारण मनुष्य से देवत्व की ओर अग्रसर करने में जहां एक मार्गदर्शक या सद्गुरु की बराबर आवश्यकता बनी रहती है, वहीं स्वयं के विवेक का भी पूरा महत्त्व होता ही है। इस प्रकार स्पष्ट है, कि किसी भी विचार या कार्य को अपने विवेक द्वारा परख कर अपनाया जाय, तो "डबल पर्सनालिटी" की समस्या से बचा जा सकता है, और अपने व्यक्तित्व रूपी संग्रहालय को पूर्ण सुरक्षित रखा जा सकता है।

कलौ चण्डी विनायकौ २८.०८.९५

सम्पूर्ण जीवन में धन, मान, ऐश्वर्य, प्रेम, यौवन और सब कुछ प्राप्त करने हेतु अद्वितीय प्रयोग. . . एक ऐसा प्रयोग, जो जीवन की बाधाओं को एक झटके में दूर कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर देता है। अचरज भरी भेंट. . . पाठकों के लिए इस बार इन पंक्तियों में

जो समस्त बाधाओं और परेशानियों से घिरा है, वही मानव-जीवन है, यदि मानस में ईश्वरीय चिंतन का आविर्भाव नहीं हुआ है तो, मानव स्वयं इन दुःखों से मुक्ति पाने में असमर्थ है, वह जितना इनसे दूर होने की कोशिश करता है, उतना ही वह इन झंझावातों में उलझता चला जाता है. . . यही है जन्म-मरण का वह चक्रव्यूह, जिससे मनुष्य का निकल पाना स्वयं उसके लिए एक दुष्कर कार्य है, जब तक कि कोई दैवी शक्ति उसके पास न हो।

दैवी शक्ति ही एकमात्र माध्यम है, उसे इन सभी दुःखों, तकलीफों से छुटकारा

देवी के किसी भी रूप की उपासना की जाय वह लाभदायक होती ही है . . . चाहे वह लक्ष्मी हो या दुर्गा . . . और सिद्धिदात्री दुर्गा का ही नवम् रूप है. . . जो सर्वगुणों की अधिष्ठात्री देवी है अर्थात् समस्त प्रकार की बाधाओं पर विजय प्राप्त करने वाला अप्रतिम, अनूठा प्रयोग . . .

दिलाने का, अन्यथा उसका जीवन एक भार स्वरूप है, जैसे वह अपने ही कन्धों पर अपनी ही लाश को ढोये चला जा रहा हो. . . और उसे न तो अपना मार्ग ही ज्ञात हो और न गन्तव्य ही, कि उसे कहां पहुंचना है।

भौतिक जगत् के प्रत्येक क्षेत्र में, जहां भी कोई समस्या, दुविधा, उद्देश्य की पूर्ति अथवा प्रयोजन होता है— यह दैवी शक्ति अपना प्रभाव निश्चित रूप से दिखाती है, ऐसा कोई कार्य या विषय है ही नहीं, जो देवी साधना द्वारा पूरा न किया जा सकता हो।

विद्वता के दम्भ से ग्रस्त तथा पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित आज के तथाकथित विशिष्ट व्यक्ति साधना, मंत्र-जप आदि पर विश्वास न कर उसका उपहास करते हैं, किन्तु यह मात्र उनका भ्रम ही कहा जायेगा, क्योंकि मंत्रों का प्रभाव उनकी ध्वनि में रहता है, और ध्वनि की उत्पत्ति मंत्र के अक्षरों से होती है, इसलिए सही रूप से विधि-विधान पूर्वक किया गया मंत्र-जप लाभकारी एवं प्रभावकारी होता ही है, इसमें कहीं कोई सन्देह है ही नहीं. . . और यदि उसके लिए कोई विशेष दिन, पर्व या अवसर निर्धारित किया गया हो, तो उस दिन विशेष मुहूर्त में की गई साधना में साधक को सिद्धि प्राप्त होती ही है।

साधना की दृष्टि से शक्ति साधना साधक के लिए सर्वाधिक हितकारी एवं लाभप्रद मानी जाती है। आज भी यह देखने को मिलता है, कि साधकगण अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए, अपनी भावना के अनुसार ही विभिन्न विधियों से देवी की पूजा-आराधना करते हैं। जिस प्रकार ज्ञान, बुद्धि, संगीत, कला आदि के लिए सरस्वती की तथा सांसारिक उपयोगों द्रव्य, सम्पदा आदि की कामना रखने वाले लक्ष्मी की आराधना करते हैं, वैसे ही भय, संकट, रोग आपदा, शत्रु बाधा आदि निवारणार्थ काली की पूजा की जाती है।

यदि व्यक्ति **भाद्रपद कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग** के दिन, जो कि सम्पूर्ण बाधाओं और दुर्भाग्य पर विजय प्राप्त करने का पर्व है, इस **''सिद्धिदात्री प्रयोग''** को सम्पन्न कर ले, तो वह समस्त प्रकार की बाधाओं से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। वे समस्त प्रकार की बाधाएं निम्नलिखित हैं, जो भौतिक जीवन में उन्नति के मार्ग पर अड़चन बन कर व्यक्ति के पांव की बेड़ियां बन जाती हैं, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अपने-आप को अपूर्ण और हीन समझने लगता है, वे इस प्रकार हैं—

१. मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार की व्याधियों, रोग-दोष आदि की सम्भावना रहती ही है।
२. अचानक दुर्घटना आदि से अकाल-मृत्यु हो जाना।
३. मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप निर्धनता है, जो उसको प्रगति की ओर उन्मुख नहीं होने देती।
४. यदि किसी स्त्री या पुरुष के पुत्र न हो, तो वह भी उसके जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य बन जाता है।
५. इस प्रगतिशील युग में सभी आगे बढ़ने की होड़ में एक-दूसरे को पछाड़ते हुए आगे बढ़ना चाहते हैं, ऐसे में शत्रुता अर्थात् शत्रुओं का होना स्वाभाविक है, क्योंकि संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जिसका कोई शत्रु न हो।
६. विवाह करने के पश्चात् भी यह कोई आवश्यक नहीं, कि पति या पत्नी सुयोग्य, सुचरित्र वाली हो।
७. अचानक बनता हुआ काम बिगड़ जाय, तो यह भाग्य का दोष ही कहा जा सकता है।
८. सरकार की तरफ से आने वाली राज्य बाधा।
९. किसी मुकदमे में हार जाना।
१०. व्यक्ति के मन के अनुकूल कोई कार्य न होना।

ऐसी कई परेशानियां हैं, जिनको प्रयत्नपूर्वक दूर करने पर भी मनुष्य विफल ही रहता है. . . और ऐसे में यदि वह इस विशिष्ट प्रयोग को विशिष्ट मुहूर्त में सम्पन्न कर ले, तो अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित कर सकता है, तथा इन उपरोक्त बाधाओं से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है।

दुर्गा के नौ अवतार विशेष रूप से पूजनीय हैं,

और "सिद्धिदात्री" दुर्गा का ही नवां रूप है, जिनकी पूजा-उपासना से दुर्गा की कृपा स्वतः ही प्राप्त हो जाती है, क्योंकि सिद्धिदात्री अपने नाम एवं रूप के अनुकूल ही सर्वगुणों की अधिष्ठात्री देवी हैं, जो साधक को समस्त कार्यों में सिद्धि प्रदान करने वाली हैं।

यदि साधक को किसी साधना में सफलता हाथ नहीं लग रही है, तो इस प्रयोग को सम्पन्न करने के पश्चात् उस साधना में भी उस साधक को सफलता मिलने लग जाती है। इसलिए दुर्गा के इस रूप की उपासना-साधना अपने-आप में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है, जो मनुष्य को, चाहे वह उसका भौतिक पक्ष हो या आध्यात्मिक, सफलता प्राप्त होती ही है।

अतः यह प्रयोग सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ है, इसे हर स्त्री-पुरुष या साधक-साधिका को सम्पन्न करना ही चाहिये, जिससे कि वह जीवन में आने वाली समस्त आपदाओं-विपदाओं पर पूर्णरूप से विजय प्राप्त करते हुए, अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण कर सुख-समृद्धि, धन-धान्य, श्री-वैभव, सम्पन्नता युक्त तथा भय रहित जीवन का भोग करते हुए सौभाग्यशाली कहला सके, क्योंकि यह बाधाओं पर विजय प्राप्त करने का ही पर्व है; जो व्यक्ति को सौभाग्यशाली बना देता है।

१. सर्वप्रथम मंत्रसिद्ध एवं सिद्धिदात्री तंत्र प्रयोग के माध्यम से अनुप्राणित **"दो शर्वाणी गुटिकाएं"**, **"सिद्धिदात्री माला"** एवं **"सिद्धिदात्री यंत्र"** प्राप्त कर लें।
२. **२८.०८.९५** की प्रातः ४ बजे से ७ बजे के मध्य स्नान आदि से निवृत्त होकर, स्वच्छ पीली धोती एवं गुरु चादर ओढ़ कर, पूजा स्थान में पीले आसन पर बैठ जायें।
३. **पूर्व** या **उत्तर दिशा** की ओर मुख करके बैठें।
४. अपने सामने बाजोट पर कुंकुम से एक गोल घेरा (वृत्त) बनायें, इस वृत्त के अन्दर 'सिद्धिदात्री यंत्र' को स्थापित कर दें। वृत्त की दाहिनी ओर रक्त चन्दन से त्रिशूल की आकृति निर्मित करें, इस पर दोनों गुटिकाओं को स्थापित कर दें। माला को तीन आंटे देकर यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें।
५. पूरे साधना काल में तेल का दीपक प्रज्वलित रहना आवश्यक है। आप तिल या सरसों किसी भी तेल का प्रयोग कर सकते हैं।
६. यंत्र स्थापन के पश्चात् संक्षिप्त गुरु-पूजन सम्पन्न करें और **३ माला गुरु मंत्र** का जप करें।
७. गुरु मंत्र-जप के पश्चात् निम्न मंत्र का "सिद्धिदात्री माला" से **२१ माला** जप करें।

मंत्र –

ॐ शं सिद्धिदात्र्यै नमः

८. मंत्र-जप पूर्ण होने के बाद शर्वाणी गुटिकाओं को बाएं हाथ में रखकर दाहिने हाथ से उसे ढक दें, तथा २१ बार गुरु मंत्र से सम्पुटित कर सिद्धिदात्री मंत्र का जप करें, अर्थात् पहले एक बार गुरु मंत्र बोलें, फिर सिद्धिदात्री मंत्र और फिर एक बार गुरु मंत्र बोलें। इस प्रकार से २१ बार मंत्र-जप करना है।
९. अति लघु सी दिखने वाली यह प्रक्रिया अपने-आप में तीक्ष्णतम प्रभाव को छुपाये हुए है।
१०. जब तक आप प्रयोग सम्पन्न न कर लें, तब तक उस दिन अन्न ग्रहण न करें, फलाहार पर ही रहें, तथा सम्भव हो, तो सिर्फ पेय पदार्थ को ही ग्रहण करें।
११. जिस दिन भी आप यह प्रयोग सम्पन्न करें, उसी रात्रि को सम्पूर्ण सामग्री, जो कि इस प्रयोग के लिये प्रयुक्त हुई है, उसे एक कपड़े में बांधकर किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें, और यदि आप प्रवाहित नहीं कर सकते हैं, तो किसी पीपल के वृक्ष के नीचे डेढ़ या दो हाथ गहरा गड्ढा खोद कर इस सामग्री को मिट्टी में दबा दें।
१२. विसर्जन करने के पश्चात् घर लौटने पर, हाथ-पैर धोकर गुरुदेव तथा मां सिद्धिदात्री से इच्छा पूरी होने की प्रार्थना करें। इसके पश्चात् आप भोजन ग्रहण करें।

इस सिद्धिदात्री प्रयोग को सम्पन्न करने पर आपको ३० दिन के अन्दर-अन्दर सफलता प्राप्त होगी ही।

इस साधना में उपयुक्त होने वाली सामग्री –
दो शर्वाणी गुटिका - ७५/-, सिद्धिदात्री माला - १७५/-
सिद्धिदात्री यंत्र - २४०/-

सर्वथा पहली बार प्रकाशित
पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित
ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां
एस-सीरिज के अन्तर्गत ये पुस्तकें. . .
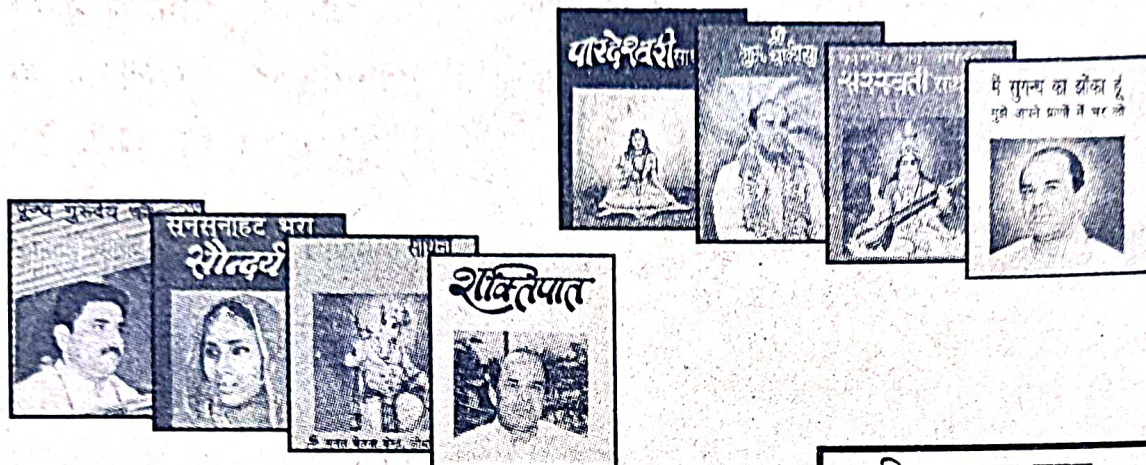
प्रति पुस्तक मूल्य : 5/-

पारदेश्वरी साधना

एक विलक्षण और चैतन्य पुस्तक . . . पारे से धातु परिवर्तन क्रिया की आराध्या "पारदेश्वरी" का पूर्ण साधना विधान . . . गोपनीय, दुर्लभ. . . पहली बार प्रकाशित।

श्री यंत्र साधना

मां भगवती लक्ष्मी का व्रत्य विग्रह "श्री यंत्र" और उससे सम्बन्धित साधना तो विश्व की दुर्लभतम साधना कही जाती है. . . और यही साधना पहली बार।

सनसनाहट भरा सौन्दर्य

सौन्दर्य . . . जीवन की पूर्णता, किस विधि से, किस प्रकार से सनसनाहट भरा सौन्दर्य प्राप्त कर सकते हैं. . . एक जीवन्त कृति।

मैं सुगन्ध का झोंका हूं

गुरु. . . हाड़-मांस का व्यक्ति नहीं, अपितु वासन्ती पवन का झोंका है, जो तन-मन को पुलक से भर दे, जीवन्त, जाग्रत, चैतन्य, सुगन्धित कर दे . . . एक दुर्लभ पुस्तक।

गणपति साधना

समस्त प्रकार के कार्यों, कष्टों, परेशानियों से मुक्त होने व धन-धान्य एवं समृद्धि प्राप्त करने हेतु श्रेष्ठ साधना पुस्तिका।

सरस्वती साधना

स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु एवं बालकों का सर्वांगीण विकास व वाक्सिद्धि के लिए श्रेष्ठतम साधनाएं, प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी।

शक्तिपात

शक्तिपात क्यों, कब और कैसे . . . कुण्डलिनी जागरण किस विधि से . . . जीवन में तनाव मुक्ति सम्भव है? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

बगलामुखी साधना

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकदमे में सफलता तथा सभी प्रकार के विकारों पर विजय के लिए बगलामुखी साधना सर्वोत्तम है, और इसी से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

श्री गुरु चालीसा

नित्य स्तवन योग्य तथा हृदय में गुरु को धारण करने की विधि लिए सुन्दर, मधुर स्तोत्र।

अनमोल सूक्तियां

प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी और आवश्यक . . . श्रेष्ठ पुस्तिका. . . जीवन में पूर्ण सफलता के लिए।

: प्राप्ति स्थान :

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली.110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

जन्म लेने की पुनरावृत्ति . . . लेकिन इस बार अगर्भा . . . मां के गर्भ से नहीं . . . अपितु उसे गुरु जन्म देता है . . . गुरु ही नहीं, सद्गुरु . . . अपने तेजोमय स्वरूप में . . . विलक्षण क्रांति घटित होती है शिष्य के अन्दर . . . ऊर्ध्वपात के वेग से सुसुप्तावस्था में पड़ा बीज उसी क्षण लहलहाते पौधे के रूप में जाग उठता है . . . और यह सामान्य घटना नहीं होती . . . कई-कई जन्मों के पुण्योदय के फलस्वरूप ही ऐसा दिव्य अवसर प्राप्त हो पाता है।

ऊर्ध्वपात जीवन का सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य है, यदि सद्गुरु से प्राप्त हो . . .

दीक्षा, शक्तिपात, ऊर्ध्वपात ये तीनों ही पशुत्व से मानवत्व, फिर मानवत्व से देवत्व की ओर अग्रसर करने के विविध सोपान हैं. . . गुरु और शिष्य के मध्य दिव्यत्व का सम्बन्ध स्थापित करने वाली श्रृंखला की प्रमुख कड़ियां हैं।

युग चाहे कोई भी रहा हो, प्रत्येक युग में मनुष्य का जन्म हुआ ही है. . . और जब मनुष्य उत्पन्न होता है, तो वह मात्र "एक कला" सम्पन्न व्यक्ति ही होता है, उस एक कला के माध्यम से ही वह बड़ा होता है, उसे अपने 'स्व' का बोध होता है, वह समाज में स्वयं को स्थापित करने की क्षमता प्राप्त करता

है; अर्थात् इस समाज में एक मानव रूप में साधारण तरीके से जीवनयापन करने की क्षमता उसे जन्म से ही प्राप्त रहती है, जिसके आधार पर उसे इतना अवश्य ही ज्ञान हो जाता है, कि मैं अपने ही समान एक अन्य प्राणि को उत्पन्न करने में समर्थ हूं। इस एक कला के कारण ही व्यक्ति लगभग सभी सामान्य प्रयास करता है।

— ऐसा तो पशु भी करते हैं, उन्हें भी अनुभव है, उन्हें भी ज्ञान रहता है, कि हमारे अन्दर इतनी क्षमता है, कि अपने समान एक अन्य प्राणि उत्पन्न कर सकते हैं। पशु हो या पक्षी इनका भी एक समाज होता है, और उस समाज में जीवित रहने के लिए, जीवनयापन करने के लिए उन्हें भी संघर्षरत रहना ही पड़ता है, इन्हें भी भूख लगती है, तो खाना-खाने के लिए श्रम करना ही पड़ता है; जब गर्मी, बारिश या ठण्ड का मौसम आता है, तो उससे अपने-आप को बचाने के लिए किसी छाया की तलाश करते हुए ये पशु भी देखे जाते हैं. . . कितनी समानता है पशु और मनुष्य में।

— अंतर है तो केवल मात्र एक ही बात का, कि पशु को यह एहसास नहीं होता है, कि इन क्रियाओं से अलग हटकर कुछ और क्रिया भी सम्पन्न करने जैसी भी बात होती है, किन्तु **मनुष्य को इस बात का पूर्ण ज्ञान होता है, कि उसके अन्दर ऐसी क्षमता भी है, जिसके कारण वह पशु तुल्य जीवन से हटकर, पूर्ण मानव-जीवन और फिर देवतुल्य जीवन भी व्यतीत करने की सामर्थ्य रखता है।**

प्रत्येक मनुष्य के मन में एक तड़प बनी ही रहती है, कि कुछ ऐसा है, जिसकी कमी का एहसास हो रहा है. . . कुछ ऐसा है, जिसे मुझे प्राप्त कर लेना चाहिए. . . कुछ ऐसा है, जो मेरे पास कभी था, अब खो गया है; उसे ही प्राप्त करने की आकांक्षा मनुष्य को चैन से बैठने नहीं देती है. . . और जिसके फलस्वरूप वह अपने इस कुछ को प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरह के प्रयास करता रहता है।

जिन्हें इस बात का एहसास नहीं होता है, कि मेरे पास जो था, वह अब नहीं है।

— आखिर वह क्या चीज है?

— ऐसे व्यक्ति उस खोये हुए कुछ को पाने के लिए विभिन्न भौतिक संसाधनों का प्रयोग करते हैं, और अपने लक्ष्य से भटक कर एक पशु तुल्य जीवन, और कभी-कभी तो एक पशु से भी गया-बीता जीवन व्यतीत करने लगते हैं, किन्तु जिनको इस बात का थोड़ा-सा भी एहसास होता है, कि मेरे मन में जिसे पाने के लिए तड़फ है, बेचैनी है, उसकी प्राप्ति इन भौतिक संसाधनों से नहीं हो सकती है— ऐसे ही प्राणि, ऐसे ही व्यक्ति ईश्वर-चिन्तन करते हैं, मन्दिरों में जाते हैं (चाहे वह किसी भी धर्म से जन्म के कारण जुड़ गया हो, वह उस धर्म से सम्बन्धित पूजा गृह में जाता ही है. . . चाहे वह मस्जिद हो, गुरुद्वारा हो, चर्च हो) विभिन्न तीर्थस्थलों पर जाकर पूजा-पाठ, दान, यज्ञ करते हैं. . . सब कुछ सिर्फ उस कुछ को ही प्राप्त करने के संसाधन हैं, उस श्रृंखला से जुड़ने के ही विविध तरीके हैं, जहां से व्यक्ति बिछुड़ा हुआ है, जहां से बिछुड़ने के कारण ही उसके मन में एक तड़फ बनी हुई है।

जिन्हें पूज्य गुरुदेव ने ऊर्ध्वपात क्रिया सम्पन्न की

तलाश तो हर एक व्यक्ति करता ही है, किन्तु यह आवश्यक नहीं है, कि प्रत्येक व्यक्ति की तलाश पूर्ण हो ही जाय।

जब 'वास्कोडिगामा' ने नई दुनिया की खोज की थी . . . ऐसा नहीं था, कि सिर्फ उसी ने प्रयास किया था, प्रयास तो अनेकों ने किया था, हां! इतना अवश्य हुआ, कि सफलता वास्कोडिगामा को ही मिली. . . और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेने के कारण ही आज वास्कोडिगामा का नाम इतिहास में अंकित है।

उसकी यह खोज भी अपने अन्दर की तड़फ को समाप्त करने के लिए किया गया उसका एक प्रयास मात्र ही था। मार्ग में उसे एक नई जगह, कुछ नये लोग मिले और उसने समझ लिया, कि मेरी तलाश पूरी हो गई . . . हां! इतना जरूर था, कि वह रास्ते में ही एक छोटे-से टीले पर रुक गया, इसके आगे अगर उसने प्रयास किया होता, तो हो सकता था, कि वह अपनी उसी श्रृंखला से जुड़ गया होता, जहां से वह बिछड़ा था।

तलाश तो प्रत्येक व्यक्ति करता ही है, तलाश तो सदैव जारी रहती ही है. . . और इस तलाश के दर्मयान ही कभी-कभार व्यक्ति का जब कई जन्मों का भाग्य उदय होता है, तो मार्ग में उसे गुरु, सद्गुरु प्राप्त हो जाते हैं. . . और जब वह व्यक्ति आगे बढ़कर उनके चरणों को पकड़ लेता है, और अपने मन की भावना उनके सम्मुख व्यक्त कर उनसे मार्गदर्शन प्रदान करने की प्रार्थना करता है, तब सद्गुरु उसे उठाते हैं, और कुछ विशिष्ट क्रियाओं के माध्यम से अपना शिष्य बनने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

— शिष्य बनने की प्रेरणा प्रदान करते हैं, ऐसा इसलिए कहा गया है, क्योंकि शिष्य बनना एक सहज क्रिया नहीं होती है, बहुत ही ज्यादा प्रयास करना पड़ता है, शिष्य बनने के लिए भी. . . और व्यक्ति के इस प्रयास को सार्थक बनाने के लिए गुरु जब पहली बार अपनी ऊर्जा का लघु अंश शिष्य को प्रदान करते हैं, तो वह होती है, उसकी "प्रारम्भिक दीक्षा"।

इस प्रारम्भिक दीक्षा को प्राप्त करने के उपरांत उस व्यक्ति को इस बात का बोध होने लगता है, कि जिसे प्राप्त करने की तलाश में वह भटक रहा था— विभिन्न स्थानों पर, विभिन्न मन्दिरों में, वह भटकाव समाप्त हो गया है, और मुझे सही मार्ग मिल गया है।

इस मार्ग पर जब व्यक्ति गतिशील होता है, तो उसे अवलम्बन के रूप में प्राप्त होता है— गुरु प्रदत्त मंत्र, जिसका अहर्निश जप करते हुए व्यक्ति धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहता है, इस आगे बढ़ने की क्रिया को थोड़ा और तीव्र करने के लिए, तथा साथ ही साथ उस व्यक्ति विशेष के द्वारा पूर्वजन्मों में इस खोज के लिए किये गये प्रयास द्वारा प्राप्त फल को वर्तमान जीवन में प्राप्त करने के लिए क्षमता प्रदान करते हैं, जिसके द्वारा वे फल फलीभूत होकर उस व्यक्ति की क्षमताओं में वृद्धि कर सकें।

इन दोनों कारणों से गुरु अपने शिष्य पर शक्तिपात की क्रिया करते हैं, यह क्रिया जब शिष्य पर सम्पन्न की जाती है, तब शिष्य को इस बात का बोध होता है, कि जिस एक कला को लेकर वह आगे बढ़ता रहा, उससे आगे बढ़कर वह सोलह कला तक पहुंचने की क्षमता भी रखता है।

सोलह कला अर्थात् "पूर्णत्व", सोलह कला अर्थात् "ब्रह्मत्व", सोलह कला अर्थात् "पूर्ण गुरुत्व प्राप्ति", सोलह कला अर्थात् "पूर्ण सिद्धाश्रम प्राप्ति।"

शक्तिपात की क्रिया मात्र एक बार नहीं होती है, यह क्रिया गुरु को बार-बार अपने शिष्य के ऊपर सम्पन्न करनी पड़ती है। इस क्रिया को सम्पन्न करने में गुरु को विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है। सावधानी इस बात की, कि व्यक्ति सामाजिक प्राणि होने के कारण विभिन्न भौतिक इच्छाओं की प्राप्ति की भावना अपने मन से निकाल नहीं पाता, वह इन्हें भी प्राप्त करना चाहता है और अपनी मूल श्रृंखला से भी जुड़ना चाहता है। ऐसी स्थिति में गुरु के द्वारा शक्तिपात के माध्यम से अपनी तपस्या-ऊर्जा शिष्य के शरीर में उतार कर, कुण्डलिनी के अन्तर्गत निहित विविध चक्रों में जिस चक्र पर शिष्य की इच्छा को पूर्ण करने की क्षमता केन्द्रित है, उस चक्र विशेष पर प्रहार करने, शक्ति प्रहार करने और उस चक्र के उस विशेष दल को जाग्रत व स्पन्दित करने की क्रिया सम्पन्न करनी होती है। बहुत ही सावधानी का कार्य होता है, क्योंकि थोड़ी-सी शक्ति शरीर में इधर-उधर हुई, तो लाभ के स्थान पर हानि भी सम्भव है।

पिछले अंक में यह विस्तार से समझाया जा चुका है, कि शक्तिपात के लिए कौन-से बिन्दु होते हैं, इन बिन्दुओं को किस प्रकार चैतन्य किया जाता है, और इनसे किस प्रकार लाभ उठाया जाता है?

— और जब शक्तिपात के विभिन्न चरणों को शिष्य का शरीर आत्मसात् करते हुए पुष्ट होता जाता है, तब उसके अन्दर यह क्षमता उत्पन्न हो जाती है, कि वह "ऊर्ध्वपात की तीव्रता" को सहन कर सके।

जिस प्रकार अन्य धातुओं से मिश्रित स्वर्ण को तपाया जाता है, तो शुद्ध स्वर्ण उन धातुओं से अलग हो जाता, उसी प्रकार शक्तिपात रूपी अग्नि में तप कर साधक के अन्दर का स्वर्ण प्रकट हो उसे कांतिमान बनाता है।

शक्तिपात और ऊर्ध्वपात की क्रिया में मूलभूत अन्तर है। शक्तिपात की क्रिया कोई भी दीक्षा प्राप्त व्यक्ति प्राप्त कर सकता है, किन्तु ऊर्ध्वपात प्राप्त करने की क्षमता व्यक्ति में है या नहीं, इसका निर्धारण गुरु द्वारा ही होता है। इस क्रिया को अच्छी तरह समझने के लिए यदि एक छोटे-से उदाहरण की तरफ ध्यान दिया जाय, तो इसे समझना बहुत ही सहज होगा— "एक बिजली का तार, जो सिर्फ माध्यम होता है एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक विद्युत तरंग पहुंचाने का। अगर हम ध्यान दें, तो हम देखेंगे, कि ये बिजली के तार विभिन्न मोटाइयों के होते हैं, कोई पतला होता है, तो कोई बहुत ही मोटा-सा होता है— ऐसा क्यों?

ऐसा इसलिए है, क्योंकि विद्युत तरंग एक ऊर्जाशक्ति है, और उस ऊर्जाशक्ति को विविध भागों में बांट दिया गया है, यदि

कहीं पर ६० वॉट की विद्युतशक्ति की आवश्यकता होती है, तो उसी के अनुपात में तार का उपयोग किया जाता है, और यदि कहीं १००, २०० या १००० वॉट की विद्युत शक्ति की आवश्यकता होती है, तो उसी के अनुरूप तार का उपयोग किया जाता है।

यहां पर ध्यान देने योग्य बात यह है, कि सामान्यतः विद्युत शक्ति भी एक ही है और माध्यम भी एकमात्र तार ही है, किन्तु ६० वॉट विद्युत शक्ति सहन करने की क्षमता वाले तार में यदि १००० वॉट की विद्युत तरंग प्रवाहित कर दी जाय, तो वह तार जल जायेगा, समाप्त हो जायेगा. . . यही अन्तर है— शक्तिपात और ऊर्ध्वपात में भी।"

क्रिया भी एक ही है, माध्यम भी एक ही है, इस शक्ति को प्रदान करने वाले भी एकमात्र सद्गुरु ही हैं. . . यह सद्गुरु पर निर्भर करता है, कि किसी शिष्य के अन्दर कितने वॉट की विद्युत

दीक्षा चार अक्षरों के संयोग से बना है

द+ ई+ क्ष+ आ

'द'— सद्यः कुण्डली, शिवा, स्वस्तिक, जितेन्द्रिय।

'ई'— त्रिमुखी, महामाया, पुष्टि, विशुद्ध, शांति।

'क्ष'— क्रोध, संहार, महाक्षोभ, भुक्ति।

'आ'— प्रचण्ड, नारायण, क्रिया, कान्ति, मुक्ति।

इन सभी का तेजोमय रूप ही है ''ऊर्ध्वपात''

तरंग सहन करने की क्षमता है।

— और जब उन्हें विश्वास हो जाता है, कि यह शिष्य उस ऊर्जा को अपने शरीर में आत्मसात् करने की क्षमता प्राप्त कर चुका है, तब वे ऊर्ध्वपात की क्रिया द्वारा शक्ति प्रदान करते हैं।

ऊर्ध्वपात के द्वारा या ऊर्ध्वपात प्राप्त शिष्य अत्यधिक तीव्रता से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की क्षमता से युक्त हो जाता है; फिर वह किसी भी लक्ष्य को, चाहे वह भौतिक जीवन से सम्बन्धित हो या आध्यात्मिक जीवन से, अति शीघ्र प्राप्त कर लेता है।

यहां एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है, कि ऊर्ध्वपात प्राप्त करने के उपरान्त उसे कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता है, क्योंकि उसके जीवन में स्वतः ऐसी परिस्थितियां निर्मित होने लग जाती हैं, जिसके द्वारा यदि उसे व्यापार में घाटा हो रहा हो, तो उसकी पूर्ति हो जाती है, और लाभ मिलने लगता है, यदि नौकरी-पेशा व्यक्ति है, तो बिना किसी रुकावट के उसका क्रमिक 'प्रमोशन' होते हुए वह उच्चस्थ पद को प्राप्त कर लेता है; यदि उस व्यक्ति के मन में, चाहे वह पुरुष हो अथवा नारी, यदि अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्त करने की भावना होती है, तो उसके व्यक्तित्व में, उसके रंग-रूप में, उसके सौन्दर्य में क्रमशः तीव्रता के साथ परिवर्तन होते हुए आकर्षक व्यक्तित्व एवं अद्वितीय सौन्दर्य की प्राप्ति हो जाती है; यदि जीवन में बराबर विविध शत्रुओं का भय व्याप्त होता रहता है, तो परिस्थितियां अपने-आप ही इस प्रकार से निर्मित होने लगती हैं, कि ये शत्रु अपनी शत्रुता की भावना को भूलकर उस व्यक्ति के मार्ग से हट जाते हैं; इस तरह की अनेकों उपलब्धियां उस शिष्य को स्वतः ही प्राप्त होने लगती हैं, जिन्हें प्राप्त करने के लिए उसे नहीं के बराबर प्रयास करना पड़ता है।

— और जब यह सब कुछ स्वतः प्राप्त करने की क्रिया बनती है, तो उसे इतना पर्याप्त समय मिल जाता है, कि वह स्वयं को उस श्रृंखला की एक ऐसी सशक्त कड़ी बनाकर जोड़ सके, जो कभी न टूटे. . . और जब वह इस श्रृंखला से टूटेगा नहीं, अपने मूल लक्ष्य से बिछुड़ेगा नहीं, तो निश्चित रूप से उसके मन की बेचैनी, तड़फ समाप्त हो जायेगी।

ऊर्ध्वपात के द्वारा व्यक्ति, जैसा कि पूर्व में बताया गया है, कि जन्म के समय व्यक्ति एक कला प्रधान होता है. . . इस एक कला से आगे बढ़कर वह स्वतः ही पांच कलाओं को क्रमवार रूप से प्राप्त कर लेता है, निश्चित रूप से साधकों एवं पाठकों के मन में यह जिज्ञासा हो रही होगी, कि एक कला से सीधे पांच कला तक प्राप्त कर लेने की क्रिया कैसे सम्भव है?

इस क्रिया को समझाने के लिए भी एक छोटे-से उदाहरण का सहारा लिया जा रहा है— "मनुष्य के शरीर के अन्दर जिस तड़फ की बात अभी तक इस लेख में बताई गई है, वह तड़फ एक छोटा-सा बीज होता है— उस बीज की यह भावना होती है, कि मुझे एक ऐसा वातावरण मिले, जिससे कि मैं अंकुरित हो सकूं, पहले एक छोटे-से पौधे का रूप धारण कर सकूं. . . और धीरे-धीरे एक विशाल वृक्ष बन सकूं; जिसके नीचे बैठकर लोग शीतलता का एहसास कर सकें, तृप्त हो सकें।"

— ऊर्ध्वपात के माध्यम से बीज को वह वातावरण प्राप्त होता है, जिसकी उसे आकांक्षा होती है. . . और जब अनुकूल वातावरण प्राप्त हो जाता है, तो वह बीज अंकुरित हो, एक पौधे का रूप धारण करता है, उस पर छोटी-छोटी कोमल पत्तियां लगती हैं और इस प्रकार निरन्तर वृद्धि की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है उस पौधे में।

अर्थात् बीज एक कला है, बीज का अंकुरण दूसरी कला प्राप्त होना है, पौधे की वृद्धि और उस पर कोमल पत्तियों का लगना तीसरी, चौथी और पांचवीं कला प्राप्त होना है।

❀

व्यावसायिक सूक्तियां

- दूसरों के साथ कम बोलिये, पर ज्यादा सुनिये।

- सुरुचि पूर्ण पहिनावा आपकी आधी सफलता है।

- झूठ मत बोलिये, क्योंकि झूठ ज्यादा समय तक नहीं चलता है।

- आपके चेहरे की मुस्कराहट ही आपके व्यवसाय की सफलता है।

- जिसने भी आपको सहयोग दिया है, उसको धन्यवाद पत्र अवश्य लिखें।

- कभी भी यह मत कहें, कि यह काम मेरा नहीं है या यह कार्य मैं नहीं कर सकता।

- बड़ों से मित्रता हो जाने पर भी छोटों को छोड़ मत दीजिये, या उन्हें तुच्छ मत समझिये।

- कुछ ऐसा कीजिये, जो अगले दस वर्षों बाद भी स्मरण रहे, और आंप उस पर गर्व कर सकें।

- तनाव पूर्ण मत रहिये, हमेशा सहज, सरल बने रहिये, चाहे आपके मन में कितनी ही वड़ी उलझन क्यों न हो।

- घृणा, आतंक या क्रोध की अपेक्षा दूसरों के साथ प्यार भरे वातावरण से ही आप सफलता पा सकते हैं, चाहे वह आपका नौकर हो या चौकीदार।
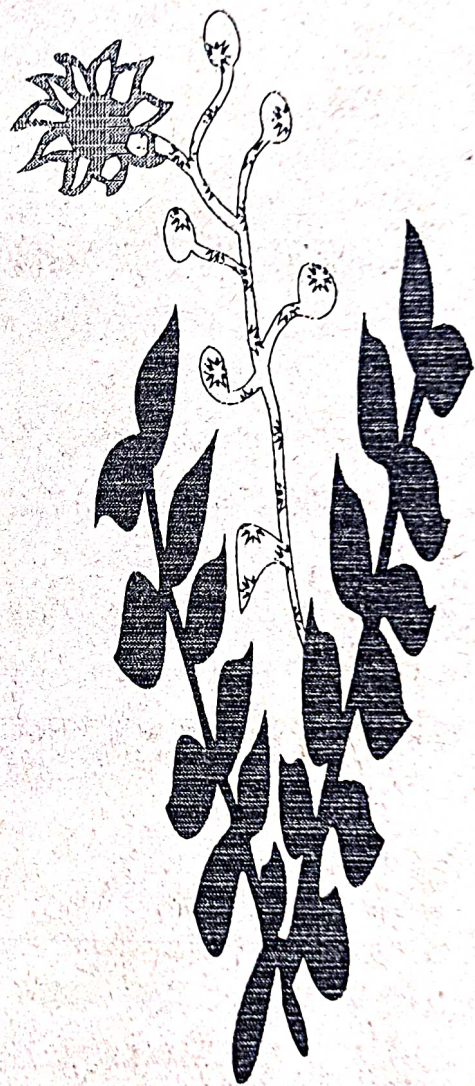
जीवन को परिपूर्ण बनाने हेतु

परम पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी
द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ

❋❋❋

दीक्षा संस्कार

भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से जीवन की पूर्णता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है— दीक्षा द्वारा संस्कारित होना . . . दीक्षा कब, कैसे और क्यों प्राप्त करनी चाहिए . . . प्रस्तुत है इस जिज्ञासा का समाधान
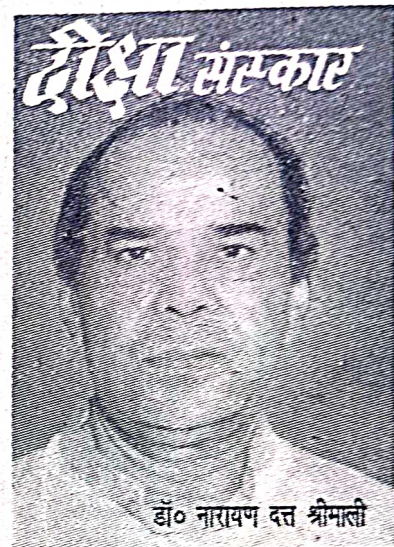
मूल्य प्रति – 15/-

तांत्रोक्त गुरु-पूजन

गुरु को ही जीवन का सार कहा गया है . . . जीवन के प्रत्येक पल पर एक ऐसे मार्ग दर्शक की आवश्यकता पड़ती है, जो उसके जीवन को पूर्णता तक पहुंचा सके. . . फिर वह चाहे भौतिकता की पूर्णता हो या आध्यात्मकिता की। प्रथम बार दुर्लभ, गोपनीय और महत्त्वपूर्ण कलाकृति का सृजन, गुरुदेव को हृदय में धारण करने का दुर्लभ प्रयोग, सिद्धाश्रम प्राप्ति के गोपनीय प्रयोग. . .

मूल्य प्रति – 15/-

सर्व सिद्धि प्रदायक : यज्ञ-विधान

अध्यात्म जीवन का एक ऐसा पक्ष है, जिसे नकारा नहीं जा सकता. . . और इसकी पूर्णता के लिए जहां मंत्र-जप आवश्यक है, वहीं यज्ञों का समावेश होना भी उतना ही आवश्यक है. . . बिना यज्ञ में आहुति दिये साधना की सफलता में संशय रह जाता है. . . उसकी क्रिया को स्पष्ट करता यह एक लघु ग्रंथ, जो प्रत्येक साधक के लिये आवश्यक है।

मूल्य प्रति – 15/-

कृष्णं वन्दे जगद् गुरु
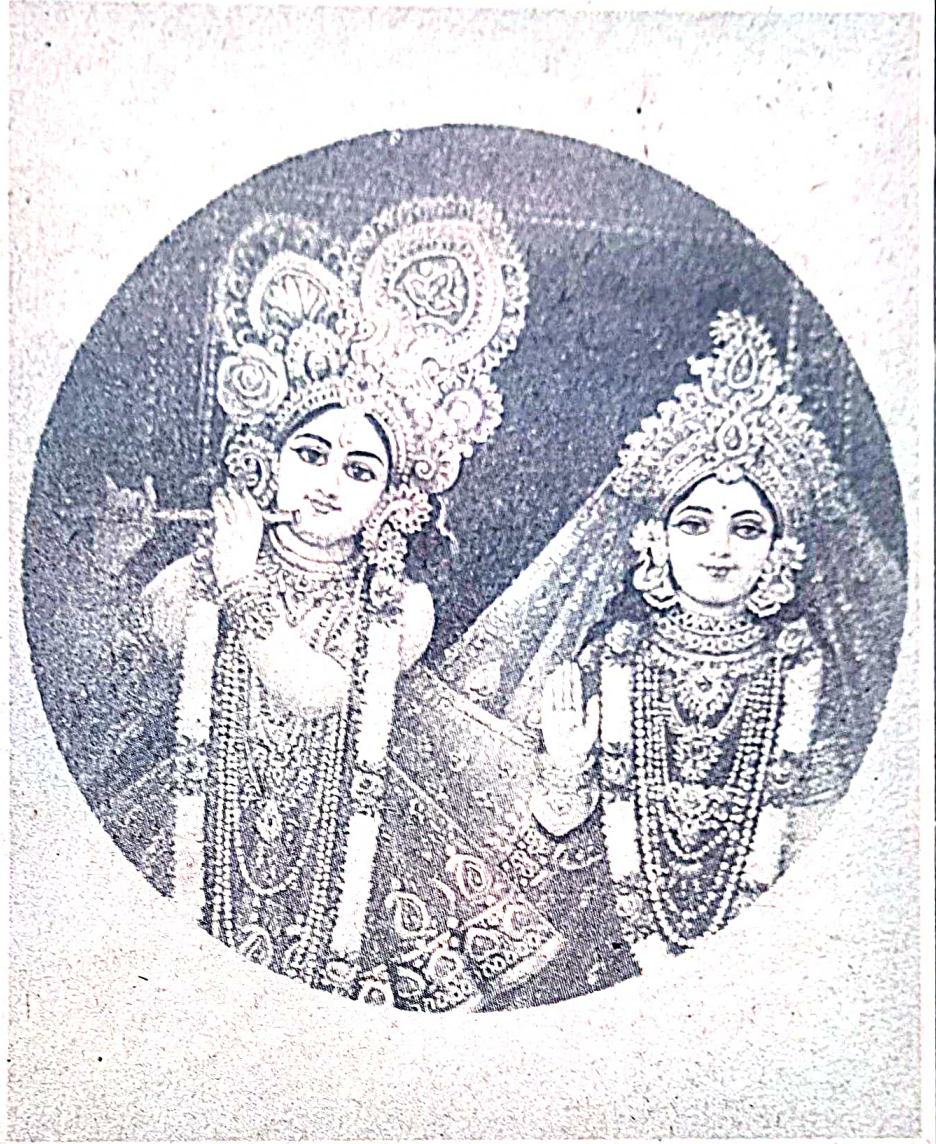
एक अद्वितीय विभूति थे कृष्ण, जिन्होंने समाज को, युग को जीवन पर्यन्त नवीन चेतना प्रदान करने का प्रयास किया. . . ज्ञान की नवीन परम्पराओं को स्पष्ट किया. . . .जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए, जीवन के गूढ़ रहस्यों को उजागर किया।

कृष्ण के नाम से आज समस्त विश्व परिचित है, शायद ही कोई ऐसा व्यक्तित्व होगा जो कृष्ण से परिचित न हो। जन-मानस में जो कृष्ण की छवि है, वह उन्हें ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित करती है, और उनके ईश्वर होने से अथवा उनमें 'ईश्वरत्व' के होने से इन्कार भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि इन कलाओं का आरम्भ ही अपने-आप में ईश्वर होने की पहिचान है, फिर वे तो सोलह कला पूर्ण देव पुरुष हैं। यहां पर "हैं" शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है, क्योंकि
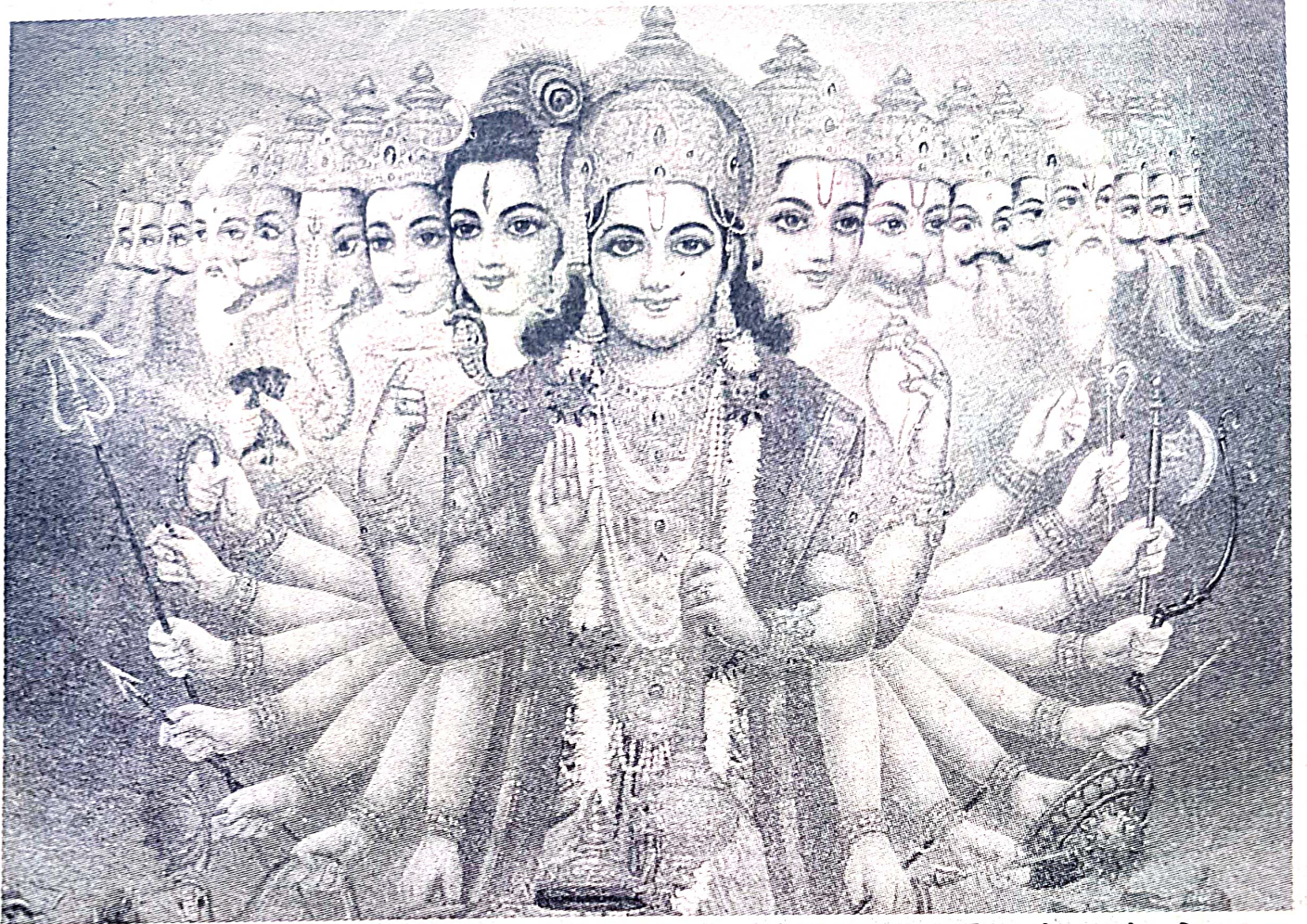
दिव्य एवं अवतारी पुरुष सदैव मृत्यु से परे होते हैं। वे आज भी जन-मानस में जीवित हैं ही।

भिन्न-भिन्न स्थानों पर आज भी **"कृष्णलीला", "श्रीमद्भागवत् कथा"** तथा **"रासलीला"** जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत कृष्ण के जीवन पर तथा उनके कार्यों पर प्रकाश डाला जाता है।

किन्तु सत्य को न स्वीकार करने की तो जैसे परम्परा ही बन गई है, इसीलिए तो आज तक यह विश्व किसी 'महापुरुष' का अथवा 'देव पुरुष' का सही ढंग से आंकलन ही नहीं कर पाया। जो समाज वर्तमान तक कृष्ण को नहीं समझ पाया, वह समाज उनकी उपस्थिति के समय उन्हें कितना जान पाया होगा, इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है।

सुदामा जीवन पर्यन्त नहीं समझ पाये कि जिन्हें वे केवल मित्र ही समझते थे, वे कृष्ण एक दिव्य विभूति हैं, और उनके माता-पिता भी हमेशा उन्हें अपने पुत्र की ही दृष्टि से देखते रहे, तथा दुर्योधन ने उन्हें हमेशा अपना शत्रु ही समझा। इसमें कृष्ण का दोष नहीं कहा जा सकता, क्योंकि कृष्ण ने तो अपना सम्पूर्ण जीवन पूर्णता के साथ ही जीया, कहीं वे "माखन चोर" के रूप में प्रसिद्ध हुए, तो कहीं "प्रेम" शब्द को सही रूप में प्रस्तुत करते हुए दिखाई दिए।

कृष्ण के जीवन में राजनीति, संगीत जैसे विषय भी पूर्णरूप से समाहित थे, और जब उन्होंने अपने जीवन में अध्यात्म को उतारा, तो उतारते ही चले गए और सोलह कला पूर्ण होकर "पुरुषोत्तम" कहलाए। जहां उन्होंने प्रेम, त्याग और श्रद्धा जैसे दुरूह विषयों को समाज के सामने रखा, वहीं जब समाज में झूठ, असत्य, व्यभिचार और पाखंड का बोलबाला बढ़ गया, तो उस समय वे एक वीर पुरुष की तरह सामने आए। महाभारत युद्ध के दौरान जिस प्रकार से कृष्ण ने युद्धनीति, रणनीति तथा कुशलता का प्रदर्शन किया, वह अपने-आप में आश्चर्यजनक ही था।

कुरुक्षेत्र युद्ध के मैदान में जो ज्ञान कृष्ण ने अर्जुन को प्रदान किया, वह अत्यन्त ही विशिष्ट तथा समाज की कुरीतियों पर कड़ा प्रहार करने वाला है। उन्होंने अर्जुन का मोह भंग करते हुए कहा—

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषते।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।।

''हे अर्जुन! तू कभी न शोक करने वाले व्यक्तियों के लिए शोक करता है, और अपने-आप को विद्वान भी कहता है, परन्तु जो विद्वान होते हैं, वे जो जीवित हैं उनके लिए और जो जीवित नहीं हैं उनके लिए भी, शोक नहीं करते।'' इस प्रकार जो ज्ञान कृष्ण ने अर्जुन को दिया, वह अपने-आप में प्रहारात्मक है और अधर्म का नाश करने वाला है।

कृष्ण ने अपने जीवन काल में शुद्धता, पवित्रता एवं सत्यता पर ही अधिक बल दिया, अधर्म, व्यभिचार, असत्य के मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक जीव को उन्होंने वध करने योग्य ठहराया, फिर वह चाहे परिवार का सदस्य ही क्यों न हो, और सम्पूर्ण महाभारत एक प्रकार से पारिवारिक युद्ध ही तो था।

कृष्ण ने स्वयं अपने मामा कंस का वध कर, अपने नाना को कारागार से मुक्त करवा कर उन्हें पुनः मथुरा का राज्य प्रदान किया, और जब वे युवावस्था में आए, तो शिशुपाल का वध किया, और निर्लिप्त भाव से रहते हुए कृष्ण ने धर्म की स्थापना कर सदैव सुकर्म को ही बढ़ावा दिया।

कृष्ण का यह स्वरूप समाज स्वीकार नहीं कर पाया, क्योंकि इससे उनके बनाए हुए कानून, जो कि स्वार्थ को बढ़ावा देने वाले थे, उन पर सीधा आघात था। समाज की झूठी मर्यादाओं को खंडित करने का साहस कृष्ण के बाद कोई दूसरा पुरुष नहीं कर पाया, क्योंकि जिस मार्ग पर कृष्ण ने चलना सिखाया, वह अत्यन्त कंटकाकीर्ण तथा पथरीला मार्ग है, और उस पर चलने का साहस वर्तमान तक भी कोई नहीं कर पाया। इन्होंने अपने जीवन में सभी क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए वीरता को, कर्मठता को, सत्यता को विशिष्ट स्थान प्रदान किया।

कृष्ण ज्ञानार्जन हेतु सांदीपन ऋषि के आश्रम में पहुंचे, तब उन्होंने अपना सर्वस्व समर्पण कर ज्ञानार्जित किया, गुरु सेवा की, साधनाएं कीं, और साधना की बारीकियों व अध्यात्म के नये आयाम को जन-सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया। यह तो समय की विडम्बना और समाज की अपनी ही एक विचारशैली है, जो कृष्ण की उपस्थिति का सही मूल्यांकन न कर पाया।

कृष्ण के जाने के बाद ही भक्ति युग का प्रारम्भ हो गया और समाज ने समस्त ज्ञान-चिन्तन को स्वार्थ की चादर में लपेट दिया। कृष्ण के रोचक प्रसंगों को सुना-सुना कर, उन्हें धन-प्राप्ति का एक जरिया बना दिया।

भक्ति का तात्पर्य तो यह होना चाहिए, कि भक्त अपने इष्ट के इतना निकट आ जाए, कि दोनों एकाकार हो जाएं, द्वैत भाव समाप्त होकर अद्वैत की स्थिति का निर्माण हो; जैसा कि मीरा ने किया, जैसा कि चैतन्य महाप्रभु ने किया। ये लोग निरन्तर कृष्ण की भक्ति भावना में निमग्न रहते हुए कृष्ण से एकाकार हो गये, उन में द्वैत न होकर अद्वैत का भाव प्रबल हो गया, किन्तु इनके बाद के काल में कोई दूसरा कृष्ण-भक्त ''कृष्ण'' नहीं बन सका, क्योंकि इस समाज ने भक्ति के विकृत रूप को अपनाया। भक्ति की निश्छलता को कायरता में, उदासीनता में, कर्महीनता तथा अकर्मण्यता में परिवर्तित कर दिया, जिसे प्राप्त कर समस्त विश्व अधर्म, असत्य और पाखंड के दलदल में धंसता चला गया।

आज विश्व में खाली भक्ति की, भक्ति के नाम पर दिखावे की तथा भक्ति की आड़ लेकर स्वार्थ सिद्धि की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है, तो भक्ति रस में डूब कर कुछ कर दिखाने की, समाज में गहराई तक बैठी असत्य तथा पाखंड युक्त परम्पराओं को तोड़ने की, कृष्ण ने जिन मार्गों को अपना कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करने की बात कही है, उन मार्गों को जीवन में अपनाने की, क्योंकि केवल जोर से जय-जयकार करने से, भक्ति का प्रदर्शन करने से अथवा बड़े-बड़े तिलक लगाकर भिक्षा मांगने से ही भक्ति सिद्ध नहीं होती, यह तो भक्ति की विकृत अवस्था है।

यह कृष्ण भक्तों के जीवन की सार्थकता होगी कि वे उनके पद-चिन्हों पर चलें, उन मार्गों पर चलें, जिन पर कृष्ण ने स्वयं चलकर अपने-आप को सोलह कला पूर्ण बनाया, और **वह मार्ग है साधना का, तप का, संयम का, त्याग का . . . और यह मार्ग पथरीला तथा कांटों भरा अवश्य है, लेकिन जिस स्थान पर जाकर यह मार्ग समाप्त होता है, वह स्थान है ''सिद्धाश्रम''।**

सिद्धाश्रम का अर्थ ही जीवन की पूर्णता है, सिद्धाश्रम का अर्थ ही सोलह कलाओं में पूर्ण होना है और सिद्धाश्रम ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है।

कृष्ण की प्रमुख इच्छाओं में से एक इच्छा यह थी, कि वे किसी प्रकार सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकें, और वे अपनी इस इच्छा पूर्ति के लिए रुके नहीं, उन्होंने अथक प्रयास कर अपनी साधना के बल पर सिद्धाश्रम में प्रवेश प्राप्त किया. . . और आज वे सिद्धाश्रम में श्रेष्ठ और उच्चकोटि के योगी के रूप में विद्यमान हैं, जिन्हें विश्व **''जगद्गुरु''** के रूप में स्वीकार करता है। वे जगद्गुरु थे, आज भी हैं और आने वाले युगों में भी रहेंगे, तभी तो इन्हें **''कृष्णं वन्दे जगद्गुरु''** कहा गया।

जिसकी प्रत्येक प्रति हाथों-हाथ बिकी
अत्यधिक मांग की वजह से दोबारा प्रिंट कराना पड़ा
परम पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी
द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ

निखिलेश्वरानन्द स्तवन

जो एक स्तवन ही नहीं शब्दों के माध्यम से ब्रह्म को व्यक्त करने का प्रयास है, सद्गुरुदेव के ओर-छोर को नाप लेने का प्रयास है . . . जिसका पाठ करते ही स्वतः ध्यान की क्रिया आरम्भ हो जाती है, समाधि की भाव-भूमि स्पष्ट होने लगती है और सिद्धियां तो मानों हाथ जोड़ कर सामने खड़ी हो जाती हैं. . . तभी तो यह मात्र स्तवन नहीं काल के भाल पर लिखी अमिट पंक्तियां हैं, आप सब के द्वारा नित्य पठनीय एवं श्रवणीय . . . एक अद्भुत और अनोखा संकलन . . .

मूल्य प्रति 96/-

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र
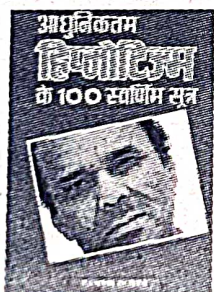
जिससे कली-कली भी खिल उठती है. . . पूर्ण सौन्दर्य, तेज से आपूरित ज्ञान, जिसके माध्यम से दूसरों पर प्रभाव डालकर अपने जीवन को तो सुगम बनाया ही जा सकता है, साथ ही स्वयं को सम्मोहित करके भी अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण किया जा सकता है, तो क्यों न हम आज ही प्राप्त कर लें. . .

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र

जो भरा है पूर्ण ज्ञान के भण्डार से, जिसके माध्यम से आप भी अपनी आंखों में अग्नि भर सकते हैं, जिसके तेज से इस्पात भी पिघल जाता है. . . और साथ ही यह अपने में समेटे हुए है सम्मोहन चिकित्सा. . . सम्मोहन सिद्धियां. . . सम्मोहन रहस्य जिससे असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है. . . दृढ़ निश्चयी, चमत्कारी पुरुष बना जा सकता है. . . सम्पूर्ण यौवन की तृप्ति एवं आत्मविश्वास की वृद्धि से इच्छित कार्यों को पूर्ण करने का सरल, सुगम और अत्यन्त तीव्र वशीकरण प्रयोगों से युक्त यह अविस्मरणीय ग्रंथ. . .

दूसरों के मन की वात जान लेना तथा समस्त प्रकार की समस्याओं का निवारण करने का एकमात्र विज्ञान. . . जो अपने-आप में वरदायक बनकर आया है पहली वार. . .

मूल्य प्रति – 30/-

प्राप्ति स्थान

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी ऐश्वर्य सिद्धि पर्व का पावन दिवस दीपमालिकाओं की झिलमिलाहट को समेटे हुए सम्पूर्ण धरा को अपनी जगमगाहट से आलोकित करने आ गया है।

बहुत ही भव्यता और दिव्यता से इसका स्वागत प्रत्येक को प्रति वर्ष अपने घर-आंगन में करना ही चाहिये। इस पर्व को साधक को एक उत्सव के रूप में मनाना ही चाहिये, जिससे कि ऐश्वर्य लक्ष्मी एक नयी-नवेली दुल्हन की तरह पूर्ण श्रृंगार युक्त हो सदा के लिये उसके घर-आंगन में स्थायित्व प्राप्त कर सके, अतः उसे उस दिन स्वयं नये वस्त्र धारण करने चाहियें, विविध प्रकार के पकवान बनाने चाहियें. . . साधक के पास आनन्द प्रदर्शन करने का जो भी साधन हो उन सभी का प्रयोग इस पावन पर्व के स्वागत के लिये करना चाहिये। ये सारी क्रियाएं तो भारतीय नागरिक करता ही है, किन्तु जो साधक हैं, उनके लिये तो यह **'ऐश्वर्य लक्ष्मी पर्व'** प्रति वर्ष एक नूतन साधना, एक नूतन रहस्य अपने-आप में समेटे हुए ही आता है।

— और जो पूज्यपाद गुरुदेव के शिष्य हैं, वे प्रयास करके गुरुदेव के पास इस उत्सव को पूर्णता के साथ सम्पन्न करने के लिए आते ही हैं, कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि किन्हीं कारणों वश कई साधक-साधिकाएं गुरुधाम न पहुंच पायें, ऐसी स्थिति में उन्हें नैराश्य से बचाने के लिए गुरुदेव प्रति वर्ष लक्ष्मी के एक विशिष्ट स्वरूप की साधना पत्रिका के माध्यम से प्रदान करते ही हैं, पूर्ण विधि-विधान के साथ जिस किसी भी साधक ने इन साधनाओं को सम्पन्न किया है, निश्चित रूप से उसने स्थाई सफलता प्राप्त की ही है।

हम सभी साधकों के जीवन में गुरुदेव के द्वारा प्रज्वलित साधना, वह भव्य दीप है, जिसके माध्यम से हमारे जीवन में आह्लाद, उमंग, उत्साह की झिलमिलाहट हर पल बिखरती ही रहती है।

इस वर्ष ऐश्वर्य लक्ष्मी के पावन पर्व पर पूज्यपाद गुरुदेव ने एक अति विशिष्ट प्रयोग प्रदान किया है, वह है— **''ऐश्वर्य सिद्धि प्रयोग''**, नाम मात्र पढ़कर इसकी विशिष्टता का एहसास तो आपको हो ही गया होगा, किन्तु **जब आपको यह ज्ञात होगा, कि गुरुदेव ने जिस विशिष्ट नक्षत्र-मुहूर्त में इस प्रयोग को सम्पन्न करने की आज्ञा प्रदान की है, वह है— ४-६-६५ ऐश्वर्य-लक्ष्मी पर्व, और वर्षों के बाद ऐसा शुभ मुहूर्त हमें प्राप्त हो रहा है, तो निश्चित रूप से आप सोचेंगे कि हमें इस ऐश्वर्य प्रदायक प्रयोग से अपने-आप को वंचित नहीं करना चाहिये, क्योंकि इस जन्म में पुनः यह नक्षत्र, यह मुहूर्त, यह प्रयोग हमें प्राप्त नहीं हो सकेगा, क्योंकि इस प्रकार**

का ऐश्वर्य लक्ष्मी पर्व पूरे १४४ वर्षों के उपरान्त आया है।

इस बात से तो आप परिचित हैं ही, कि विशेष समय पर किया गया कार्य अत्यधिक फलदायी होता है. . . और समय के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए हमें इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए हर हालत में समय निकालना ही है।

ऐश्वर्य लक्ष्मी पर्व के इस विशिष्ट मुहूर्त में सम्पन्न किये गये प्रयोग के माध्यम से लक्ष्मी को बाध्य होना ही पड़ता है, हमारे घर-आंगन में श्री, वैभव और समृद्धि बिखरते हुए विचरण करने के लिए, हमारे जीवन को प्रकाशवान करने के लिए, ऐश्वर्यवान बनाने के लिये।

यों तो ऐश्वर्य लक्ष्मी का यह पर्व पूर्ण समृद्धि प्रदायक है ही, क्योंकि इस विशिष्ट पर्व पर भगवती महालक्ष्मी पूर्ण षोडश श्रृंगार युक्त हो वसुन्धरा पर पदार्पण करती है. . . और उसके पदार्पण से ही यह पृथ्वी पूर्ण समृद्धि शालिनी बन उठती है।

लक्ष्मी के स्वरूप से तो प्रत्येक व्यक्ति परिचित है ही, और ऐसी स्थिति में उसके स्वरूप का वर्णन करना ठीक वैसा ही है— जैसे यह कहना, कि दोपहर में सूर्य का तेजस्वी अस्तित्व होता है।

शास्त्रों में कहा गया है, कि लक्ष्मी जहां निवास करती है, वहां लक्ष गुण रहते ही हैं। लक्ष्मी का प्रभाव क्षेत्र अति विस्तृत है, किसी भी देश के, किसी भी व्यक्ति के जीवन में, किसी भी क्षेत्र को यदि देखा जाय, तो लक्ष्मी का प्रभाव दृष्टिगोचर होता ही है— आवास, भोजन, वस्त्र, वाहन, पत्नी, पुत्र, भूमि, व्यवसाय, दान, पुण्य, यज्ञ, तीर्थ यात्रा, परोपकार या अन्य सामाजिक कृत्य, कार्य कोई भी हो, सब का आधार लक्ष्मी ही है।

कहा भी गया है—

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः,
सः पण्डितः सः श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः;
सर्वेगुणाः कांचनमाश्रयन्ति।।

अर्थात् "जिस व्यक्ति के पास वित्त, धन, लक्ष्मी हो, वही मनुष्य कुलीन है, पण्डित है, गुणी है, वक्ता है, दर्शनीय है, कहने का तात्पर्य है, कि जो लक्ष्मी पति है, वह सर्वगुण सम्पन्न है, सभी लोग उसी की पूजा और प्रशंसा करते हैं।"

यों तो लक्ष्मी जगत्जननी है। 'विष्णु पुराण' के अंतर्गत वर्णन आता है, कि इस सृष्टि में जो कुछ भी स्त्रीवाची है, वह सब श्री लक्ष्मी जी ही हैं, इनसे भिन्न कोई वस्तु नहीं है। लक्ष्मी के दो स्वरूप वर्णित हैं— "श्री" रूप और दूसरा "लक्ष्मी" रूप। प्रथम स्वरूप में ये श्री नारायण के वक्षस्थल में निवास करती हैं, तथा दूसरा रूप इनका भौतिक अर्थात् प्राकृतिक सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी के रूप में है। लक्ष्मी की प्राप्ति मनुष्य को पूर्व कर्मों व प्रारब्धों के आधार पर होती है, फिर भी जो व्यक्ति इनकी साधना-उपासना करते हैं, उन्हें भी निश्चित रूप से लक्ष्मी की प्राप्ति होती ही है, फिर उनके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता है, उन्हें सम्पूर्ण ऐश्वर्य की प्राप्ति होती ही है।

ऐश्वर्य लक्ष्मी का पूजन इस विशिष्ट मुहूर्त में करने का विधान निम्नवत् है—

प्रयोग विधि—

१. ऐश्वर्य लक्ष्मी पर्व के दिन **सायं ६ बजे से रात्रि ३ बजे के मध्य** कभी भी यह प्रयोग प्रारम्भ कर सकते हैं।

२. ऐश्वर्य लक्ष्मी का यह पावन पर्व दिनांक **४-९-९५ भाद्रपद शुक्ल पक्ष, सोमवार** को है। यदि किसी कारणवश इस दिन यह प्रयोग न कर सकें, तो अन्य किसी भी बुधवार के दिन इसे सम्पन्न कर सकते हैं।

३. जब भी आप इस प्रयोग को प्रारम्भ करें, उससे पूर्व स्वच्छ जल से स्नान कर पीली धोती धारण करें और गुरु चादर को ओढ़ लें।

४. **पूर्व** या **उत्तर दिशा** की ओर मुख कर प्रयोग करें।

५. पीला आसन बिछायें तथा लकड़ी की चौकी पर भी पीला वस्त्र बिछा कर उस पर किसी प्लेट में कुंकुम से **"श्रीं"** बीज मंत्र अंकित कर **"लक्ष्मी चित्र"** व **"ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र"** को स्थापित करें।

६. यंत्र स्थापन से पूर्व साधक घी का दीपक प्रज्वलित करें, जो कि पूरे साधना काल में जलता रहना चाहिये। धूप, दीप, पुष्प, अक्षत के माध्यम से संक्षिप्त पूजन कर **३ माला गुरु मंत्र** का जप करें।

७. गुरु चित्र, लक्ष्मी चित्र व यंत्र पर सुगन्धित पुष्पों की माला, यदि सम्भव हो तो गुलाब की पुष्पमाला अवश्य चढ़ायें।

८. लक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करें, सर्वप्रथम लक्ष्मी के चित्र व यंत्र पर कुंकुम, अक्षत आदि चढ़ाकर निम्नलिखित पूजन सम्पन्न करें—

ध्यान —

कान्त्या काञ्चन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुभिर्गजैः,
हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मयामृत घटैरासिच्यमानां श्रियम्।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां;
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दश्रियम्।।

विनियोग –

ॐ अस्य श्री ऐश्वर्य महालक्ष्मै मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः मम सर्व ऐश्वर्य प्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

अंगन्यास –

ॐ ह्रां	-	हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं	-	शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं	-	शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं	-	कवचाय हुं।
ॐ ह्रौं	-	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः	-	अस्त्राय फट्।

करन्यास –

ॐ ह्रां	-	अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ ह्रीं	-	तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूं	-	मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्रैं	-	अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रौं	-	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रः	-	ॐ करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

आवाहन –

श्री ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि।
आसन के लिए पुष्प चढ़ावें

पाद्य, अर्घ्य –

श्री ऐश्वर्य महालक्ष्यै नमः पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं समर्पयामि।

स्थान –

ॐ आदित्यवर्णा तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्व।
तस्यफलानि तपसानुदंतु मायांतरायाश्चबाह्याअलक्ष्मीः।।
पत्र पुष्पं समर्पयामि ॐ ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नमः।

गन्ध –

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
गन्धं समर्पयामि ॐ ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नमः।

पुष्प –

ॐ आप सृजन्तु स्निधानि चिक्लीत वसमे गृहे।
निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।
पुष्पाणि समर्पयामि ॐ ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नमः।

दीप –

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीं।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
दीपंदर्शयामि ॐ ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नमः।

नैवेद्य –

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
नैवेद्यं निवेदयामि ॐ ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै नमः।

९. इस प्रकार पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् मंत्र-जप प्रारम्भ करें।

१०. इस प्रयोग में मंत्र-जप करने के लिए **''स्फटिक की माला''** का प्रयोग किया जाता है, जिसके प्रत्येक मनके को ऐश्वर्य लक्ष्मी के मंत्रों से चैतन्य एवं अभिमंत्रित किया गया हो।

११. कुल ११ **माला मंत्र-जप** करने का विधान है।

मंत्र -

''ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐश्वर्य महालक्ष्म्यै पूर्ण सिद्धिं देहि देहि नमः।''

१२. मंत्र-जप की समाप्ति के पश्चात् श्रीं बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए **''१०८ कमल बीजों''** के द्वारा अग्नि में आहुति प्रदान करें, इन कमल बीजों का भी ऐश्वर्य लक्ष्मी प्रदायक तांत्रोक्त मंत्रों से समवर्द्धित होना आवश्यक है।

१३. **गुरु आरती** तथा **लक्ष्मी आरती** सम्पन्न करें।

१४. अगले दिन रात्रि में यंत्र, माला का संक्षिप्त पूजन कर उसे बाजोट पर बिछे वस्त्र में ही लपेट कर नदी में प्रवाहित कर दें। घर लौटने के पश्चात् हाथ-पैर धोकर साधना कक्ष में आसन पर बैठ जायें और ११ बार गुरु मंत्र का उच्चारण करें, फिर १ माला ऐश्वर्य लक्ष्मी मंत्र का उच्चारण करें, पुनः ११ बार गुरु मंत्र का उच्चारण करें। इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है।

प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात् मात्र २५ दिनों के अन्तर्गत ही अपने जीवन में प्रत्येक प्रकार से प्राप्त होने वाले ऐश्वर्य, समृद्धि, सम्मान, सम्पन्नता को देखकर आप स्वयं आश्चर्यचकित रह जायेंगे।

साधना में प्रयुक्त होने वाली साधना-सामग्री :
ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र - २४०/-, स्फटिक माला - ३००/-
एक सौ आठ कमल बीज - १०१/-

अपनों से अपनी बात . . .

- पत्रिका केवल कागज के पन्ने नहीं है, अपितु शास्त्रों का निचोड़ है, हमारी थाती है, हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिये "दीप स्तम्भ" है, एक महीने में एक नया सदस्य बनाने पर भी उतना ही पुण्य मिलता है, जितना भारत के समस्त तीर्थों में स्नान करने से पुण्य प्राप्ति होती है।
- आजीवन सदस्य (7777/- रुपये) बनने पर पत्रिका को तो बल मिलता ही है, आपको भी जीवन भर **"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान"** पत्रिका निःशुल्क प्रदान करते हैं, और समय-समय पर विशेष उपहार भी।

  यह धनराशि आपकी है, आपकी धरोहर धनराशि है, आप जब भी आजीवन सदस्य न रहना चाहें, तो रजिस्टर्ड डाक से प्रमाण सहित इस आशय पर हमें पत्र लिख भेजें, पत्र प्राप्ति के ठीक दस वर्ष बाद आपको, आपकी धरोहर धनराशि लौटा दी जायेगी, इस धरोहर धनराशि पर किसी प्रकार का कोई ब्याज देय नहीं होगा।
- जहां-जहां **"शिविर"** आयोजित होते हैं, उन शिविरों की पूरी जिम्मेवारी स्थानीय आयोजकों की होती है, तथा साधकों से प्राप्त शिविर-शुल्क, यंत्र, माला, पुस्तक बिक्री एवं अनुदान-सहयोग प्राप्ति की धनराशि भी आयोजकों के पास ही रहती है, वे ही संग्रह करते हैं, और वे ही हिसाब-किताब रखते हैं, **"केन्द्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार"** का इस सम्बन्ध में कोई लेना-देना या स्वार्थ नहीं होता।
- दिल्ली गुरुधाम में गुरुदेव से मिलने का शुल्क या गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले छोटे-छोटे साधना शुल्क से प्राप्त धनराशि गुरुधाम आश्रम कराला के निर्माण में सहयोग के रूप में व्यय होती है, इस धनराशि से गुरुदेव या उनके परिवार से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं होता।
- **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली फाउण्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट सोसायटी (रजिस्टर्ड)** भारत सरकार से मान्यता प्राप्त ट्रस्ट है, जो आयकर से मुक्त है, इसके अन्तर्गत धनराशि प्राप्त होने पर सम्बन्धित व्यक्ति को पक्की रसीद देते हैं, हर साल इसका ऑडिट होता है, तथा धनराशि सिद्धाश्रम (कराला) निर्माण एवं सामाजिक कार्यों में व्यय होती है, व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये इसका किंचित मात्र भी उपयोग नहीं होता।
- समय-समय पर सदस्यता वृद्धि के लिये जो उपहार-प्रपत्र पत्रिका में प्रकाशित होते हैं, वे पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर नियमों के अन्तर्गत ही प्रकाशित होते हैं, और वे नियम उपहार प्राप्त करने वाले पर लागू रहते हैं।
- हमारे यहां किसी भी प्रकार की तांत्रिक क्रियाएं सम्पन्न नहीं होती और न नैतिक नियमों के विरुद्ध ही कोई कार्य होता है, गंडे, ताबीज आदि देने का कोई प्रावधान यह संस्था नहीं करती। व्यक्ति या साधक अपने किसी विशेष कार्य के लिए अनुष्ठान सम्पन्न कराते हैं, और धनराशि देते हैं, तो उनके कहने पर योग्य पण्डितों द्वारा अनुष्ठान सम्पन्न कराया जाता है, तथा प्रदत्त धनराशि को पूजन-सामग्री एवं पण्डितों की दक्षिणा आदि पर व्यय कर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त भी यह ध्यान रहना चाहिए, कि अनुष्ठान, श्रद्धा एवं विश्वास पर आधारित होता है, कार्य में सफलता-असफलता की पूर्ण जिम्मेवारी अनुष्ठान कराने वाले की ही होती है, और पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत होती है, इस सम्बन्ध में उन्हें उपरोक्त शर्तें मान्य हों, श्रद्धा एवं विश्वास हो, तभी अनुष्ठान सम्पन्न करावें।
- पत्रिका में नैतिक या सामाजिक नियमों के विरुद्ध कोई लेख प्रकाशित नहीं होता, पर कुछ भ्रष्ट, अधकचरे व्यक्ति अपने-आप को तांत्रिक या 'गुरुदेव के शिष्य' कह कर सामाजिक नियमों के विरुद्ध कार्य, ठगी या गलत कार्य करते हैं, उनकी कठोरतम शब्दों में यह संस्था निन्दा करती है, और इस सम्बन्ध में वे भ्रष्ट व्यक्ति स्वयं ही उस कार्य के जिम्मेवार हैं।
- भारत में कई स्थानों पर ठग या धूर्त व्यक्ति अपने-आप को **पूज्य श्रीमाली जी का शिष्य कह कर,** दीक्षा देकर धन प्राप्त करते हैं, वे ठग हैं, धूर्त हैं, समाज के प्रत्येक व्यक्ति और शिष्य को अधिकार है, कि ऐसे धूर्तों का पर्दाफाश करे . . . इनमें से कई लोग प्रचारित करते हैं, कि हमें गुरुदेव ने आज्ञा दे रखी है, या हमें अधिकृत किया है, या हमें गुरुदेव से गुप्त संदेश प्राप्त होता है, या हमारे शरीर में गुरुदेव आते हैं. . . यह सब झूठ है, मक्कारी है, छल है, ठगी है, ऐसे लोगों से सावधान रहना एवं उनका पर्दाफाश करना प्रत्येक व्यक्ति एवं शिष्य का कर्त्तव्य है।
- यह संस्था दीक्षा देती है, पर दीक्षा देने का तात्पर्य यह नहीं, कि उसका वह कार्य तुरन्त सम्पन्न हो ही जाय, यह तो साधक की श्रद्धा एवं विश्वास पर आधारित है। दीक्षा से सम्बन्धित कार्य देर से भले ही हो, पर होता अवश्य है। यदि उसमें श्रद्धा, विवेक एवं विश्वास हो।

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. 13, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली से प्रकाशित।

इस मास का

श्रेष्ठतम उपहार

प्रत्येक शिष्य, साधक और अध्येता को,

जो पूज्य गुरुदेव में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखते हैं,

सिद्धाश्रम के सिद्ध योगियों से आशीर्वाद युक्त
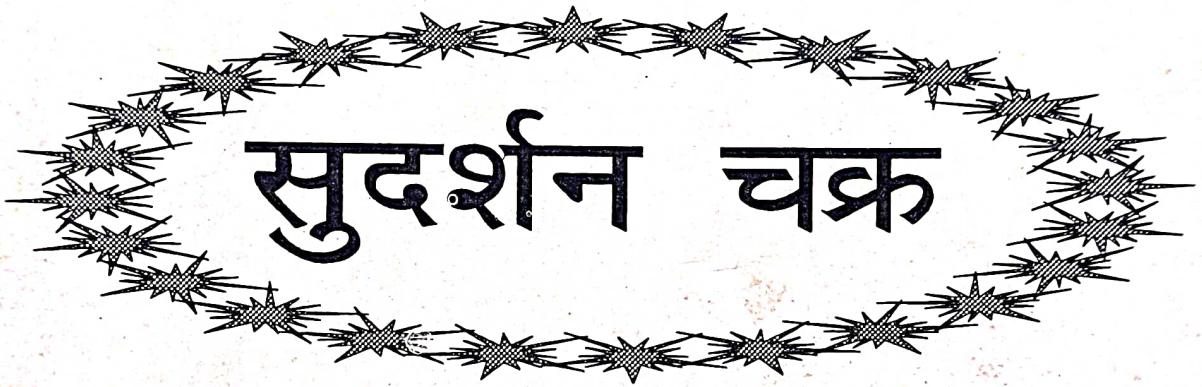
(गले में धारण करने योग्य)

समस्त प्रकार की आपदाओं, विपत्तियों,
बाधाओं, कष्टों, अकाल-मृत्यु निवारण तथा
परिवार के समस्त सदस्यों की पूर्ण सुरक्षा हेतु

एक अद्वितीय उपहार

सुदर्शन चक्र

आप क्या करें–

आप पत्रिका में दिया हुआ पोस्टकार्ड भली प्रकार से भर लें . . . यदि आप सदस्य हैं, तो किसी मित्र या स्वजन का पूरा पता एवं नाम भर कर हमें भेज दें, पोस्टकार्ड प्राप्त होने पर हम आपको 180/- रुपये पत्रिका सदस्यता शुल्क + 16/- रुपये वी० पी० पी० चार्ज इस प्रकार मात्र 196/- की वी० पी० पी० से **'सुदर्शन चक्र'** भेज देंगे, और यह यंत्र आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जायेगा। वी० पी० पी० छूटने पर आपके मित्र को अगले महीने से एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर रसीद आपको भेज दी जायेगी।

नोट :
- इस योजना का लाभ केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्य ही ले सकते हैं।
- **इससे आप अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं कर सकते।**

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत।

: प्राप्ति स्थान :

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

रजिस्ट्रेशन नं० ५५७६१/९३ A.H.W. पोस्टल-डी.एल.नं० १६०५२/९३

चरैवैति नव सुप्रभातम्

चरैवैति नव सुप्रभातम् आपके भाग्योदय का सुप्रभात हो चुका है, इसी क्षण से, दीक्षाओं के माध्यम से, आगे की ओर बढ़ो।

दिनांक : 3 से 6 अगस्त 1995

को पूज्य गुरुदेव निम्न दीक्षाएं प्रदान करेंगे

नवीन दीक्षाएं

आत्म-ज्ञान दीक्षा, मंगली दोष निवारण दीक्षा,
वैवाहिक योग दीक्षा, ध्यान सिद्धि दीक्षा, लक्ष्य भेद दीक्षा,
अभीष्ट सिद्धि दीक्षा, ब्रह्मदर्शन सिद्धि दीक्षा, तंत्र सिद्धि दीक्षा,
काल ज्ञान दीक्षा,वशीकरण दीक्षा,सम्पूर्ण सिद्धि दीक्षा, पूर्ण वीर वैताल दीक्षा,
भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, राजयोग दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा, भैरव दीक्षा,
गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा, आत्मा-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा, धन्वन्तरी दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा।

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना-सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

ये अदभुत और अचरज भरी दीक्षाएं पूज्य गुरुदेव साधक के अनुरूप चुनकर स्वयं प्रदान करेंगे।

दिनांक : 24-25-26-27 अगस्त 1995

वर्ष-१५ अंक-७

सम्पर्क :
३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४
फोनः०११-७१८२२४८, फेक्सः०११-७१८६७००

नोट : ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल ''गुरुधाम'' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।